अर्द्धांगिनी...

सरोजनी...

सुभद्रा...

भाइक सिनेह इत्यादि

(कथा संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : 978-93-80538-42-6

मूल्य: भा. रु. ५०/-

पहिल संस्करण : २०११.

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-११...२

Typeset by: Umesh Mandal.

Distributor: *Pallavi Distributors*, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.- ९५७२४५.४.५, ९९३१६५४७४२

Ardhangani... Sarojni.... Subhadra.... Bhaik sineah: collection maithili short story by Jagdish Prasad Mandal.



जगदीश प्रसाद मण्डल १९४७

जगदीश प्रसाद मण्डल पिताक नामः स्व. दल्लू मण्डल, माताक नामः स्व. मकोबती देवी, जन्म स्थानः बेरमा, जि- मधुबनी, मातृक- मनसारा, घनश्यामपुर, जि- दरभंगा।

सम्पर्क- बेरमा, तमुरिया, मधुबनी, मो. ०९९३१६५४७४२, प्रकाशीत कृति उपन्यास- (१) **मौलाइल गाछक फूल,** (२) **उत्थान-पतन,** (३) **जिनगीक जीत,** (४) **जीवन-मरण,** (५) **जीवन संघर्ष,** नाटक- **मिथिलाक बेटी,** कथा संग्रह- (१) **गामक जीनगी**, (२) **अर्द्धांगिनी... सरोजनी... सुभद्रा... भाइक सिनेह इत्यादि**, बाल प्रेरक लघुकथा संग्रह- **तरेगन,** एकांकी संग्रह- **एकांकी संचयन।**

अनुक्रम-

१. दोहरी मारि

दस सालसँ डायवीटीज आ साढ़े-सात सालसँ ब्लड-पेसरक शिकार सरसठिम सालक प्रोफेसर गुलाब पाँच साल पहिने कओलेजसँ सेवा-निवृत भेल छलाह। सूर्यास्तक समए, सोफापर ओंगठि पाँचो आलमारीक पोथीमे नजरि खिड़बैत रहथि। पत्नी -लालमनि- चाह नेने कोठरीक मुँह टपिते छलीह आकि भूक दऽ मड़कड़ी बरि उठल। ओना अन्हारक आक्रमण तै रूपे नै भेल छलैक मुदा कीड़ी-फतींगिक आवाहन बाहरसँ घर (कोठरी) दिस हुअए लगल छलैक। टूटल अगिला दाँतक मुँहसँ मुस्की दैत लालमनि पति दिस बढ़ि कप बढ़बैत बजलीह- ''कॉफी सैध गेल छलए। पहिलुके चाह पत्ती घरमे छलै सएह बनेलौं। मुदा चाहक गंध केनादन लागल।''

पत्नीक बात सुनि गुलाबक मन अमता गेलनि। मुदा जहिना पाकल अमतीक खट-मधुर सुआद होइत तहिना प्रोफेसर गुलाब अपन चौहुक टूटल मुँहसँ मुस्किया देलनि। मुदा मन कलपि उठलनि। एहेन समए भऽ गेल जे एक कप चाहोपर.....। ठीके बूढ़-बुढ़ाहनुसक कहब छन्हि- ''करनी देखब मरनी बेर।'' पत्नीक हाथसँ कप पकड़ि मुँहमे लगौलनि। मुँहमे चाह अबिते ठोर बिजैक गेलनि। हाँइ-हाँइ कऽ चाह तँ घोंटि गेलाह मुदा जाकरी पत्तीक सुआद मनकेँ हौंड़ देलकनि। चाहक कप टेबुलपर रखि उठि कऽ ठाढ़ होइते रहथि आकि बुझि पड़लनि जे उल्टी हएत। दुनू हाथसँ छाती दाबि पुन: सोफापर बैस गेलाह।

चौसठि वर्षीय लालमनि गैस्टिकसँ आक्रान्त। पेटक गैससँ मन अस-बिस करैत। जोरसँ ढकार भेलनि। मन हल्लुक होइते पतिक पीठ ससारए लगलीह। रसे-रसे प्रोफेसर गुलाबक मन खनहन हुअए लगलनि। मन खनहन होइते पत्नीकेँ पुछलखिन- ''मन बेसी गड़बड़ ते ने अछि।''

दुनियाँक रागसँ उपर उठि लालमनि चहकि उठलीह- ‘‘की गड़बड़ आ की नीक, कोनो की तेहैया बोखार छी जे तीन दिन जाइते चलि जाएत। निरकटौबलि भऽ कऽ छुटि जाएत। गोटीक चाह करै-ए। जाइ छी एकटा गोटी खा लेब, ठीक भऽ जाएत।’’ कहि लालमनि दोसर काठरीक रास्ता धेलनि। प्रोफेसर गुलाबक नजरि चाहक कपपर गेलनि। मुदा चाहक कपपर नजरि नै अटकि पोथीक आलमाड़ीपर पहुँच गेलनि। अखैनक जे जिनगी अछि ओ आइ धरि किए ने बुझलौं? जँ अपने नै बुझलौं तँ जिनगी भरि पढ़ौलिऐ की? आकि दिमक बनि पोथीकेँ माटि बनौलिऐ? तै बीच ब्लड-पेसरक जोर पबिते गरजलाह- ‘‘एकटा गोटी खाइमे कते देरी लगै-ए।’’

पतिक बात सुनि लालमनि बुझि गेलीह जे ब्लड पेसरक झोंक छियनि। धड़फड़ाइते कोठरीमे आबि मुस्की दैत आलमारीसँ गोटी निकालए बढ़लीह। गोटी निकालि, गिलासमे जगसँ पानि लऽ पतिक हाथकेँ दैते रहथि आकि सिरमाक बगलमे मोबाइल टनटनाएल। हाँइ-हाँइ कऽ गोटी मुँहमे लैत पानि गुलगुलबैत मोबाइलपर हाथ बढ़ौलनि। मोबाइल उठा नम्बर देखलनि। लीलाकान्तक (बेटाक) देख पत्नी दिस मोबाइल बढ़बैत बजलाह- ‘‘ननुगर बेटाक फोन छी। लिअ....।’’

कहि प्रोफेसर गुलाब अपनाकेँ बेटा रूपमे देखलनि। मन पड़लनि माए-बाप। की जिनगी छल की आइ अछि। जाधरि पिता जीबैत छलाह परोपट्टाक किसानक समाज रूपी समुद्रमे बसल छलाह। माल-जालसँ लऽ कऽ बीया-बालि धरिक कारोवार छलनि। लेब-देब छलनि। सोझे लेब-लेब नै छलनि। लेब-लेबसँ बेसी देब-देब छलनि। खीरा-झिंगुनी आकि नव कोनो अन्न-फल-फलहरी होय, बीयाक मूल्य कहाँ लै छेलखिन। मुदा हमरा कोन दुरमतिया चढ़ि गेल जे एक तँ कओलेजक नोकरी भेटल तइपर सँ पिताक देल घर-घरारी धरि उजाड़ि देलौं। की हम दरमाहाक पाइसँ जीवन नै चला सकै छलौं। तरे-तर अपन पैछला विचारपर सेवा-निवृति प्रोफेसर गुलाब गरमा गेलाह। मुदा जहिना खढ़-पातक धधरा धुधुआ कऽ उठैत आ लगले पझा कऽ ओहन छाउर बनि जाइत जेकरा हवाक सिहकियो उड़िया दैत, तहिना लगले मन खढ़क झोली

जकाँ ठंढ़ा गेलनि। मन घुरलनि, किछु मजबूरियो भेल। एक तँ परोपट्टामे बहरबैया जमीनपर लड़ाइ सुनगि गेल, दोसर अपन पितियौत कारी भायकेँ बटाइ खेत करए कहलयनि तँ कहलनि जे एक बाबाक अरजल सम्पत्ति (जमीन) छी, सेहो कीनल नै दान देल, तै जमीनक उपजा बाँटि बटेदार बनब। अहाँ कियो आन छी जहिना सभ दिनसँ एक परिवार बनल रहल अछि तहिना रहत। जखने हम बाँटि कऽ देब तखने बटेदार भऽ जाएब। किसान जँ बटेदार भऽ जाए तँ ओकर प्रतिष्ठा बँचले केना? पावनि-तिहारसँ लऽ कऽ काज-उद्यम (परिवारिक यज्ञ काज) धरि जहिया गाममे रहब अपन परिवारक समांग जकाँ रहब। मौका-मुसीबत (कोट-कचहरी, काओलेज, अस्पताल)मे दरभंगा जाएब तँ अपन घर जकाँ हमहूँ रहब। कहलनि तँ विचारणीय बात मुदा से उचित भेल? बजारक चमक-दमक देख अपनो मन उधियाएल। महग बुझि घरारियो बेच मकान बना बैंकमे रखि लेलौं। फेर मन घुरलनि, की आजुक बजारवादक नींव हमहीं सभ ने तँ देलौं। आइ की देखै छी, भरि मन चाहो नै पीब सकलौं। हुनके (पत्नियेे) कि दोख देबनि, तीन दिनसँ बजारमे करफू लागल अछि। दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी सभ बन्न अछि। सौंसे बजार भकोभन लगैए। बंदूकधारी पुलिस आ पुलिसक गाड़ी छोड़ि सड़कपर अछि की? पनरहे दिन मेहतरक हड़ताल भेल, गंदगीसँ बजार भरि गेल। बीमारीक प्रकोप बढ़ि गेल। तहिना पानिक अछि। ताड़ी-दारू, चोरी-डकैती, लूट-पाट, अपहरण तँ आम भऽ गेल अछि। एक दिस गाम छोड़लौं, दोसर दिस बेटा-पुतोहू राँचियेमे सभ बेबस्था कऽ लेलक। दुनू परानी रोगसँ अथबल बनल छी, केना दिन कटत? की अछैते औरूदे परान तियागि ली? हे भगवान जनिहह तूँ?

जहिना पूसक ओस सदति काल प्रकृतिकेँ ठंढ़ बनौने रहैए तहिना हृदए शीतल भऽ गेलनि। पत्नी दिस आँखि उठा कऽ देखलनि तँ बुझि पड़लनि जे जहिना हमर मन जिनगीसँ निराश भऽ कानि रहल अछि तहिना हुनकर (पत्नीक) मन बेटाक फोन सुनैले कोढ़ी सदृश्य बिहुँसि रहल छन्हि। मन आरो व्यथित भऽ गेलनि। जहिना असमसानक बरियातीक मन खाएब-पीबसँ हटि मृत्युक घाटपर बैस गंगा (नदी, सरोवर) मे डूब दऽ पवित्र होइले कछमछाइत तहिना प्रोफेसर

गुलाबबाबूक मन जिनगीक घाटपर बौआ गेलनि। पुष्कर (राजस्थान) जकाँ अनेको घाट। उन्मत्त मन आलमारीक पोथी दिस पड़लनि। सत्तहवीं शताब्दी धरि अर्थशास्त्र-राजनीतिशास्त्र सझिया भाए छल। संगे-संग जीवन-यापन करैत छल। जे भीन भऽ गेल। हम सभ खुट्टा गाड़ि राजनीतिशास्त्रकेँ धेलौं। गामसँ लऽ कऽ दुनियाँ भरिकेँ अधिकार कर्तव्य सिखबै छिऐ मुदा जै अवस्थामे अखन दुनू परानी जीब रहल छी ओ कोन अधिकार-कर्तव्य छी? की बारह बजे रातिमे डॉक्टर ऐठाम जा सकै छी? जँ से नै हएत तँ की रोग (बीमारी) हमरा मुकदमाक तारीक जकाँ भरि रातिक मोहल्लत दऽ देत?

जिनगीक काँट-कुश फानि लालमनि मोवाइल कानमे सटौने पतिसँ फुट भऽ सुनैक विचार केलनि। मुदा मुँहसँ निकलि गेलनि- ''बौआ, नूनू।''

''हँ, हँ। पाँचम दिन बौआ- कल्पनाथक मूड़न छी।''

टावर हटने लाइन कटि गेलनि। मुदा लालमनि से नै बुझलीह। बुझि पड़नि जे कम जोरसँ बजने नै सुनैत अछि। छातीसँ जोर लगा-लगा जोर-जोरसँ बाजए लगली- ''सभ प्राणी नीके छह किने?''

प्राणीक नाओं सुनि कोठीक चाउर जकाँ गुलाबबाबूक मान गुमसरए लगलनि। जहिना सड़ल आ नीकक बीच अपन-अपन सेनाक बीच रणभूमिक दृश्य होइत तहिना गुलाबो बाबूकेँ भेलनि। मुदा जहिना बेटा-पुतोहूपर खौंझ उठल तहिना पत्नीक अनभिज्ञता (मोबाइल नै बुझब) पर हँसी लगलनि। पत्नीक हँसी दौड़ल आबि हृदेकेँ सुतल आदमी जकाँ डोलबऽ लगलनि। मुँहसँ निकललनि- ''सभ प्राणीक कुशलमे अपनो लगा कऽ कहलियनि आकि अपन छोड़ि कऽ।''

बाजि तँ गेलाह मुदा लगले मन धिक्कारए लगलनि। पत्नी अज्ञानी रहि गेलीह, तइमे अपन (हमर) कोनो दोख नै? दिनमे डेरासँ बाहर रहै छी मुदा बाकी समए....।

अपने कएल लोककेँ काज अबै छै। जते अपना दिस देखथि तते ओझरी लगए लगलनि। एक कालखंडक पढ़ल-लिखल कर्ता (परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरि) रहितो की आइ धरि एकरा (ऐ विषयकेँ) बुझैक कोन बात जे मनोमे नै उठल। मन कानए लगलनि।

अपने रोपल गाछी भुताहि भऽ गेल। दलकैत मनमे उठलनि गाछी तँ फूल-फलसँ लऽ कऽ बगुर धरिक होइत मुदा कहबैत तँ सभ गाछिये। तहिना तँ जिनगियो अछि। भदबरिया अन्हार जकाँ इजोत कतौ देखबे ने करथि। तै बीच पत्नी मोबाइल बढ़बैत कहलकनि- ‘‘देखियौ ते, की भऽ गेलै। बजबे ने करै-ए।’’

पत्नीक बात सुनि पुन: गुलाब बाबूक मनमे आशा जगलनि। हाथमे मोबाइल लऽ कहलखिन- ‘‘टाबर चलि गेल। तँए नै अवाज अबै-ए। फेर टाबर आओत ते अवाजो आओत।’’

लालमनि टाबर बुझबे ने करथि। बजलीह तँ किछु नै मुदा जहिना दोकानसँ कोनो वस्तु झोरामे अनैत काल, झोरा मसकि गेलासँ वस्तु गिरए लगैत तहिना मनसँ पतिपर आक्रोस गिरए लगलनि। गुलाब बाबूक मनमे उठलनि, पाँचम दिन पोता- कल्पनाथक मूड़न छी। मूड़न की छी संस्कार छी। संस्कार तँ समाजमे भेटैत छै (देल जाइ छै)। राँची समाज आ मिथिला समाज तँ एक नै छी। तहूमे बजारक समाज तँ आरो गजपट भऽ गेल अछि। पुन: मोबाइलमे रिंग भेल। रिंग होइते पत्नीकेँ कहलखिन- ‘‘आबि गेल टाबर। लिअ।’’

‘‘पाँचम दिन कल्पनाथक मूड़न बैष्णो देवी स्थान (कश्मीर)मे छी। अहाँ दुनू गोटे (माता-पिता) भोरूके गाड़ी पकड़ि चलि आउ। परसुका टिकट बनबा नेने छी।’’

बेटाक फोन सुनि प्रोफेसर गुलाबक छाती छहोछित भऽ गेलनि। मुँह मलिन, नोरसँ ढबकल आँखि, देहक (शरीरक) पानि उतड़ल, मन्हुआएल स्वरमे लालमनिकेँ कहलखिन- ‘‘कनी मोबाइल लाउ।’’

मोबाइल दइसँ पहिने लालमनि बेटाकेँ कहलनि- ‘‘बाउ, बाबूसँ गप्प करह।’’

‘‘बौआ।’’

‘‘हँ बाबू। अपने असिरवाद देबै.....।’’

पोताक असिरवाद सुनि गुलाब बाबूक वकार नै फुटलनि। हिचुकिक अबाज सुनि लीलाधर पुछलकनि- ‘‘अपने कनइ किए.......।’’

खखसैत गुलाबबाबू बजलाह- “मोबाइल छोड़ि असिरवादो केना दऽ सकब। तीन दिनसँ बजारमे करफू लागल अछि। सिपाहीसँ सड़क भरल अछि। एहेन स्थितिमे घरसँ केना निकलब।”

“कओलेजोमे छुट्टी लऽ नेने छी। टिकटो कटा नेने छी तहन.....?”

::::::::::

२. केना जीब?

सेवा निवृत्तिक सातम सालक सातम मास, सातम मासक सातम दिन सात बजे साँझमे दू-जनियाँ सोफापर दुनू परानी प्रोफेसर शंकर कुमार ओंघराएल माने पड़ल छलाह। दुनू बेकतिक मन खटाएल। दस बजे करीब दिनेमे सुनने छलाह जे संगीक संगिनी चुल्हिक गैसक रिसावसँ झड़कि अस्पतालक सीटपर चिकड़ि-चिकड़ि कानि रहल छथि। सत्तरि बर्षक अवस्थामे संगी अपने दौड़-धूप कऽ रहल छथि। मुदा अस्पतालक डॉक्टरो नर्सो आ कम्पाउण्डरो जी-जान बँचबै पाछु लगौने छथि। तेकर कारण अछि जे एक तँ पाइक कमी नै दोसर पहुँचो नीक। संगिनीक घटनाकेँ तँ सरस्वती लगसँ नै देखने छली मुदा समाचारक रुपमे सुनने छलीह। जइसँ करेज तेना दहलि गेलनि जे साँसक गतिसँ छातीक धकधकी तेज भऽ गेलनि। नस-नसमे डरक भूत समाए गेलनि। अन्हारक वाण जकाँ चारु कातसँ मृत्युक तीर बेधए लगलनि। जहिना बेरागी रागसँ डरैत, जोगी भोगसँ डरैत तहिना सरस्वती मृत्युक भयसँ।

पाँच सए एम.एल.बला ह्वीस्कीक बोतल प्रो. शंकर कुमारकेँ बेअसर बुझि पड़लनि। मनक चिन्ता रुपी तीर ह्वीस्कीक तीरकेँ रस्तेमे रोकने। लग अबै नै दन्हि। कछ-मछ करैत पत्नीकेँ कहलखिन- ‘‘चाह पीबू।’’

सरस्वतीक मन चाह पीबैसँ सुरक्षित चुल्हि नै जराएब बुझनि। अपन अज्ञाक उल्लंघन होइत देख शंकरक मन महुराए लगलनि। जहिना भोज्य-पदार्थक बरतनमे गिरगिट खसि महुरबैत, तहिना। डेग भरि पाछु घुसुकि मुस्की दैत दोहरा कऽ कहलखिन- ‘‘चलू, हमहीं चाह बनाएब। कीचेनक तँ सभ किछु देखल नै अछि। अहाँ देखा-देखा देब।’’

जिनगीक अंतिम अवस्थामे पतिपर जीत देख ढेंग सन देहकेँ उठा कीचेन दिस बढ़लीह।

चाह बना कीचेने मे पीबए लगलथि। मुदा तैयो गप-सप्प करैक मन किनको नै करनि। मनक सोग नव विषयकेँ मनमे आबै ने दन्हि। जहिना घी नै अरघनिहारकेँ थारीमे देखते जीह ओकिऐ लगैत तहिना नव विचारपर नजरि पड़िते जीह माने मन पचपचाए लगनि। चाह पीब दुनू गोटे कोठरीमे आबि पुनः सोफापर परि रहलाह। गुम-सुम्म! जहिना साधक साधनामे लीन भऽ समाधिस्त होइत तहिना दुनू गोटे अपन-अपन विचारक दुनियाँमे औनाए लगलाह।

सरस्वतीक नजरि पाँच बर्खक अवस्थापर पहुँचलनि। की छलए माए-बापक राज? खेनाइ, खेलेनाइ, पढ़नाइक संग पावनिमे उपास केनाइ आ फूल तोड़ि पूजा केनाइ। बस। यएह छलए जिनगी। मनमे सुख-दुखक जनमो कहाँ भेल छलए। सोहनगर वातावरणमे वियाह भेल। नैहरसँ सेवा करैक लेल नोकरनी आएल छलि। सासुरो सम्पन्ने रहए। कोनो अभाव सासुरोमे नहिये रहए। नोकरे पानियो भरैत आ भानसो करैत रहए। अपनो प्रोफेसरे छलाह। पाइक संग प्रतिष्ठो बनौने छलाह। विद्यार्थीसँ शिक्षक धरिक बीच सम्मानित छलाह। अपनासँ बीसे बेटोक पढ़ैपर खर्च केलनि। आजुक जे महगाइ शिक्षामे आबि गेल अछि ओ इमानदार कमेनिहारक लेल असंभव भऽ गेल अछि। दरमाहासँ तँ नहिये मुदा पिताक देल सम्पत्तिसँ तँ एत्ते जरुर केलनि। अमेरिकामे बेटाकेँ पढ़ा लिलसा मेटौलनि। मुदा अखन की देखै छी? ऐ अवस्थामे दिन-राति तीन मंजिलापर उतड़ब-चढ़ब पार लागत। ओहिना तँ हाथ- पाएर बिनबिनाइत आ देह भारी बुझि पड़ैत अछि। तइपर परिवारक सभ काज? ऐ उमेरमे बूढ़ि-कनियाँ बनि जीब रहल छी। तरे-तर पसेना चलए लगलनि। अनायास मुँहसँ निकललनि- ‘‘ऐ जीवनसँ मरब नीक।’’

पत्नीक बात सुनि शंकर कुमारक भक्क खुजलनि। अखन धरि हिनकर चेतनाहीन भेल मन देखैत छलनि अपन पैछला जिनगी। गामक स्कूल। कते सिनेहसँ पिताजी घरक देवताकेँ गोड़ लगा, कन्हापर चढ़ा ‘सरस्वती माताक जय’ कहि आंगनसँ निकलि सरस्वतीक मंदिरमे लऽ गेलाह। की हम ओइसँ कम अपना बेटाकेँ केलौं? कथमपि नै। डेरामे गाड़ल देवता तँ नै अछि मुदा

देवालमे टांगल फोटो आ अष्टद्रव्यक बनाओल मुरती तँ अछिये। बाड़ीक वसन्ती गुलाब तँ नै मुदा मह-मह करैत भकराड़ रुपमे बनल प्लास्टिकक फूल तँ चढ़ौनहि छियनि। धुमन-सरड़क धुपक बदला गुगूल आ अगरबत्ती तँ चढ़ैबते छियनि। मोटर-साइकिलपर चढ़ा शहरक सभसँ नीक विद्यालयमे पढ़ेबे केलियनि। जते पिता जी हमरा पढ़ौलनि, हमरा की पढ़ौलनि एक सीमा धरि पहुँचा देलनि। तहिना तँ हमहूँ केलियनि। नोकरी भेलापर ताधरि पत्नी गाममे रहलीह जाधरि बाबू-माए जीबैत रहलाह। मरैइयो काल धरि माए संगे खाइले कहथि। संगे तँ नै खाए एकठाम बैस कऽ जरूर खाइ। मुदा बेटाकेँ जहिये कनभेंटमे नाओं लिखेलौं तहियेसँ एक शहरमे रहनौ फुट-फुट रहए लगलौं। समैक संग शिक्षो बदलल। एकाएक नजरि आगू बढ़ि जिनगीक अवस्थापर गेलनि। चारिम अवस्था। जै अवस्थामे सभ कथूसँ सम्पन्न भऽ, अभावकेँ निर्मूल माने नष्ट कऽ परिवारसँ उपर उठि समाजमे मिल जाएब होइत छै। हमर समाज केहन? जै समाजमे मनुष्यक संग-संग जीव-जन्तु माटि-पानि, घर-दुआर धरि एक-दोसरकेँ नीक-अधला सुख-दुखमे संग दैत अछि। एकठाम बैस सभ भोज-काजमे खाइत अछि तहिना दसगरदा उत्सवो हॅसी-खुशीसँ मनबैत अछि। ढोल-डम्फापर होरी गाबि-गाबि नचबो करैत अछि। जूरशीतलमे इनार-पोखरि उड़ाहबो करैत अछि। शिव-पार्वती बना बाजाक संग गामो घुमैत अछि।

जहिना बाढ़ि एलापर एक स्तरक माने लेभेलक जमीन पानिमे संगे डूबि जाइत अछि। तहिना गाछी-कलम पानि-बिहाड़ि सहैत अछि।
बेटाकेँ अमेरिकामे पढ़ेलौं। ओ ओइ समाज आ संस्कृतिमे तेना मिल गेल जे अपन सभटा बिसरि गेल। आइ जँ हम अमेरिका जाए रहए लगी तँ की ओइठामक जिनगी दुनू बेकतीकेँ कतेक दिन जीबए देत? की दुनियाँमे मृत्यु छोड़ि हमरा लेल किछु नै शेष बचल अछि। निराश मनमे एलनि 'करनी देखिहह मरनी बेर।' जिनगीमे कतऽ चूक भेल? जँ चूक नै भेल तँ ऐ अवस्थामे पहुँच केना गेल छी?

पत्नीक बात 'ऐ जीवनसँ मरब नीक' सुनि धड़फड़ा कऽ उठि बजलाह- ''अखन सुतै बेर अछि जे सुति रहलौं?''

- ''सुतल कहाँ छी। भानस करैसँ मन असकताइत अछि।''

- ''तँ की भुखले रहब।'' शंकर कुमार बाजि तँ गेलाह मुदा मन पाछु घुरि कऽ तकलकनि। एक तँ ओहिना मरैक बाट धेने छी तहूमे जे दस-बीस बर्ख जीबो करितौं से तेहन रोग भेल जाइत छन्हि जे भुखले मरब। रातिमे खाएब नै तँ नीन केना हएत? जँ नीन नै हएत तँ जीब कते दिन?

पत्नी- ''कता दिन कहलौं जे नोकर रखि लिअ?''

नोकर सुनि शंकर अमती काँटक ओझरीमे पड़ि गेलाह। देखैमे नान्हि-नान्हिटा मुदा छाँह जकाँ छोड़ैले तैयार नै। मनमे जोर मारलकनि जे अपने जिनगी भरि नोकरी केलौं। बेटो-पुतोहू -दुनू इन्जिनियर- अनके नोकरी करैत अछि आ अपने नोकर रक्खू। जहन ड्यूटी करैत छलौं बेसी तलब उठबै छलौं तहन नोकरे ने रखलौं। कारणो छलए जे पत्नी थेहगर छलीह। बेटा-पुतोहूक अशो छलनि। थोड़े बुझै छलखिन जे बुढ़ाढ़ी एहेन हएत। आइ-काल्हि नोकर कते महग भऽ गेल अछि से थोड़े बुझै छथिन। तकलीफ हेतनि बजबे करतीह। भलहिं हमरा बुते पुराओल हुअए वा नै। पहिले जकाँ पाँच रुपैया दस रुपैयामे नोकर भेटत। तहूमे बाल-बोधकेँ थोड़े रखि सकै छी। अनेरे लेनी कऽ देनी पड़त। घरक सुख जहलमे भेटत। जँ सियान राखब तँ तीन हजारसँ कम लेत। तहूमे कि कोनो स्कूल-कओलेज आकि मिल-फैक्टरीक नोकरी हेतै। घरमे काज करत तँ खाइ लऽ नै देबै से हएत तहूमे तँ नीक-निकुत बेसी वएह खाएत। तहूमे तेहेन समए आबि गेल जे कहीं सम्पत्तिये ने दुनू बेकतीक जानो लऽ लिअए। जानपर नजरि पड़िते आँखि ढबढ़बा गेलनि। जाने नै तँ जहान की? जहिना वीणाक तार टुटलापर आवाज खनखना कऽ निकलैत तहिना टूटल जिनगीक स्वरमे शंकर कुमार पत्नीकेँ कहलखिन- ''अहाँक मन असकताइत अछि तँ पड़ू। कहुना-कहुना कऽ क्षुधा तृप्त करै जोकर टभका लै छी।''

मने-मन सरस्वती बजलीह- ''केना जीब?''

::::::::::

३. नवान

बाध दिससँ भोरे बड़का काका आबि नादिमे कुट्टी-सानी लगा, गाए बहार कऽ केटली नेने कलपर पहुँचलाह। जै कलपर आन समए (जाड़-बरसात) हेँक-हेँक भेल रहैत छल ओ रुख बुझि पड़लनि। समैक गरमियोमे अंतर बुझि पड़लनि। जाड़क मासमे दस बजे दिनक समए पाँचे बजे भोरेमे बुझि पड़लनि। सोहनगर समए बुझि बसन्तपर नजरि गेलनि। बसन्त आमक मंजरक महमही फल रुपमे महमहा रहल अछि। मनमे उठलनि जे बसन्त ॠतु बर्खक पहिल ॠतु (चैत-बैशाख) होइतो शरद-शिशिर सन ॠतु केना आगू अबैत? हाँइ-हाँइ कऽ केटली धोइ लोटामे पानि नेने चुल्हि लग आबि, चाह बनवए लगलथि। केतलीमे चाहकेँ खौलैत देख मनमे उठलनि जे एहिना समुद्रोमे लहरि ज्वार-भाँटा सँ उठैत अछि। एते गहीर समुद्र जइमे करोड़ो-अरबो तह पानिक रहैत तहन किएक उपरमे एत्ते जोरसँ लहरि अबैत अछि। मन औनाइते रहनि कि चाहक गंध लगलनि। गिलासमे चीनी दऽ चाह छनलनि। केटली अखारि कऽ रखि चाहक गिलास नेने दरवज्जाक चैकीपर बैस पीबए लगलथि। मन औनाइत रहनि जइसँ चाहो नीक-नहाँति नहिये पीबैत रहथि। तखने हहाएल-फुहाएल रविया कने पड़िक्कैसँ बाजल- ‘‘गोड़ लगै छी कक्का।’’

असिरवाद दैत बड़का काका कहलखिन- ‘‘कनिये पहिने अबितह रबी तँ चाहो पीऐबतियह, आब तँ हूसि गेलह।’’

- ‘‘नै काका, हुसल नै नीके भेल। एक चुटकी विष्णु भगवानकेँ चढ़ाइये मुँहमे पानि लेब।’’

विष्णु भगवानक नाओं दिस धियान नै गेलनि। कहलखिन- ‘‘तूँ तँ अनेरे बौआइबला आदमी नै छह। तहन.......?’’

- ‘‘काजे एलौंहेँ।’’

- ‘‘भोरे कोन काज बजरि गेलह?’’

- ‘‘न्योत दइले एलौं।’’

न्योत सुनि बड़का काका तारतम्य करए लगलाह जे अखन तँ, ने वियाह-मूड़नक दिन अछि आ ने केशे कटौल देखै छिऐ जे बरखीयो-तरखीयो करैत। मुदा चौलो तँ कहियो नै केलक जे आइ करत। सभ दिन शिष्ट बुझि श्रद्धाक नजरिसँ देखैत अछि। मन पाड़लनि- जेठ मास परीब तिथि। आमो पाकब नहिये शुरु भेल जे अमैइयो भोज करैत। पनरह दिनक पछाइते अमैया भोज चलत। तहूमे नवको गाछी-कलम तँ कतौ नहिये नजरिपर अबैत अछि। तीन दिन रोहणियोकेँ चढ़ैमे बाकिये अछि। खिच्चा आम पाकि कऽ केहन हएत? धिया-पूता ने चोकर-मोकर खाइए। भोज-काज केना ओइसँ हएत? भोज-काजक लेल तँ नीक आम चाही। मन आगू बढ़लनि। तीमन-तरकारीक तँ भोज नै होइत अछि। ओ तँ ओहिना पहिल फड़ महादेवो स्थानमे चढ़बै अछि आ हितो-अपेछितकेँ देल जाइत अछि। ओना लोक कटहरोक भोज करैत अछि मुदा ओ तँ आमोसँ पाँछा होइत। भऽ सकैत अछि जे गाए विआएल होए। गाइयक दूध तँ छाँकी दैत अछि। कियो-कियो रक्तमाला स्थानमे चढ़बैत अछि। पाल खेलापर राजाजीकेँ गाँजा चढ़बैत अछि आ बियेलापर कुशेश्वर स्थानमे घी चढ़बैत अछि। हमरा किएक न्योत देत। पुछवो केना करबै? दही-दूधक चर्च तँ खाधुर लोक करैत अछि। हँ-निहसक बीचमे पड़ल बड़का काका सोचलनि जे हमहीं सवाल पुछिऐ आ वएह ने कियए जवाव देत जे अनेरे अपसियाँत होइ छी। मुस्की दैत पुछलखिन- ‘‘आरो के सभ न्योंतिहारी रहथुन?’’

बड़का काकाक प्रश्न समाप्तो नै भेल छलनि तै बिचहिमे रविया बाजि उठल- ‘‘अहींटा छिऐ काका। पहिल नवान छी कते गोटेकेँ न्योत देबनि। कोनो कि उपनएन छी जे गिनती पुरबए पड़त।’’

नवान सुनि बड़का काका आरो ओझरा गेलाह। केना नै ओझरैतथि किछु दिन पूर्व धरि तँ वएह पहिने नवानक चर्च करै छलखिन। जहियासँ बाढ़ि आबि-आबि अगहने उसारि देलक तहियासँ कहब छोड़ि देलखिन। अमती काँट जकाँ एकटा डारि छोड़बैत तँ दोसर लगि जाइन। मिरचाइक घोँदा जकाँ ओझरी देख बड़का काकाक मन असोथकित भऽ गेलनि। आँखि बन्न भऽ गेलनि।

आँखि बन्न होइते रविया कहलकनि- ''काका, ओरियान-पाती करैक अछि। अखन जाइ छी।''

कहि रविया विदा भऽ गेल। मुदा काकाक आँखि बन्ने रहनि। मनमे उपकलनि, भने पतरो कीनब छोड़ि देलौं। एक तँ ओहिना रंग-विरंगक पतरा समाजमे (गाममे) आबए लगल। सेहो जँ भिन्न-भिन्न लेखक जकाँ एक्के ढंगसँ बुझाओल जाएत तँ बड़बढ़िया। मुदा सेहो नै। सभ पतरा कीन अपनेसँ निर्णए करैक ज्ञाने नै अछि। मनमे खुशी उपकलनि। जे पावनि क्षण-पल गनि निर्धारित होइत अछि ओ तीन दिना हुअए लगल। एक-दिना पावनि दू दिना भऽ गेल आ दू दिना तीन दिना। तहूमे तेहन-तेहन अगिमूतू छुछुनरि सभ गामे-गाम फड़ि गेल अछि जे एक डांरिए समाजकेँ थोड़े चलए देत। समाजो तेहने गड़िखच्चर अछि जे अपन वर्चस्वक दुआरे उचित-अनुचितक (जाइज-नाजायजक) विचारे ने करत। कियो जातिक सिपाही तँ कियो सम्प्रदायिक सिपाही बनि-बनि मोछ टेढ़ि करैत रहैत अछि। ककर के सुनत। एहेन परिस्थितिमे चुप्पे रहब नीक। फेर मनमे उठलनि जे एते ओझरीमे ओझराइक कोन जरुरत अछि। जहन रविया न्योत दइये गेल अछि तहन किएक ने स्नान कए कऽ ओकरे ऐठाम जा बुझि ली। सएह केलनि।

चारिम सालक बाढ़ि दुनू बेकती रवियाक जिनगी मोड़ि देलक। एहेन विकराल बाढ़ि जिनगीक पहिल बाढ़ि छलैक। पाँच बीघा जमीनबला रविया पुरान ढर्राक जिनगी (किसानी जिनगी) बदलैत रहए। लगभग चारि आना बदैल गेल छलै। उन्नति किस्मक तरकारी आ फल-फलहरिक खेती अपनाए नेने रहए। अन्नक खेतीमे कोनो सुधार नै कऽ सकल रहए। मालो-जाल तहिना (पूर्ववते) रहए। बाधक सभ जजात दहा गेलै। गाछीक बड़का आम-जामुनक गाछ छोड़ि सभ सुखि गेलै। अंगुर, अनारस, नेवो, लताम, धात्री, अनरनेवा इत्यादि सभ नष्ट भऽ गेलै। संग-संग घरोक सभ समान नष्ट भऽ गेलै। बाढ़िये दिनसँ दुनू परानी रवियाक मन टुटए लगलै। जेना-जेना पानि सटकैत जाइत तेना-तेना सुखल गाछ घरक सड़ल समान सभ देख-देख दुनूक मन टुटब बढ़ितहि

गेलै। मुदा जिनगीक आशा दुनूकेँ अन्हारसँ इजोत दिस धकेलि देलक। नव उत्साहक संग दुनू संगी आँखि उठा आगू देख डेग बढ़वए लगल।

सबेरे स्नान कए कऽ बड़का काका रविया ऐठाम पहुँचलाह। आँगन नीपि बुधनी नहाइले गेलि कि बड़का काकाकेँ देखलक। हाँइ-हाँइ कऽ गोबराइल हाथ धोइ धड़फड़ा कऽ आंगन आबि ओसारपर कम्मल विछा पतिकेँ कहलक- ‘‘काका एलखिन।’’

दरबज्जापर आबि बड़का काका कनडेरिऐ आँखिए हिया-हिया आंगन, दरबज्जा, बाड़ी देखए लगलथि। आँखिपर सँ मनक विसवास उठए लगलनि जे सत्ते देखै छी कि फूसि। जै जेठमे पियाससँ धरती हाथ-हाथ भरि जीह बहार करैए माल-जाल अधसुखू भऽ जाइत अछि। ठेहुन भरि मोट गाछक सुखाएल पातक पथार लगि जाइत अछि तइठाम बसन्तक बहार देख रहल छी। मनमे नचिते रहनि कि पानक खिल्ली सिक्कीक चंगेरीमे सरिया कऽ ओसारक चक्कापर रखि रविया आगू आबि कहलकनि- ‘‘अंगने चलू ने कक्का। अनठिया जकाँ डेढ़ियापर किएक ठाढ़ छी।’’

रवियाक मनमे अपन सेहवाल गाए आ दस कट्ठाक गरमा धानक बोझ देखबैक रहए। मुदा काकाक मनमे आंगन तँ औरतक होइत, पुरुखक नै। पुरुख तँ केबल खेबा काल आ कोनो काजक काल जाइत अछि। मुदा बुधनियो तँ अंगनेक ओसारपर कम्मल विछौलक। ओ एना किएक उट-पटांग केलक। मुदा ओसारक एक भागमे बुधनी दू कसतारा दही, दू चंगेरा आम, एक चंगेरा चूड़ा, स्टीलक अढ़ियामे तरकारी इत्यादि भोज्य-पदार्थ रखने रहए। जेकरा देखबैक इच्छा पेटमे रहए। सभ अपन-अपन विचारो आ काजोमे डूबल। अगहन जकाँ लड़ती-चड़ती देख बड़का काकाक मन असथिर होइत रहनि। अस्सीयो बर्खक ओ औरत जनिका पति छन्हि अपनाकेँ कते सुन्दर बुझै छथि मुदा सोलह बर्खक बैधव्य अपनाकेँ कि बुझै छथि। जे जेठ गरमीक विराट मास छी ओ वसन्ती हवा केना बहा रहल अछि। सालक एक्को दिन ओहन अछि जै दिन अनेक ॠतु नै भ्रमण करैत हुअए। चुप-चाप आँखि नचबैत बड़का काकाकेँ

पुनः रविया कहलकनि- ‘‘काका जहिना पाँच अंग उठलासँ शरीरक बसन्त अबैत, तहिना ने वसन्त पंचमीसँ वसन्त ऋृतुक आगमन होइत अछि। आगू-आगू चलू, सभ किछु देखा दै छी।’’

रवियाक बात सुनि बड़का काकाकेँ खुशी भेलनि मुदा मनकेँ ‘नवान’ शब्द घुरियाइत रहनि। मन नचैत रहनि अगहनक नवानपर। बजलाह- ‘‘पतरा देखब छोड़ि देलौं तँए सभ बात नजरिपर नै अबैत अछि। कनी-मनी मन अछि जे नवान तँ अगहन माने कातिक इजोरिया पखसँ लऽ कऽ अधा पूस धरि मे होइत छलैक।’’

काकाक बात सुनि रवियाक मनमे खुशी नै भेल, पुछलकनि- ‘‘कक्का नवान की?’’

- ‘‘नव अन्नक ग्रहण।’’
- ‘‘सएह छी काका।’’
- ‘‘चलह कने देखा दाए।’’

धान देखबैत रविया कहलकनि- ‘‘एक बीघा खेत चौरीमे अछि। सत-सत, अठ-अठ बर्खपर खेत हँसुआ पहुँचैत छलए। सेहो दूध महक डाढ़ी होइत छलए। गोटे साल आध मनक कट्ठा तँ गोटे बेर तीन पसेरी कट्ठा धान होइत छलए। तहूमे तते चिलमिल, कोढ़िला, आ करमी लत्ती भऽ जाइत छलए जे उपरका खेतीसँ दोबर खर्च होइत छलए। उपजा देख मनमे उठैत छलए जे बेचिये लेब नीक होएत। मुदा लेबालो नै। के अनेरे पूजी दुरि करत। सबहक एक्के गति। गामक अधा हिस्सा जमीन एहने अछि। बर्ख दसम मनमे उठल जे चौथाइ खेतमे डबरा खुनि माछ पोसब। नवका-नवका माछक थर सभ हेचरीमे विकाइत अछि। ओकरे पोसब। सदिकाल रेडियोओसँ आ अखवारो, पत्रिका सभमे माछ पोसैक लाभ देखाओल जाइत छै। खूब लाभकारी अछि। सएह केलौं। दू कट्ठा उपरका खेत बेच खुनेलौं। हेचरीसँ थर आनि देलिऐ। ले बलैया, कोसी नहरिमे पानि एलै। फाटकक खुजले मुँह छोड़ि देलक। भरि मुँहखर पानि चौड़ीमे पसरि गेल। बीच बाधमे खेत अछि। डबराक महारोपर जाएब कठिन भऽ गेल। एक दिन नहाइ बेरमे केरा थम्हक बेरही बना गेलौं तँ

देखिलिऐ जे सौंसे चौरीक सलाढ़ लागल अछि। एक्कोटा थरक दर्शन नै भेल।''

- ''देख कऽ बड़ दुख भेल हेतह?''

- ''ऍंह, काका की कहब, अपनेटा होइत तहन ने से तँ सौंसे बाधे झलकैत रहए।''

- ''तब ते निचला खेतक संग दू कट्ठा उपरको चलि गेलह।''

- ''ओतबे गेल। साले-साल मलगुजारियो भरए पड़ैत अछि। तेहेन पाहीपट्टीक पट्टी छी जे अग्गहसँ बिग्गह भरए पड़ैत अछि। गामक खेतक कि एक्के रंग मलगुजारी अछि। अन्हरा राज छी। जै खेतमे उपजा नै होइत अछि ओकरे मलगुजारी बेसी अछि। हँ, तँ कहै छलौं जे ओइ एक बीघा चौरी खेतमे (डबरा भरा कऽ) तेसर-साल आ पौर साल पच्चीस क्वीन्टल आ सत्ताइस क्वीन्टल धान भेल। उपजबैक ढंगो नै छल। थोड़े-थोड़े आब सीखने जा रहल छी। ऐबेर दुनू सालसँ नीक धान अछि। अखन काटि-काटि अनितहि छी। तैयार पछाति करब। चलू, गाएकँ देखिऔ।''

सेहवाल गाए। ललौन-कारी। कतौ-कतौ चितकाबर। पतरकी नाङरि। साढ़े चारि फुट खड़ा आ आठ फुट नमती। निच्चासँ उपर धरि काका तजबीज करैत मुदा नजरिपर चढ़बे ने करनि जे कोन किस्मक गाए छी। थने कहै छै जे भरि बाल्टी खुआउ आ भरि बालटीन दुहि कऽ लऽ जाउ। गाम दिस नजरि दौड़ेलनि। कहाँ कतौ अहि कटिंगक गाए छै। कियो-कियो जे अनवो केलनि तँ महींसक खाढ़क जरसी छन्हि। सेहो तँ गनले-गूथल अछि। पहिलुका गाए सभ जे अछि ओकर खाढ़े बिगड़ि गेलै। तेहन-तेहन दानी सभ साँढ़ दान केलनि जे टाएरक बड़दक बंश कोल्हुक रास्ता धेलक।

रविया - ''काका की सभ देखै छिऐ?''

बड़का काका- ''हौ, कोन चीज नै देखैबला अछि। कतएसँ अनलह?''

- ''चारिम साल जे बाढ़ि आएल ओ मालो-जालकँ नष्ट कऽ देलक। खूँटेपर बान्हल गाए-बड़द मरि गेल। धिया-पूता मात्रिकमे रहए तँए बँचि गेल। बाढ़िक बाद सासु भेँट करैले समाद पठौलनि। हमर मन नै मानलक। ओकरे -पत्नी-

कहलिऐ जाइले। एक तँ नैहर दोसर धियो-पूताकेँ देखना साल भरि भऽ गेल छलैक। गेल। ओतै एकटा गाए आ खेती करैले बड़दो आ मन तीनयेक अन्न देलनि। किछुए दिनक पछाति गाए उठल....।

मुस्की दैत पुन: बाजल- ''जहिना बाढ़ि एने मूस पतरा गेल तहिना अनेरुवा साँढ़ो सभ। मन भेल जे साँढ़ लग लऽ जाय। मुदा मनमे भेल, अनेर खाइत-खाइत तँ बुढ़ियारो लोक सनकि जाइत अछि आ साँढ़-पारा तँ जानिये कऽ पशु छी। साँढ़ लग नै जाए डाक्टरकेँ बजा अनलियनि। वएह पाल (सिम) देलखिन सएह बच्चा छी। गाए तेहन दुधगरि जे अपन जीह दागि बच्चाकेँ पोसलौं। वएह गाए छी। पाँचम दिन बियाएलहेँ।''

पाँचम दिन सुनिते बड़का काकाक मन फेर ओझरा गेलनि। मनमे नचए लगलनि जे गाए तँ नअ दिनपर शुद्ध होइत अछि। अशुद्ध दूधक दही खुऔत कि ककरोसँ दूध आनि पौरने अछि। पुछबो केना करबै? ओहन खाधुर थोड़े छी जे खाइसँ पहिने पता लगा लेब। शुद्ध-अशुद्ध विचार मनमे संघर्ष करए लगलनि। एक दिस देखैत जे जै गाइयक दूध, गोंत, गोबर सभ शुद्ध होइत अछि, एते तक कि दूधक लाटमे छुतहर घैइलो शुद्ध भऽ जाइत अछि। दूध तँ अमृतोसँ पैघ छी। दोसर दिस देखैत कोनो हमरे मनक बात नै छी। सभ मानवो करैत अछि आ परहेजो करैत अछि ओना देस-देसक आ कोस-कोसक चलनि सेहो एक-दोसराक विपरीत चलैत अछि। विचित्र स्थितिमे अपनाकेँ देख निर्णए केलनि जे पुछनहि शुद्ध-अशुद्ध। जँ बुझले नै रहत तहन कि शुद्ध-अशुद्ध होएत। मनमे खुशी एलनि पुछलखिन- ''दूध कते होइ छह?''

दूधक नाओं सुनि रवियाक मन, फुलक पहिल सुगंध जकाँ, महकि उठल। बाजल- ''कक्का, की कहू! दुहैत-दुहैत आङुर भरा जाइए। बेराबेरी दुनू बेकती दुहै छी। ओना अखन पाँचे दिन भेल अछि। तहूमे दू दिन अधे-छिधे दुहलौं। पहिलोठ रहने थनमे गुदगुदी चलैत हरपटाए लगै। मुदा परसूसँ दूधो फाटब बन्न भऽ गेल आ असथिरो भऽ गेलि।''

- ''दूध बेचबो करै छह?''

- ''अखन तक तँ नै बेचलौंहैं मुदा एते दूध दुइये गोटे बुते केना सठत।'' कहि आगू बढ़ल। आमक कलम। चारु कातक हत्तापर लताम, दाड़ीम, नेवो, सरीफा रोपल। गाछक बीचमे अनारस, हरदी-आदी सेहो रोपल देख खुशीसँ गद्-गद् होइत बड़का काका बजलाह- ''रवि, तेहन वृन्दावन सजौने छह जे एत्तसँ जाइक मन नै होइए।''

काकाक खुशी देख हँसैत रविया कहए लगलनि- ''कक्का, बाढ़िक नोकसानसँ मन टुटि गेल। आगू नाथ ने पाछु पगहा देख मनमे आबि गेल जे सभ खेत-पथार बेच गामसँ चलि जाइ। मुदा फेर मनमे आएल जे गामसँ कतऽ जाएब। गाम-घर बाढ़िमे दहाइत अछि रौदीमे जरैत अछि। मुदा शहरो-बजारक दशा तँ सएह देखै छी। दिन-दहार डकैती, हत्या, अपहरण, सदिकाल होइते रहैत अछि। ततबे नै कतौ भाषाक तँ कतौ साम्प्रदायिक जहर वायुमंडलकँ दुषित केने अछि।''
रविक बात सुनि मूड़ि डोलबैत काका कहलखिन- ''हँ, ई तँ लाख रुपैयाक बात कहलह। हम तँ बुढ़हा गेलौं। दू-चारि सालक मेहमान छी। भने भगवान आँखिक इजोत लए लेलनि। ने किछु देखब आ ने दुख हएत। छोड़ह दुनियाँ दारीकँ अपन कहह।''

बड़का काकाक जिज्ञासा देख रविया बाजल- ''कक्का, घरसँ बहार धरि एक्के रंग बुझि पड़ल। की करी की नै करी! मनमे एबे नै करए। बड़ी कालक बाद मन पड़ल अपन देश आ पूर्वज। जहियेसँ मनुष्य ऐ धरतीपर अछि तहियेसँ ने हमर-अहाँक वंश सेहो छथि। जँ से नै रहितथि तँ अखन केना रहितौं। तहिना तँ अपन देशो (मिथिला) अछि। अदौएसँ मिथिलाक चर्च बेद-पुरानमे अछि। तै बीच लाखो भूमकम, अन्हर-बिहाड़ि, पानि-पाथर, बाढ़ि आएल होएत। केना अपन पूर्वज सहलनि? कि अपनो सभमे ओइ वंशक खून नै अछि? मनमे उत्साह जगल।''
बड़का काका- ''वाह! अच्छा, ऐ बगीचाक विषयमे कहह?''

रविया- ''कक्का, तेसर साल मद्रासी व्यापारी ट्रकपर फल-फलहरीक गाछ बेचैले आएल। हमहूँ पनहरटा गाछ कीन कऽ रोपलौं। वएह छी। परुँकों-तेसरों मोजरल रहै मुदा मोजर तोड़ि देलिऐ। एकटा-दूटा आम फड़ैत मुदा गाछक सेखिए चलि जाइत। बड़हनमो खूब अछि तीनिये सालक गाछ छी सए-सवा-सए कऽ फड़ल अछि। अपने ऐठामक गुलाब खास जकाँ अछि मुदा पकैत अछि ओइसँ पहिने। यएह आम खुआएब। आब आगू चलू तरकारीक खेत।''

खेतक आड़िपर अबिते कक्काक नजरि चोन्हरा गेलनि। तरहत्थीसँ आँखि पोछि देखलनि तँ मनमे शंका भेलनि। जै जेठमे धार-पोखरि इनार सूखि जाइत, बाध-बोनमे लू चलैत, खेतसँ धधड़ा जकाँ ताव उठैत ओइ खेतकेँ हरियर वस्त्र पहिरा गहना-जेवरसँ सजा नायिका जकाँ मलड़बैत अछि, ई नान्हिटा काज नै अछि। मुदा काजो ओहन अछि जे सोझे स्वर्ग बनबैत अछि। जिज्ञासा भरल नजरिसँ काका पुछलखिन- ''रबी, की सभ लगौने छह?''
रविया- ''कते कहब काका, एकबेर घूमि कऽ देख लियौ। सुरुजो बारहसँ निच्चाँ उतड़ैपर छथि। चलू भोजन कऽ लिअ।''
- ''मन भरि गेल। खाइक छुधा मेटा गेल। होइए जे जहिना कृष्ण वृन्दावनमे रहथि तहिना हमहूँ एतै रहि जाय।''

::::::::::

४. तिलासंक्रान्तिक लाइ

धानक लड़ती-चड़ती पतराइते गमैया विद्यालयमे तिलासंक्रान्तिक पढ़ाइ शुरु भऽ गेल। विद्यालयक लेल ने जगहक कमी आ ने पढ़ौनिहारक। इनार-पोखरिक घाट सन पवित्र स्थान आ बिनु आरक्षणक महिला शिक्षक। शिक्षको इमानदार। ने टयूशन फीस लैत आ ने दरमाहा। पढ़बैक लेल एते उताहुल जे खेनाइयो-पीनाइक चिन्ता नै। छोट दिन होइतो भानस-भातक कौड़ियो भरि ढकार नै। पावनिक विषय नम्हर तँए पूरा विषयक शिक्षक तँ नै मुदा टुकड़ी-टुकड़ी कए कऽ अपना-अपना ढंगसँ अपन हिस्साक विषय पढ़बए लगलीह।

पाँच दिन पहिनहि केदार कलकत्तासँ गाम आबि गेल। ओना ओ दुर्गोपूजामे सभ साल एबे करै छथि, तिलोसंक्रान्ति सेहो नहिये छोड़ै छथि। केना छोड़ताह? आब कि कलकत्ता ओ कलकत्ता रहल जे तीन-तीन दिन गाड़ीमे बैसल-बैसल देह-हाथ अकड़ि जाएत। आब तँ छह घंटाक रस्ता कलकत्ता थिक। तहूमे केदार अपन गाड़ी रखने छथि चाह-नास्ता कलकत्ताक डेरामे करै छथि आ कलौ गाममे। हुनके सबहक तँ ई दुनियाँ आ देश छी। एक तँ बैंकक मैनेजरक दरमाहा दोसर कुरसीक कमीशन आ तइपर सँ अपनो बैंकक शाखा खोलनहि छथि। कमीशने बेतन तँए स्टाफोक कमी नै। कलकत्ता सन शहर जइठाम भीखमंगो करोड़पति अछि।

‘‘गाममे जँ कियो मरद अछि तँ केदार छथि। गाममे के आँखि उठा कऽ हुनका दिस तकलनि। अखनो सत्तरहटा अँचार, बीकानेरक पापड़ केदार छोड़ि तिलासंक्रान्तिमे के खाइत अछि विधि पूर्वक जँ कियो पावनि करैत अछि तँ केदार छोड़ि दोसर के बाजत’’ -दतमनि करैत पोखरिक घाटपर जगदरवाली कछुबीवालीकेँ कहलखिन।
साड़ी-साया रखि कछुबीवाली घाटपर बैस झुटकासँ पाएर मजैत छलीह। मन चिन्तामे बाझल छलनि। काल्हिये पावनि छी ने चूड़ा कुटलौंहेँ आ ने मुरही भुजलौं। जाबे चूड़ा-मुरही नै हएत ताबे लाइ कथीक बनाएब। गलती अपनो

भेल जे अगते-ओरियान नै केलौं। फेर मनमे उठलनि, एक दिनक पावनि लेल महीना दिन पहिनेसँ ओरियान करए लागब। एतबे काज अछि। काजक दुआरे एको दिन ने समैपर नहाइ छी आ ने खाइ छी। जेकरा काज नै छै सालो भरि पावनिये करह। कोनो की हम जनै छेलिऐ जे पनरह दिन पहिनेसँ शीतलहरी लाधि देतै जइसँ चूड़ा-मुरहीक ताड़ल धान भारलो ने जाएत। जै देवताकेँ पावनि करबनि हुनका एतबो बुत्ता नै छन्हि जे अपनो पावनिक ओरियानक चिन्ता करितथि। फेर मनमे एलनि जे चूड़ा-मूढ़ी तँ दोकानो-दौरीमे बिकाइत अछि। कीन लेब। मुदा लाइ केना हएत? चूड़ा-मुरही तँ अखड़ा होइत अछि। अमैनियाक जरुरत नै अछि। मुदा लाइ? केहन-कहाँ हाथे, केहन-कहाँ बरतनमे बनौने हएत? तहूमे आइ-काल्हिक बनियाँ सभ तेहन गै-खोर भऽ गेल अछि जे गुड़क बदला छुऐमे बना पाइ टलिया लैत अछि। दिनेमे मुरही-चूड़ा लऽ आनब आ रातिमे खेला-पीला बाद बना लेब। मन असथिर होइत रहनि कि जगदरवालीक बात मन पड़लनि। फेर वापसी क्रोध रस्तासँ घुरि गेलनि। तुरुछ भऽ उत्तर देलखिन- ‘‘सत्तरह रंगक आकि पचासे रंगक जे अँचार केदरबा ख-ए-त तइमे कछुबीवालीक जीहक पानि मेटेतै।’’

श्यामा काकी चुपचाप नहा कऽ घर दिसक रस्ता धेलीह। अपना धुनिमे श्यामाकाकी। ने समाजसँ कोनो मतलब आ ने समाजक काजसँ। समाजक काजे बेढ़ंग अछि। ककरो कोनो ठेकान नै। की बाजत आ की करत तेकर कोन ठेकान। एक्के मुँह जत्ते लोकसँ गप करत, एक्के गप तते रंगक बाजत। लगले किछु लगले किछु। तहूमे आब तेहन-तेहन अगिमूत्तू सभ भेलहेँ जे, जूरशीतलक मुइल नढ़ियाकेँ जहिना कुत्ता सभ अपना-अपना दिस दाँतसँ पकड़ि-पकड़ि घिचैत, तेहने भऽ गेल अछि नै तँ कतौ एना हुअए जे एक्के गाममे एक्के पावनि दू-दिना, तीन दिना दुनू होय। तहन तँ जेकरा जे मन फुड़ै छै से करैए। सभ करत अपना मने आ हम करब लोकक मने। अपन जिनगी अछि अपन दुख-सुख अछि। अपनासँ पलखति हएत तँ दोसरो बच्चा दिस देखब। नै तँ अपन के सम्हारि देत? यएह सभ विचार श्यामा काकीक मनमे नचैत रहनि। चूड़ो-मूढ़ीक लाइ भइये गेल। तिलबो बनाइये लेलौं।

कुरथियो-तेबखाक दालि ऐछिये। लोको सभ जीहक चसकी दुआरे कियो खेरही तँ कियो राहड़ि तँ कियो बदामक दालिक खिचैड़ बनबैत अछि। एते बात मनमे उठिते काकीक विचार रुकि गेलनि। कुरथीक तुलना राहड़ि, खेरहीसँ करए लगलीह। पूसक संक्रान्तिक दिन पावनि होइत। राहड़ि चैत-बैशाखमे जहनकि बदाम फागुन आ खेरही जेठ-अखाढ़मे होइत अछि तहिक हिसाबे कुरथिये ने नवकी कनियाँ बनि घर एलीह। ई बात मनमे अबिते काकीक मन आगू बढ़लनि। हमरा सन दही ककर हेतै? कियो लोहा महींसक दूध पौरने हएत तँ कियो पोखरिक पानिक। मुँहसँ हँसी निकललनि। जेहने लोक सभ ठक भऽ गेल अछि तहने देवियो-देवता। अनदिना कियो दूधमे पानि फेँट कऽ बेचैए तँ बेचैए, पावनिमे जे हुनको सभकेँ खुअबै छन्हि से ओ नै बुझै छथिन। किएक ने हड़हरी बज्जर खसा दै छथिन। एते दिन हुनको सभकेँ शक्ति छलनि आब ओहो सभ डलडाक मधुर खा पेट बिगाड़ि लेलन्हि अछि। फेर मन अपना दिस घुड़लनि। खिचैड़मे जम्बीरी नेबो नीक आकि घीउ। मुदा ऐ प्रश्नपर मन नै अँटकलनि। खाइ बेरमे बुझल जाएत। फेर मनमे खुशी एलनि। मुस्की दैत आँखि उठा कऽ तकलनि तँ दीनकरपर नजरि पड़लनि। मने-मन प्रणाम कए कऽ कहए लगलखिन- ''एहनो जाड़मे अहाँ चास-वासकेँ भरि देने छिऐ। अपना लेल कोठी माल-जाल लेल टाल खेतक-खेत तरकारी, बाधक-बाध गहूम, दलिहन-तेलहनसँ सजल खेत। हे दीनकर बहुत जाड़ सहि जीब रहल छी कल्लह फेरु।''
आँखि निच्चाँ होइते मनमे एलनि। आइये ने सीमापर (मकर रेखा) जेताह। काल्हिसँ तँ तिले-तिल एबे करताह।

पावनिक छुट्टीमे ज्योतिषी काका गाम नै एला कि काकीकेँ आफद भऽ गेलखिन। ओना साल भरिसँ काकियोक मन बदैल रहल छन्हि। जत्ते वुधियार काकी भेल जाइ छथिन तते काकासँ मन-भेद भेल जाइ छन्हि। ज्योतिषी काकाकेँ काकीक ओइ किरदानीसँ हृदेमे चोट लगलनि, जै दिन काकी काकाक कमाएल रुपैया चोरा कऽ बुइधिक सर्टिफिकेट कीन लेलखिन। ओही दिनसँ काकीक आफद कक्का आ काकाक आफद काकी भऽ गेलखिन। विद्यालयसँ

अबैतखिन बाटेमे पावनिपर नजरि गेलनि। कने काल गुम्म भऽ उत्तर-दक्षिणक सीमापर आँखि रोपलनि। आँखि रोपितहि हृदेमे हँसी उठलनि। जाधरि लोक दक्षिणायणमे मरैत अछि नर्क जाइत अछि आ उत्तरायणमे स्वर्ग। स्वर्ग तँ मनुष्य निर्मित छी जहन कि मकर संक्रान्ति ग्रह-नक्षत्रक प्रक्रिया छी। दुनू एक ठाम केना भऽ गेल। बाटेसँ ज्योतिषी काकाक मनकेँ हौंड़ने रहनि। आंगनमे पाएर रखिते काकी टोकि देलखिन- ‘‘तलब भेटल कि नै? अखन धरि कोनो ओरियान नै भेल अछि।’’

काकीक बात सुनि काकाक मन लहड़ि गेलनि। आँखि गुड़ेरि काकीकेँ देख ओसारक चैकीपर झोरा रखि हाथ-पाएर धोअए कल दिस बढ़लाह। मने-मन काका सोचति जे सबकाजक बेर फँड़बन्ही करतीह आ टाका बेरमे काका मन पड़ै छन्हि। काका अप्पन धुनिमे आ काकी पावनिक धुनिमे। तिलासंक्रान्ति सन पावनि जे दंगलक अखाड़ापर उतरैबला अछि ओइ लेल अखन धरि हाथपर हाथ जोड़ि बैसलि छी.....। मुदा पहिलुके नजरि काकीकेँ डोला देलकनि। करेज काँपि गेलनि। मन निर्णए कऽ लेलकनि जे परिवारक गारजन पुरुख होइत छथि, मान-अपमान पुरुखक कपारपर चढ़त। हम तँ अनेरे तबाह छी। जे आनि कऽ देता ओ बना कऽ आगूमे देबनि।

कलपर पानि पीब, आंगन आबि ज्योतिषी काका चौकीपर बैस तमाकुल चुनवए लगलाह। अपन भलाइ सोचि काकी बाड़ी दिस टहलि गेलीह। मुँहमे तमाकुल लैत काका आँखि घुमा कऽ पत्नी दिस देलखिन। मन खुट-खुट करनि जे फेर ने किम्हरोसँ आबि किछु फरमा दथि। मुदा सोझमे नै देख मन असथिर भेलनि। मनमे उठलनि, काल्हि मकर संक्रान्ति छी। जइठामसँ सूर्य दछिन मुँहे नै बढ़ि उत्तर मुँहे घुमताह। सूर्यकेँ उत्तरायण होइते जीव-जन्तुमे सूर्यक प्रकाश नव स्फूर्ति पैदा करैत अछि। मौसमक बदलाव हुअए लगैत अछि। जइसँ परिवर्तनक रुप देख पड़ैत अछि मुदा लोकमे परिवर्तन की आओत? जे दछिनपंथी विचार व्यवहारिक रुपमे पर्वत सदृश्य अपन रुप बनौने अछि ओ चूड़ा-लाइ खेने भेट जाएत।

संक्रान्तिक पहिल संध्या अबैत-अबैत भोरमे नहेबाक कार्यक्रम तैयार भऽ गेल। ऐ प्रश्नपर विद्यालयक सभ शिक्षिका एकमत भऽ गेलीह। ऐ कार्यक्रममे एकटा फनिगा आबि गेल। फनिगाक गंधसँ वातावरणमे गंध आबि गेल। गंध ई जे पोखरिक घाटक तरमे कमलेसरी (कमलेश्वरी) महरानी चूड़लाइक छिट्टा रखने छथिन। जे पहिने नहाइले जाएत ओकरा देथिन।
टेल्हुक धिया-पूतासँ लऽ कऽ ढेरबा धरि अपन दावा ठोकए लगल जे पहिने हम नहाएब आ कमलेसरी महरानीक चूड़-लाइक छिट्टा आनब। अपन-अपन शक्तिकेँ जगबैत संकल्पित हुअए लगल।

जारन तोड़ि कऽ अबैत काल अझप्पे पोखरिक घाटक तरमे कमलेसरीक चूड़-लाइक छिट्टा गोपला सुनलक। मुदा किछु दोहरा कऽ नै बुझए चाहलक। माथपर ठहुरीक बोझ रहए। मुदा भारी मनसँ हटि चूड़ा-लाइक छिट्टापर पड़लै। बड़का छिट्टा। जेहन बड़का छिट्टा भत-भोजमे भात-झकैक लेल होइत छै। भरिये दिन ने पावनि छी, कते खाएब। मनमे खुशीक अंकुरा उगलै। घरपर आबि जरनाक बोझ रखि मने-मन संकल्प केलक जे सभसँ पहिने हम घाटपर जाएब। गहींर गोपला, विचारकेँ गोपनीय रखलक। माइयो-बापकेँ नै कहलक।

बारह बजे रातिमे नीन टुटितहि गोपला माए-बापकेँ बिनु किछु कहनहि पोखरि दिस विदा भेल। माए बुझलनि जे लघी-तघी करए निकलल। बुद्ध (पिता) नीनभेड़ि, तँए बुझबे ने केलनि। जहिना प्रेमीकेँ अपन प्रिय छोड़ि दुनियाँमे किछु नै देख पड़ैत तहिना लाइक छिट्टा छोड़ि गोपला किछु नै देखैत। दुलकी मारैत पोखरि दिस बढ़वो करै आ आँखि-कान उठा-उठा आगुओ ताकै जे क्यो दोसर ने तँ बढ़ि गेल। ने कानसँ कोनो भनक बुझि पड़ै आ ने अन्हारमे किछु देखए। किछु काल देख माए बान्हपर आबि तकलक तँ गोपलाकेँ नै देखलक। मनमे टराटक लगए लगलै। जे एते अन्हारमे कतऽ चलि गेल। भरिसक भकुआएलमे किम्हरो चलि ने तँ गेल। मुदा अन्हारमे देखबे कते दूर करब।

ओह से नै तँ हुनको (पति) उठा दुनू गोटे चोरबत्तीक हाथे तकबै। सएह केलक।

पनरह-बीस दिनसँ शीतलहरी चलैत। लागल-लागल पछियो संग दैत। घुरक आगियो मैलमुँह भेल रहैत अछि। गोपलाकेँ ने रस्ता अन्हार बुझि पड़ै आ ने पोखरि दूर, ने जाड़ बुझि पड़ै आ ने पोखरिमे पानि। साक्षत् ब्रह्ममे लीन भक्त जकाँ गोपलो लाइमे लीन भऽ गेल। पोखरि पहुँच घाटक तरमे गोपला हथोरिया दिअ लगल। जाधरि लाइक आशा मनमे रहै ताधरि खूब हथोड़लक। हथुरैत-हथुरैत बर्फ जकाँ मन जमि गेलै। जाड़ बुझि पड़ए लगलै। सौंसे देह थरथर कँपैत रहए। गोपालक मन मानि गेलै जे मरि जाएब। पोखरिसँ उपर भऽ घर दिसक रास्ता धेलक। ताधरि चोरबत्तीक हाथे आगू-आगू माए आ दू लग्गा पाछु पिता पेना नेने अबैत। फड़िक्केसँ माए थर-थर कँपैत गोपलाकेँ पुछलक- ‘‘गोपाल।’’
गोपाल सुनि बुधबाकेँ खौंझ उठल बाजल- ‘‘मिरगी उठल छलौ जे पोखरि आएल छेलेँ?’’

थरथराइत गोपलाकेँ अपन आँचरसँ माए देह पोछए लगली। बेटाक दशा देख पिताक मन पघिलए लगलै। जहिना गंगा स्नानक बाद नीक विचार मनमे उपकैत अछि तहिना बुद्धक मनमे उपकलैक। सोचए लगल आइ जँ मरि जाइत तँ दिनमे ककरा तिल-चाउर दैतिऐक के तिल बहैत। दछिनबारि टोलमे देखै छी सबहक बेटा-पुतोहू बाप-माएकेँ छोड़ि परदेश चलि गेल अछि। अपने सभ बुढ़ियाँसँ नवकी कनियाँ जकाँ तिलकोर तड़ै छथि। तिलकोरक तरुआ केहन होइ छै ई तँ बुढ़िये कनियाँ सभ बुझै छथिन। जिबठ बान्हि बुधबा गोपलकेँ पजिया कऽ पकड़ि कोरामे लए डेगगरसँ आंगन दिस बढ़ए लगल। आंगन आबि पुआर धधकौलक।

जहिना गोपलाक देह भीजल तहिना देहमे सटल गंजी-पेन्ट। मुदा कपड़ा बदलैक साहस नै भेलै। देह कठुआएल, हाथ बिधुआएल, ओंगरी ठिठुरल। मुदा

कनियेँ कालक बाद टनकल। दुनू परानी बुधबो जाड़सँ ठिठुरल रहए। तीनू टनगर भेल। टनगर होइते गोपाल माएकेँ कहलक- ‘‘आंडी-पेंट आनि दे।’’

गोपाल पेंट-शर्ट पहीरए लगल। तीनूक सिरसिराइल मन आगिक गरमी पाबि वसन्ती हवामे टहलए लगल। बुधबा पत्नी दिस देख हाथ पकड़ि, पहुँचल फकीर जकाँ बाजल- ‘‘आइ गोपला हाथसँ चलि जाइत। सबहक अंगनामे पावनिक उत्साह रहितै आ अपना दुनू गोटे बेटाक सोगमे कनैत दिन बितैबतौं।’’

पिताक बात सुनि आशा चौंकि गेलि। जना भूमकमक धक्का धरतीकेँ लगैत तहिना आशाक हृदेमे धक्का लगल। धड़फड़ा कऽ उठि कोठीपर राखल मुजेलासँ दूटा गोल-गोल लाइ लेने गोपलाक हाथमे देलक। हाथमे चूड़ाक लाइ अबिते गोपाल हबक मारलक। मुदा तेहन सक्कत जे ठोर चँछा गेलै, मगर दाँतसँ लाइ नै कटलै। माएकेँ कहलक- ‘‘लाइ कहाँ टुटैए।’’

बेटाक बात सुनि आशाक मनमे खुशी उपकल। अपन कारीगरीक परीछामे पास देख मुस्की दैत पति दिस देख बाजलि- ‘‘तेहेन पाकमे लाइ बनौने छी जे बिना सिलौट-लोढ़ीसँ सुनत।’’

बेटाकेँ बुद्धु पुछलक- ‘‘आइ तँ कतौ नाचो-ताँच ने होइ छै तखन कियए तूँ रातिमे एते दूर चलि गेलैँ।’’
बिचहिमे आशा बाजलि- ‘‘लघी-तघी करैले उठल हेतै, भकुआएलमे बौआ गेल हेतै।’’
हाँइ-हाँइ गोपाल मुँहक लाइकेँ चिबा कऽ घोंटि माए दिस देख बाजल- ‘‘लोक सभ साँझमे बजै छेलै जे पोखरिक घाटक तरमे कमलेसरी महरानी लाइ रखै छेथिन। वहाए अनैले गेल रहौं।’’
गोपलाक बात सुनि बुद्धुक मन महुरा गेल। मने-मन बाजल जे अपना कमेने नै हएत ओ भोला बाबा बड़दक.......। मुदा क्रोधकेँ ऐ दुआरे मनमे दबने रहल जे

गामक लीला सभ आँखिक सोझमे नचए लगल रहए। जे सभ जुआनीमे, मद-मस्त भोम्हरा जकाँ जिनगी बितौलनि, बेटा-पुतोहूक चलैत मुँहसँ धुँआएल चुल्हि फूकए पड़ैत छन्हि। जइसँ दुनू आँखिमे नोर टघरैत रहैत छन्हि मुदा ओ हृदेक व्यथा नै, धुँआ लागब बुझै छथि। बुद्धूक हृदए पसीज गेल। मुरखो अछि तैयो तँ बेटे छी। बरखे ने चौदहटा भऽ गेलै मुदा भरि दिन तँ असकरे लग्गी लऽ कऽ बोनाएल रहैए। ने खाइक ठेकान रहै छै आ ने नहाइक। तहन बुद्धिसँ भेँट केना हेतै?

बेटाक बात सुनि माएक मन उमड़ि गेलनि। बुझबैत बजलीह- ‘‘रौ बौआ अपना की कोनो चीजक कमी अछि। जते रंगक धान गिरहतकेँ होइ छै तते अपनो ने होइए। सतरियाक चूड़ा कुटने छी, लाइ बनौने छी आ ओकरे खिचैड़ियो रान्हब।’’

पछुआरक रस्तापर गल्ल-गुल्ल सुनि आशा घरसँ निकलि डेढ़ियापर पहुँचलीह कि महरैलवालीक बाजब सुनलनि। डेढ़ियेपर ठाढ़ भऽ सुनए लगलीह। महरैलवाली हड़ड़ीवालीकेँ कहलखिन- ‘‘हम तँ आध पहर रातिये नहेलौं। अखन धरि अहाँ पछुवाएले छी।’’
हड़ड़ीवाली- ‘‘अहाँ जकाँ रातिमे कुकुड़ घिसियेने छलौं जे भोरे नहा पाक हएब।’’

दुनू गोटेक गपकेँ दबैत तमोरियावाली जोर-जोरसँ पुतोहूकेँ कहैत रहथिन- ‘‘तीन दिनसँ बोखार छेलह तहन कियए भोरे एहेन समैमे नहेलह?’’

मुदा पुतोहू उत्तर नै देलकनि। आशाकेँ मन पड़लनि जाड़सँ कँपैत गोपाल।

::::::::::

५. भाइक सिनेह

बारहसँ राति ढहि चुकल मुदा एक नै बाजल छलैक। अगहन मासक अन्हरियाक चतुर्दशी। एक तँ डमहाएल अन्हार तइपर झकसी जकाँ ओस खसैत। आँखिक रोशनी एते दुबरा गेल जे अपनो देह भरि नै देख पबैत। जाड़क राति, तँए लोक सबेरे सीरक सरिया ओछाइन पकड़ि लैत। पहिल नीन पूड़ि कऽ टुटिते शिष्टदेवक मन छोट भाए विचारनाथपर पहुँचल। सभ तरहेँ श्रेष्ट रहितो आँखिक सोझमे परिवार टुटि गेल। जिनगी तँ ओहन जाल नै, जइमे ओझराएब अनिवार्य अछि। विधाता तँ सभ किछु दए मनुष्यकेँ पठबैत छथिन तहन किए लोक मकड़ा जकाँ अपने करनीसँ ओझरा जाइत अछि। विवेकमे केना भूर भऽ जाइत छै जे हंस नै बनि कार-कौआ बनि जाइत अछि। परिवार भलहिं फूट भऽ गेल हुअए मुदा विचारनाथ तँ छोटे भाए छी। पितातुल्य छिऐ। कियो- बुझै वा नै बुझै, अपने तँ जरूर बुझै छी। अखन धरि जते दुनियाँ आ उगैत सूर्यक दर्शन हमरा भेल अछि ओते तँ विचारनाथकेँ नै भेलैहेँ। परिवार टूटैक दोख ककर लगत। पिता-तुल्य तँ पिरवारमे हमहीं छी। मनुष्यक जिनगीक गाड़ी समैक संग चलैत आएल अछि आ आगुओ चलिते रहत। सोचैत-विचारैत शिष्टदेवक हृदए बर्फ जकाँ पघिल-पघिल पानि हुअए लगल। पीपनीमे अँटकल नोरक बुन्न सरस्वती नदीक धार जकाँ पहाड़पर सँ समतल भूमिमे बहए लगल। नोरक संग निकलल भाइक सिनेह सेहो निकलल। जिनगीक सभ बाटमे विचारनाथ पाछु अछि तँए ओकर बाँहि पकड़ि आगू खिंचैक अछि। पाँच समांग कमेनिहारक परिवार अछि जहन की ओ दुइये परानी अछि। घरक कोनो वस्तु निकालि कऽ देलासँ पत्नी देख जेती मुदा खरिहानक धानक बोझ तँ नै देखतीह।

बिनु ठेकानल रातिमे विचारनाथक नीन सेहो टुटल। नीन टुटिते मनमे उठल जे जै भाइक -भैयाक- संग चंदेसर, विदेसर, जागेसर महादेव स्थान संगे जाइ छलौं की बेटो-भातिज संगे जाएत? एहेन टूट परिवारमे कोन भेल? जहियासँ ज्ञान-परान भेल तहियासँ जहिना भैयाक संग रहैत एलौं, भीन होइसँ पहिनौं धरि तँ ओहिना रहलौं। मुदा कोन रोग पिरवारमे किम्हरसँ घुसि आएल जे दुनू

भाँइ महींसक सींग जकाँ भऽ गेल छी। मुदा भैयाक दोख कहाँ कतौ छन्हि। दू परिवारसँ दुनू दियादिनी आबि दुनू भाँइकेँ दू दियाद बना देलक। दुनू भाँइमे जेठ-छोटक बेवहार कहाँ अछि। दुनू भाँइ तँ भइये-बच्चा छी मुदा दियादिनीमे से कहाँ छै? माए तुल्य भौजीक दोख केना लगेवनि मुदा की ओ छोट दियादिनीकेँ छोट वहिन बुझै छथिन कि......?

मनुक्खोक अजीब गति अछि। जाधरि सम्मिलित परिवार रहैत ताधरि दुनियाँक सभ रोग परिवारकेँ पकड़ने रहैत अछि मुदा परिवार टुटिते रोग पड़ा जाइत। खएर किछु होउ, जाधरि जीबै छी ताधरि भैयाकेँ भइये बुझबनि भलहिं ओ जे बुझथि। जहिना आमक बंश बढ़ैक दू रास्ता अछि। डारिसँ गाछ जोड़ि - कलम- जे बनैत ओ पुन: वएह आम रहैत मुदा ऑठीक जनमल गाछ दिनानुदिन रूप बदलैत, सभ किछु बदैल लैत अछि। एक हिस्सा रहितो भैयाकेँ पाँच गोटे खेनिहारो छन्हि आ तीनू भाए-वहिनकेँ पढ़बैयोमे खर्च होइत छन्हि। हमर तँ नापल-जोखल अढ़ाइ गोटेक परिवार अछि। एक सम्पतिमे दोवर खर्च भैयाक छन्हि। सहोदर रहैत जँ भैयाक दुख हम नै बुझबनि तँ आन थोड़े बुझतनि? जै धरतीपर राम-लक्ष्मण सन भैयारी भऽ चुकल अछि, की हम ओइ धरतीपर जन्म नै लेने छी।
चुपचाप ओछाइनपरसँ उठि खरिहान जाय धानक जाकमे सँ एक बोझ उठा भाइक खरिहान दिस विदा भेल। तै काल शिष्टदेवो अपना खरिहानसँ धानक बोझ उठा विचारनाथक खरिहान दिस चलल। दुनू भाँइक खरिहानक मुँह दू दिस रहने किछु क्षणक रास्ताक दूरी बनि गेल। बीच बाटपर दुनू दिससँ दुनू भाँइ बोझ उठौने एक दोसराक आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। मुदा अन्हार रातिक दुआरे कियो ककरो चिन्हलक नै। दुनूक मनमे चोरक शंका भेल। मुदा हल्लो केना करत? अखन तँ दुनू चोरे छी। भलहिं अपने धान किए ने होय। मक्खन चोर कृष्ण तँ नै छी जे चोरा कऽ खाइयो लेब आ झूठ बाजि छिपाइयो लेब। खरहोरिक कड़ची जकाँ दुनू भाँइ सजीव रहितो निर्जीव आ निर्जीव रहितो सजीव ठाढ़। मुँहमे बोल नै, आँखिमे नोर नै अमरलत्ती जकाँ दुनू हृदए ओझरा कऽ लटपटा गेल। एक क्षणक लेल सरस्वती नदीक धारा बहब छोड़ि

ठाढ़ भऽ मोटाए लगल।

मूड़ी उठा शिष्टदेव अकास दिस तकलक। उत्तरे दछिने डगहर आ माथसँ कनेक निच्चाँ सतभैयाँकेँ पछिम दिशा दिस हिया-हिया देखए लगल। सतभैयाँपर सँ नजरि निच्चे ने उतड़ैत। तै काल उत्तरबरिया गाछपर भोरक इशारा करैत चकवी-चकेबाक देह डोलबैत बोली देलक। चकवीक आवाज सुनिते शिष्टदेवक मनमे आएल, हो नऽ हो, कहीं पत्नी जगि नै गेल होथि। मूड़ी निच्चाँ करिते मुँहसँ फुटलनि- ''के?''

बोलीक अवाज अकानि विचारनाथ उत्तर देलक- ''हम।''

''हम'' सुनि शिष्टदेवक मन कहै भाय -विचारनाथ- छी मुदा तर्क कहै एत्ती रातिकेँ बोझ उठौने कत्तऽ जाइए। ताड़ियो-दारू तँ नहिये पीबैए जे पसीखाना जाइत हएत आकि भट्ठीखाना। सामंजस्य करैत मुँह बाजल- ''बौआ।''

''भैया।''

दुनूक मुँह एक्के बेर बाजल- ''हँ।''

शिष्टदेव दोहरौलक- ''ऐहन काजर सन कारी रातिमे बोझ कत्तऽ नेने जाइ छहक?''

जहिना कारिखकेँ सिनेह हृदए लगा चमक आनि आँखिक गुण बढ़बैत तहिना विचारनाथक हृदए चमकल- ''भैया, अहाँक खर्च देख मन कहलक जे पाँच बोझ धान दए अवहुन।''

दुनू भाँइक मनमे उठल- ''भीन किए....?''

जाधरि सदनदेव आ श्रद्धावती जीबैत रहथि ताधरि स्वर्गक परिवार छलनि। अपन अमलदारियेमे सदनदेव दुनू बेटाकेँ गामक स्कूल धरि पढ़ा वियाह-दुरागमन करा जिनगीक लीलासँ निचेन भऽ गेल छलाह। सोलह बीघा जमीनक किसान परिवार, बाढ़ि-रौदीक बीच रहितो दोसराक सेवाकेँ कर्ज बुझि अपन परिवारकेँ सालक आमदनीक बीच खर्च कऽ रखि उगरल आमदनीसँ कातिक मास भागवत आ भोज कए अगहनसँ नव जिनगीमे पाएर रखैत छलाह। ने

बेटाकेँ किछु अढ़बैत छलाह आ ने पत्नीकेँ। अढ़बैक प्रयोजने नै। परिवारकेँ संस्था बुझि अपन-अपन समैक उपयोग शक्तिक अनुकूल काजमे सभ लगबैत रहैत छलाह। अपने अनुकूल परिवार देख सदनदेव दुनू भाँइक वियाह केलनि।

शिष्टदेवक वियाह बीस बीघाबला लालबाबूक परिवारमे आ विचारनाथक बारह बीघाबला श्रमदेवक परिवारमे।

महिला शिक्षाकेँ अबैध रहने कैकेयी सेहो नियमक पालन केलक। जइसँ पितो -लालबाबू- खुश। माल-जाल पौसेले एकटा नोकर रखने आ खेती जने-हरवाह हाथे होइन। अंगनाक मालिक पत्नियेे रहनि। खाइ-पीबैक चहटि पत्नीकेँ नैहरेसँ लागल जै हेतु बेटी-पुतोहूँकेँ रहितो भानस अपने करैत छलीह। गठूलासँ बेटी जारन आनि दैत छलनि आ घरसँ बरतन-बासन आनि पुतोहू चुल्हि लग दनि। अपने तँ तरकारिये बनबै, चाउरे फटकै आ दालिएक खोंइचा बीछैमे पसेना पोछैत रहैत छलीह। चुल्हिक एक भाग पुतोहूकेँ आ दोसर भाग बेटीकेँ बैसाए बीचमे अपने बैस नैहरक खिस्सा सभ दिन सुनबैत छलीह जहिक चलैत, ने बेटी परबाबाक नाओं बुझैत आ ने ददिया ससुरक नाओं पुतोहू बुझैत छलनि।

बाढ़िक उपद्रवसँ परिवार चलब कठिन बुझि श्रमदेव पितियौत भायकेँ सातो बीघा खेत सुमझा परिवारक संग कलकत्ता चलि गेल। साते बर्खक दमयन्ती माए-बापक संग सेहो चलि गेलि। रिसरा जूट मिलमे श्रमदेव नोकरी ज्वाइन केलक। पक्का आठ घंटाक ड्यूटि। रास्ताक समए श्रमिकक। डेरा बगलेक स्कूलमे दमयन्तीक नाओं लिखा देलक। संगी-साथी सभसँ पँइच रूपैया लऽ कऽ दस किलो दूधवाली गाए कीन पत्नीक लेल सेहो काज ठाढ़ कऽ लेलक। बच्चेसँ माने साते बर्खसँ दमयन्ती थैर-गोबर करैत-करैत गाए पोसनिहारि भऽ गेलि। आठ बर्ख नोकरीक उत्तर मिलमे बेतनक लेल श्रमिक सभ हड़ताल केलनि। मिलमे ताला लटकि गेल। नोकरीक डगमगाइत स्थिति देख श्रमदेव सभ किछु -अपन अर्जल- बेची पुन: घर घुरि गेल। सस्त जमीन रहने पाँच

बीघा जमीनो आ तीनटा गाइयो कीन दोहरी काज ठाढ़ केलक।

समैक संग चलि दुनू भाँइ शिष्टदेव परिवारक गाड़ीकेँ पटरीपर चढ़ा अपन गतिऐ चलबैत रहल।

अंगनाक मालिक कैकेयी आ सहयोगीक रूपमे दमयन्ती रहए लगलीह। जेठ होइक नाते कैकेयी मुँहक बले जुइतो चलबए लगली आ हाथ- पाएरकेँ अरामो दिअ लगलीह।

::::::::::

६ प्रेमी

फगुआक दिन। मुरगाक बाङ सुनिते ओछाइन छोड़ि पक्षधर बाबा परिवारक सभकेँ उठबैत टोलक रास्ता धेने गौआँकेँ हकार दिअ विदा भेलाह। मनो गद्‌गद्। भीतरसँ खुशी समुद्रक लहरि जकाँ उफनैत रहनि। गौआँकेँ फगुआक भाँग पीबैक हकार दए दरबज्जाक ओसारपर बैस गर अटबए लगलथि जे दस किलो चीनी, मसल्ला आ भाँगक पत्तीक ओरियान तँ कइये नेने छी। आब खाली बाजा-गाजा संग लोककेँ अबैक अछि। एते बात मनमे अबिते उठि कऽ भाँगक पत्ती आ मसल्ला -मरीच, सोंफ, सनतोलाक खोंइचा, गुलाव फूलक पत्ती, काबुलि बदाम- लऽ आँगन जाए पुतोहूँकेँ कहलखिन- ‘‘कनियाँ, बुरहीकेँ पुआ-मलपुआक ओरियान करए दिअनु आ अहाँ भाँग पीसू। खूब अमैनियासँ पत्ती धुअब। तीन सलिया पत्ती छी, जल्ला-तल्ला लगल अछि।’’ कहि ओसारपर सभ सामान सूपमे रखि दरबज्जा दिस घुरि गेलाह। हँ-हूँ केने बिना गांधारी मसल्लाक पुड़िया निच्चाँमे रखि पत्तीकेँ सूपमे पसारि आँखि गड़ा-गड़ा जल्ला ताकए लगलीह। मनमे उठलनि जे आइ बूढ़ा सनकि-तनकि तँ ने गेलाहेँ। एत्ते भाँग लऽ कऽ की करताह। मुदा किछु बजलीह नै। आँखि उठा कऽ देख विहुँसि नजरि निच्चाँ कऽ लेलनि। ओना मिथिलाक नारी आँखिमे गांधारी जकाँ पट्टी बान्हि घरती सदृश्य सभ किछु सहैत एलीह। दरबज्जापर बैस पक्षधर सोचए लगलाह- जिनगीक एकटा दुर्गम स्थान दुर्गा टपा देलनि। मने-मन दुनू हाथ जोड़ि हृदेसँ सटा गोड़ लगलनि। अपना विचारसँ सुकन्या जिनगीक प्रेमी चुनलक। केना नै आनन्दसँ जीबैक असिरवाद दितिऐक। जै फुलवारीकेँ लगबैमे साठि सालक श्रम लागल अछि ओइ श्रमकेँ, जहिना छोट-छोट बेदरा-बुदरी टिकुली पकड़ि पुनः उड़ा दैत अछि तहिना हमहूँ उड़ा देव? कथमपि नै।

रुपनगर हाइ स्कूलक बोर्ड परीक्षाक सेन्टर प्रेमनगरक हाइ स्कूल भेल। देहाती स्कूल रहितौ परीक्षार्थीकेँ डेराक कोनो चिन्ता मनमे नै। सबहक मनमे एते

खुशी जे डेरापर धियाने ने जाइत। सभ निश्चिन्ति जे गाम-घरमे अखनो विद्याकेँ देवी स्वरुप बुझि सभ मदति करए चाहैत छथि। जँ मधुबनी सेन्टर होइतै तहन ने डर होइतए जे मेहता लौजमे सभ सामान चोरिये भऽ जाएत, तँए असुरक्षित अछि आ प्रोफेसर कोलनीक भड़े तते अछि जे ओतेमे तँ विद्यार्थी परीक्षाक सभ खर्च पुरा लेत। ओना प्रेमनगरक सइयोसँ उपरे कुटुमैती रुपनगरमे अछि, तँए किएक ककरो मनमे रहैक चिन्ता हएत। तहूमे प्रेमनगर हाइ स्कूलक हेड मास्टर तेहन छथि जे स्कूलक समैमे स्कूलक काज करै छथि बाकी बारह बजे राति धरि विद्यार्थीक खोज-पुछाड़िमे लगल रहै छथि जे ककरो कोनो तरहक असुविधा तँ ने भऽ रहल छै। तहूमे तेहन दरबज्जा अनन्दी बाबाक छन्हि जे इलाकाक लोक अपन रहैक ठर बुझैत अछि। घर्मशल्ले जकाँ। धन्यवाद यशोदिया दादीकेँ दियनि जे बुढ़ाढ़ियोमे अभ्यागत सबहक अँइठ-काँठ बारह बजे राति धरि उठबिते रहै छथि।

परीक्षासँ एकदिन पहिने लोचन सभ समान शुटकेशमे लऽ साइकिलसँ प्रेमनगर पहुँचल। लोचनक परिवारकेँ पक्षधरक परिवारसँ साठियो बर्ख उपरसँ दोस्ती अबैत रहनि। आजादीक हुड़-बड़ेड़ाक समए रहए। जहिना गामक धियापूता गुल्ली-डंटासँ क्रिकेटक मनोरंजन करैत तँ शहरक धिया-पूता जगहक अभावमे खेलक स्कूलमे नाओं लिखा मनोरंजन करैत अछि। तहिना पक्षधरो आ ज्ञानचन्दो आजादीक लड़ाइमे पढ़ाइ छोड़ि समाजक बीच आबि हुड़-बरेड़ामे शामिल भऽ गेला। समाजक काजमे हाथ बँटबए लगलाह। समाजमे ककरो ऐठाम बेटीक वियाह होइत आकि बरिआती अबैत तँ अपन वहिन बुझि, बिनु कहनौं पाँच दिन निश्चित समए दिअ लगलखिन। तहिना आरो-आरो काज सभमे हाथ बँटबए लगलाह। मुदा अस्सी बर्खक उपरान्तो पक्षधर पक्षधरे आ ज्ञानचन्द ज्ञानचन्दे रहि गेलाह। कहियो कियो नेता नै कहलकनि। हँ एत्ते जरुर भेलनि जे भाइ-भैयारी भेने गाममे तते भौजाइ भऽ गेलनि जे बसन्त छोड़ि ग्रीष्मक रस्ते घेरि देलकनि। आब तँ सहजहि बुढ़ाढ़ीमे धियापूताक संग रंगो-रंग खेलै छथि आ जोगिड़ो गबै छथि। गाम स्वर्ग जकाँ लागि रहलनि अछि। किएक नै मन लगतनि जै गाममे कालीदास सन विद्वान, जे जही

डारिपर बैसब ओइ डारिकेँ काटब मुदा ने कुड़हरिक धमक लागत, ने डारि डोलत, ने दुनू हाथे कुड़हड़ि भाँजब तँ देह डोलत आ ने दुनू पाएरक बाइलेंस गड़बड़ाएत। निश्चिन्तिसँ जखन डारि खसए लगतै तखन ओइपर बैसले-बैसल धरतीपर चलि आएब, एहेन विद्वान् सभसँ तँ गामे भरल अछि। एते दिन, अपराधीक कम संख्या रहने नजरि निच्चाँ रहैत छलैक मुदा आब ककरा कहबै अपनो घरवाली धमकी देती जे माए-बाप आ भाइ-भौजाइक पाछू लगल रहै छी आ अपना धिया-पूताले किछु करबे ने करै छी। ऐ जिनगीसँ जहर-माहूर खाए मरब नीक। हौ बाबू, हमरा एहेन भ्रममे नै दाए। ऐ दुनियाँमे ने कियो अप्पन छी आ ने बिरान। सीता जकाँ लक्ष्मणक रेखाक भीतर रहह। नै तँ रावण औतह आ लऽ कऽ चलि जेतह। अपन-अपन पाएरपर ठाढ़ भऽ गंगोत्रीसँ निकलैत गंगाक पानि जकाँ, जे साथीक संग उपर-निच्चाँ होइत प्रशान्त महासागरमे मिलैत अछि तहिना समैक संग चलैत रहह।

देखले पक्षधर बाबाक घर-दुआर लोचनकेँ। ककरो पूछैक जरुरते किएक होइतै। साइकिल हड़हड़ौने दरबज्जापर पहुँच साइकिलसँ उतड़ि घरक देवालक पजरामे साइकिल ठाढ़ कए दुनू हाथे बाबाक पाएर छूबि गोड़ लगलकनि। बाबाकेँ बुझले रहनि, कहलखिन- ‘‘भने अखने चलि एलह। सभ सामान सरिया सेन्टरपर जा कऽ देख-सुनि अविहह।’’ कहि पोती सुकन्याकेँ सोर पाड़लखिन। मुदा लोचनो तँ अंगना-घर जाइते अबैत रहए। सुकन्याकेँ लोचन आंगनसँ बजा अनलक। भाए-वहिन जकाँ दुनूकेँ देख पक्षधर सुकन्याक कहैक बात विसरि दुनू गोटेकेँ कहलखिन- ‘‘बाउ, आब तँ हम चलचलाउ भेलियह। तोरे सबहक पार ऐ दुनियाँमे एहलहेँ। दुनियाँमे जते मनुष्य अछि ओ अपना समैक जिम्मा लऽ जीबैत अछि। अखन तूँ सभ सुकुमार कोमल किसलय सदृश्य छह। मनुष्य बनि जिनगी जीबहह। हम दुनू संगी -पक्षधर आ ज्ञानचन्द- दू जातिक रहितौ संगे-संग जिनगी बितेलौं। जे समाजोक लोक बुझै छथि। मुदा हुनको धन्यवाद दै छियनि जे संगीक महत्व अदौसँ बुझैत आएल छथि। जेकरे फल छी जाति-कुटुम्बसँ कनियो कम दोस्तीकेँ नै बुझल जाइत अछि। संगे-संग जहलो कटलौं आ एक ओछाइनपर सुतबो करै छी।

मिथिलांचलक कोनो राजनीतिक आकि सामाजिक संगठनक बात होइ मुदा कि ऐ संस्कृतिकेँ आँखिक सोझमे नष्ट होइत देखिऐक।''

मन पड़लनि गाड़ीक ओ दिन जै दिन जहल जाइत काल दुनू गोटेकेँ पैखाना लागल आ हाथमे हथकड़ी। ट्रेनक पैखाना-कोठरीमे पानि नै। की कएल जाए? जेबीसँ रुमाल निकालि दू टुकड़ी फाड़ि दुनू गोटे शुद्ध भेलौं। आँखि ढबढ़बा गेलनि। भरल आँखिसँ पोतीकेँ कहलखिन- ''बुच्ची, दरबज्जापर रहने बौआकेँ पढ़ि नै हेतै। एक तँ पढ़बह कि खाक। बहुत लीलसा छल जे परिवारमे इंजीनियर डॉक्टर देखिऐक मुदा हमरा सन-सन परिवारक लेल सपना नै तँ आरो की अछि। एक दिस पनरह-बीस लाखक पढ़ाइ आ दोसर दुइयो हजार महिनाक आमदनीक परिवार नै। मुदा अखन बच्चा छह, आशासँ जीबैक उत्साह मनमे जगबैक छह।''

जहिना जनक जीक फुलवारीमे राम आ सीताक प्रथम मिलन भेलनि तहिना सुकन्या आ लोचनक बदलल रुपक बीच भेल। अखन धरि जे बच्चा खेलौना सदृश्य परिवारमे छल ओकरा कानमे एकाएक जिनगीक बात पड़लै। जिनगीक लेल प्रेम भरल संगीक जरुरत होइत अछि। जिनगीक बात सुनि दुनूक देह सिहरि गेलै। सिहरैत देह देख पक्षधर कहलखिन- ''बुच्ची, लोचन तोहर पाहुन भेलखुन। अंगनेक ओसारक कोठरी दऽ दहुन। सभ देखभाल तोरे उपर। कोनो तरहक असुविधा पढ़ैमे नै होइन।''

पक्षधरक बात सुनि सुकन्या शुटकेस माथपर उठा लोचनक पाछू-पाछू विदा भेल। कोठरी खुजले रहै अँटकैक कतौ जरुरते नै पड़लैक। एक जनिया चौकी, कपड़ाक लेल अलगनी, एकटा टेबुल आ एकटा कुरसी। कुरसीपर शुटकेश खोलि लोचन कपड़ा निकालि चौकीपर रखलक। चौकीपर रखिते सुकन्या ओइ अलगनीपर रखलक जहिपर पहिनेसँ ओकर कपड़ा छलैक। साओनक झूला जकाँ दुनूक कपड़ा झुलए लगल। किताब, काँपी, कलम निकालि टेबुलपर रखलक। एक्के कोर्सक पोथी दुनूक। लोचन मैट्रिकक सेनटप केंडीडेट आ सुकन्या मैट्रिकक विद्यार्थी। टेबुलक बगलमे लोचन लग ठाढ़ भऽ सुकन्या पोथी फुटा कऽ नै रखि, सभकेँ जोड़ा लगा-लगा रखलक। दुनूक नजरि दुनू किताब-काँपी-पेनक जोड़ापर अँटकि गेल। पहिनेसँ दोबर पोथीक

थाक भऽ गेल। अएना जकाँ एक दोसरक हृदेमे अपन-अपन रुप देखए लगल। पोथीक लिखावट प्रेसक होइत। तहूमे एक्के प्रेसक पोथी। मुदा काँपी तँ अपन-अपन हाथक लिखल होइत। एक दोसराक काँपी उलटा-उलटा देखए लगल। देवनागरी लिखावट लोचनक सुन्दर मुदा अंग्रेजी लिखावट सुकन्याक सुन्दर। एना कियए भेल? एक्के हाथक लिखावट दब-तेज केना भऽ गेल। मुदा उत्तर ककरो मनमे नै अबैत। अनायास सुकन्याक मन नाँचल। एते काल भऽ गेल अखन धरि पानियो नै अनलौं। धड़फड़ा कऽ कोठरीसँ निकलि छिपलीमे जलखै आ लोटामे पानि नेने आबि चौकीपर छिपली रखि हाथ शुद्ध करैले लोटा बढ़ा, चौकीक गोड़थारी दिस पलथा मारि बाबाक पाहुनकँ खुआवए बैस गेली। खेबाकाल पुरुख चुप रहैत, नोन-अनोनक प्रश्न कियए उठतै। समदर्शी मिथिला छिऐ कि ने?

एक बजेसँ लऽ कऽ चारि बजे धरि परीक्षाक कार्यक्रम रहए। पहिल दिन लोचनो दुर्ग टपैले जाएत तँए सुकन्याक मन मृगा जकाँ नचैत। भिनसरेसँ सुकन्या लोचनपर नजरि अटकौने.......। समैपर अपन काज पुरबैक अछि हमरा चलैत जँ शुभ काजमे बाधा होएत तँ भगवानक ऐठाम दोखी हएब। मास्टर साहेबक सिखाओल बात सुकन्याकँ मन पड़ल। काजक भार तँ लोचनक उपरमे छन्हि हम तँ हुनकर मदतिगार मात्र छियनि। तँए नीक हएत जे हुनकेसँ पूछि लिअनि। चंचल मनमे उठलै-पूजाक तैयारीमे सभ किछु फुलडालीमे सजबैत होएत बीचमे बाधा देब उचित नै। हो न हो फूल-पत्तीक जगहे बदैल जाइन। अनायास मनमे उठल- हाय रे बा घड़ी तँ देखबे ने केलौं। अगर बारह बजि गेल हेतै तँ खुअबैक दोखी के हएत? मन व्याकुल, अव्यवस्थित वस्त्र, केश छिड़िआएल, कर्मक भारसँ भादबक अन्हरिया जकाँ अन्हार आँखिक आगू सुकन्याकँ पसरि गेल। कतऽ जाउ ककरा पुछिऐ। गाछो-बिरीछ नै अछि जे पुछि लैतिऐ। अस्त-व्यस्त अवस्थामे सुकन्या माए लग पहुँच बाजलि- ‘‘भानस भेलौ?’’

‘‘अखने। अखन तँ आठो नै बाजल हएत।’’

‘‘जलखै भेलौ?’’

‘‘बच्चा कहलक एक्के बेर खा कऽ सबेरे जाएब।’’

जहिना केचुआ छोड़ैत समए साँपकेँ होइत, भले ही नव जीवन किएक ने प्राप्त करत मुदा दर्द तँ हेबे करैत छै। मीरा जकाँ सुकन्या राजस्थानक तँ नै। मिथिलाक वाला। परिवार आ समाजक सुकन्या अदौसँ समर्पित। बम्बईक धुन -गीतक धुन- बहुत मधुर होइत अछि तँ समबेत स्वरमे माए-वहिनक चैताबर, बारहमासा आ समदाउनक तँ मधु सदृश्य अछि जहिना मधुमाछी उड़ि-उड़ि कखनो आमक गाछपर चढ़ि सोझे अपन प्रेमी मंजर लग पहुँच जाइत तँ लगले माटिपर ओँघराएल चमेलीक रसकेँ आमक रसमे महा मिश्रणक घोल बनबैत, तहिना ने छी।

कोठरीसँ निकलिते लोचनक आँखि सुकन्यापर पड़ल। हजारो रश्मि रुपी तीर दुनूक बीच टकराए लगल। मुदा दू रंग। जहिना लड़ाइक मैदानमे वीर असीम विसवासक संग मरैले नै बलिदान लए बढ़ैत अछि, तहिना लोचनोक हृदेमे होइत। कलीक खिलैत फूल जकाँ मुँह। मुदा सुकन्या मने-मन भगवानसँ आराधना करैत जे "कुरुक्षेत्रसँ लोचन हँसैत आबए।"
उचंगल मन फेर उचडि गेल। ओसारसँ निच्चाँ उतड़ितहि सुकन्याक हृदए लोचनकेँ पाछूसँ ठेलए लगल। जहिना बच्चा सभ माटिक पहिया, कड़चीक गाड़ी बना धनखेतीक माटि उघि-उघि अंगनाक ओलतीमे दऽ खुशी होइत जे अंगना चिक्कन बनत, तहिना आगू-बढ़ैत लोचनकेँ देख सुकन्याकेँ खुशी होएत। मुदा खुशी अंटकल नै। लगले चारि बाजि गेल। मनमे उठलै भुखल भायकेँ जलखै कहाँ खुएलौं। जहिना किसानक खेत दहा गेलासँ व्यापारमे मंदी आबि गेलासँ, बेरोजगार भेलासँ कि भीखमंगोकेँ कियो भीख देनिहार नै रहैत तहिना जे धरती करोड़ो पतिब्रता नारी पैदा केलक वहए धरती पतिहत्यारा भऽ जहल कटबैत अछि।
साढ़े चारि बजे बेर-बेर देखलोपरान्त सुकन्याक नजरि मौकनी हाथीपर चढ़ल गणेश जी जकाँ लोचनकेँ अबैत देख लोटामे पानि-थारीमे जलखै परोसि आंगनक ओलतीमे ठाढ़ भऽ देखए लगल। अखन धरिक लोचनक साइयो मनोहर रुप मनमे नाचए लगलै। कोठरी आबि लोचन गरमाएल देहक कपड़ा

बदैल जलखै करए लगल। विस्मित भेल सुकन्याक मुँह बाजि उठल- ‘‘केहन परीछा भेल भाय?’’
‘‘बहुत बढ़ियाँ। जरुर पास करब।’’
जरुर पास सुनि सुकन्याक हृदए हनुमानक राम जकाँ देखलक। मनमे आशाक सिहकी उठलैक। संगिये तँ जिनगीक जीत दिअबैत अछि। अपन सुखद जिनगीक मनोहर रुप लोचनमे देख सुकन्या मोहित होइत बाजलि- ‘‘औझुका पेपर तँ नीक भेल मुदा आन दिनक जँ अधला हुअए, तहन?’’
‘‘ओ ओइ दिनक मेहनतपर निर्भर अछि। एकर जबाव हँ-नैमे नै देल जा सकैत अछि।’’

आइ सातम दिन परीक्षाक अंत भेल। स्कूलसँ आबि पक्षधरकँ गोड़ लागि लोचन बाजल- ‘‘बाबा परीछा समाप्त भऽ गेल। गाम जाइ छी।’’
असिरवाद दइसँ पहिनहि बाबाक मनमे उठलनि, जहन ऐठाम काज सम्पन्न भऽ गेलैक तहन रोकब उचित नै। सबेर-अबेर भेनौं अपन घर तँ पहुँच जाएत। बात बदलैत बाबा पुछलखिन- ‘‘केहन परीछा भेलह?’’
मुस्की दैत लोचन बाजल- ‘‘पास करब बाबा।’’
लोचनक मुस्की पक्षधरक हृदेकँ, सलाइक काठी जकाँ, आनन्दक कोठरीकँ रगड़ि देलकनि। मन पड़लनि जनकपुरक धनुष यज्ञ। ठहाका मारि कहलखिन- ‘‘भाग्य ककरो लिखल नै होइ छै, बनाओल जाइ छै बौआ।’’
आंगनक ओलती लग ठाढ़ सुकन्याक मन मृगा जकाँ व्याकुल भऽ नचैत। जहिना अपने नाभिक सुगंधसँ मृगा नचैत तहिना सुकन्याक मन परीक्षाक समाचार सुनैले नचैत। मुदा दरबज्जो तँ दोसराक नहिये छी, सोचि आगू बढ़ल।
दुनू गोटे माने सुकन्या आ लोचनकँ देख पक्षधर बाबा कहलखिन- ‘‘आइ तोँ विद्याध्ययनसँ गृहस्ताश्रममे प्रवेश कऽ रहल छह। तँए बाबाक लगाओल फुलवारीक सुखल-मौलाइल डारिकँ कमठौन कऽ खाद-पानिसँ सेवा करिहह। ओइमे नव-नव कलश चलतै। जइसँ हँसैत-खेलाइत जिनगी चलतह।’’

मूडी गोंतने लोचन आंगन आबि पानि पीब पोथी सरियबैक विचार केलक। पोथीपर पोथी गेटल देख हाथ काँपए लगलै। सुकन्याक मन कानि उठल। जहिना कोनो धारक दुनू मोहारपर बैसल यात्रीकेँ होइत अछि तहिना सुकन्याक मनमे उठए लगल। लोचन सफलताक जिनगीमे पहुँच गेल आ हम? आशा-निराशाक क्षितिजपर लसकि गेल सुकन्या।

सीमाधरि लोचनकेँ अरिआतए सुकन्या विदा भेल। गामक सीमा बिला गेल। ने लोचन सीमा देखैत जे घुमैक आग्रह करितैक आ ने सुकन्या देखैत जे अंतिम विदाइ दइतैक। अजीब गामोक सीमा अछि। एक्को परिवारकेँ गाम मानल जाइत अछि -जेना भोजमे- तहिना दसोगाम माला बनि गाम बनि जाइत (दस गम्मा जाति) अछि। अरिआतने-अरिआतने सुकन्या लोचनक घर धरि पहुँच गेली।

पनरह दिन बीतैत-बीतैत अनेको मौगिआही कचहरीमे फैसला लिखा गेल जे 'सुकन्या पक्षधरक घरसँ निकलि अजाति भऽ गेलि।' कचहरीक फैसला सुनि-सुनि दुनू गोटेक सुकन्याक माए-बापक करेज दड़कए लगलै। कनैत मन बाजए लगलै, मनो ने अछि जे कहियासँ दुनू परिवारमे दोस्ती अछि। सभ तुर हमहूँ जाइ छी आ ओहो सभ आबि रहै छथि। मुदा आइ की देख रहल छी। जाधरि पिता जीबैत छथि ताधरि ऐ परिवारक हमसभ के? समाजक लोकक जबाव ओ देथिन। पिताकेँ गामक लोकक बात कहलखिन। बेटा-पुतोहूक बात सुनि गरजि कऽ पक्षधर कहलखिन- ''जै समाजमे मनुक्खक खरीद-बिकरी गाए-महींस, खेत-पथार जकाँ होइए कि ओइ समाजकेँ पँच तत्वक बनल मनुष्य कहल जा सकैत अछि। जँ से नै तँ हमर कियो मालिक नै छी। कियो ओंगरी देखाओत तँ ओकर ओंगरी काटि लेबै। आइये दोस्तक ऐठाम जाइ छी आ देख-सुनि अबै छी।

जहन भाँग पानिमे अलगि गेल तहन पुतोहू बुझलनि जे भाँग पीसा गेल। पोछि-पाछि सिलौटकेँ धोय बाटीमे रखलनि। दरबज्जापर बैसल पक्षधरक मनमे उठलनि जे नअ बाजि गेल, अखन धरि कियए ने कियो आएल। फेर मन

उनटि कऽ भाँगपर गेलनि। भाँगपर नजरि पहुँचते मनमे उठलनि जे बिनु भाँग पीनहि तँ ने सभ निसा गेल अछि। तहन भाँगक जरुरते की? किछु दिन पहिने धरि सभ गाममे एकदिना फगुआ होइत छलै मुदा आब तीन दिना भऽ गेल। ओना तीन रंगक पतरो आबि गेल अछि। मुदा अपना गाममे तँ एकदिने अखनो धरि होइत आएल अछि आ जाधरि जीब ताधरि होइत रहत।

कीर्तन मंडलीक संग-संग आनो-आन पक्षधर ऐठाम पहुँचलाह। अनगिनित थोपरी बजौनिहार आ अनगिनत गबैयाक समारोह। चीनीमे धोड़ल भाँग। सभसँ उमरदार रहितौ पक्षधर भाँग परसिनिहारकेँ कहलखिन- ‘‘पहिने नवतुरिया सभकेँ पिआबह। वएह सभ ने बेसी काल गेबो करतह आ नचवो करतह।’’ मुदा एक्कोटा नवतुरिया बाबाक बात नै सुनलक। सबहक यएह कहब रहै जे बाबा सभसँ श्रेष्ठ गाममे छथि, अनुभवी सेहो छथि। तँए जँ ओ गोबर खत्तेमे खसताह तैयो हम सभ नै छोड़बनि। नवतुरियाक बात सुनि पक्षधरक मनमे उठलनि अखन आंगनमे कहाँ छी दरबज्जापर छी। दस गोटेक बीच छी। तहन के छोट के पैघ केना हएत? सभ तँ ब्रह्मेक अंश छी। तहूमे एते टुकड़ी एकठाम एकत्रित छी। दू गिलास भाँग पीब पक्षधर उठि कऽ ठाढ़ होइत फगुआ शुरु केलनि- ‘‘सदा आनन्द रहे ऐ दुआरे, मोहन खेले होरी हो।’’ ढोलक, झालि, कठझालि, हरिमुनिया, मजीरा, खजुरी, डम्फा, गुमगुमाक संग सइयो जोड़ थोपड़ीक महामिश्रणक धुनक संग कोइली सन मधुर अवाजसँ लऽ कऽ टिटहीक टाँहि धरिक बोल अकासमे पसरि गेल। ओना जमीनो खाली नै रहल। इंगलिश डान्ससँ लऽ कऽ जानी धरिक नाच आ मेल-फीमेलक जोगीड़ा जोर पकड़नहि रहए। बजनियो सभ अपन-अपन बाजो बजबैत आ कुदि-कुदि नचबो करैत। गोसाँइ डूबै बेर फेर पक्षधर भाँग बनबौलनि। अपन शक्तिकेँ कमजोर होइत देख दोबरा-दोबरा सभ पीलक। उत्साहो दोबरेलै। पुरनिमाक राति। हँसैत चान। फागुन मास रहने अकासमे कतौ बादल नै। मुदा तरेगण मलिन भऽ अपन जान लऽ झखैत। किएक नै तरेगण अपना जान लऽ झखत? आखिर वसन्त-वसन्तीक समागमक दिन छी की ने।

गामक दछिनबरिया सीमापर समन जरए लगल। समनक धधड़ाकेँ पक्षधर उत्तरसँ दछिन मुँहे कुदलाह। बाबाकेँ देखते सभ एका-एकी कूदए लगल। धधड़ा मिझा गेल। मुदा जरनाक आगि चकचक करिते रहल। समदाउन गबैत सभ घरमुँहा भेलाह।

::::::::::

७ बपौती सम्पति

आसीन अन्हरिया चौठ। गोटि-पङरा खाएन-पीनि शुरु भऽ गेल। मातृनवमी-पितृपक्ष साझिये चलि रहल अछि। क्यो-क्यो बापो, दादा, परदादा नाओंसँ तँ कियो-कियो माइयो, दादी, परदादी इत्यादिक निमित्ते नति-नति खुअबैत। जल-तर्पण सेहो परीबे दिनसँ शुरु भऽ गेल। मुदा इहो गोटि पङरे। किछु गोटे ठीकयौने जे एकादशीकेँ जल-तपर्ण कऽ लेब। तहिना मातृपक्षक लेल नवमी आ पितृपक्षक लेल एकादशीकेँ न्योतहारी नति खुआ लेब। मुदा गामक किछु जातिक बीच तेसरो तरहक होइत। ओ ई होति जे बेरा-बेरी सभ सौंसे टोलकेँ एक-एक दिन कऽ खुअबैत अछि। जेकरा ढढ़क कहैत अछि किछु गोटे मातृपक्षक लेल महिलाकेँ आ पुरुष पक्षक लेल पुरुषकेँ न्योत दऽ सेहो खुअबैत अछि। पक्षक मातृपक्ष भिनौज भऽ गेल अछि। एकपक्ष मातृनवमी आ दोसर पितृपक्ष। जइसँ नवमी मातृपक्षक हिस्सा आ एकादशी पितृपक्षक हिस्सा भऽ गेल। दुनू टेंगारीकेँ घरसँ निकालि गुलटेन पच्चर लगा सिलौटपर पिजबैक विचार केलक कि तमाकुल खाइक मन भेलै। चुनौटीसँ सकरी कट तमाकुल निकालि तरहत्थीपर डाँट बीछते रहै कि पत्नी मुनिया आबि कहलक- “घरमे एक्को चुटकी नून नै अछि भनसाक बेर भऽ गेल, कखैन आनब?”

“अच्छा होउ, जाबे अहाँ सजमनि बनाएब ताबे हम दौड़ले नून नेने अबै छी। टेंगारी नेने जाउ कोठीक गोरा तरमे रखि देबै।” हाँइ-हाँइ तमाकुल चुनबए लगल। ठोरमे तमाकुल लैतै, मरचूनक दुआरे, केनादन लगलै कि थूकड़ि कऽ फेकैत दोकान दिस विदा भेल। एक तँ तमाकुल मनकेँ हौड़ि देलक दोसर काज टेंगारी पीजेनाइ पछुआइत देख आरो मन घोर भऽ गेलैक। मनमे उठलै पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एकठाम फाटब सीने दोसर ठाम मसकि जाइत तहिना परिवारोक काजक अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि जाएत। मुदा चिन्ता आगू मुँहे नै ससरि रुकि गेलै। चिन्ताकेँ अटकितहि मनमे खुशी एलै। अपनापर ग्लानि भेलै जे जै धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लैक सिहन्ता देवियो-देवताकेँ होइत छन्हि ओकरा हम माया-जाल कियए बुझै

छी। ई दुनियाँ केकरा लेल छै? ककरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत। ई दुनियाँ उपयोग करैक छी नै कि उपभोग करैक।

गुलटेनकेँ देख आमक गाछक छाँहमे बैसल भुखना कहलक- ''तमाकुल खा लाए कक्का, तखन जैहह।''

ठाढ़ भऽ गुलटेन भुखनाकेँ कहलक- ''बौआ, अगुताइल छी, जल्दी दू धूस्सा दहक आ लाबह। बेसी काल नै अँटकब।''

''एह कक्का, तोहूँ सदिखन अगुताएले रहै छह। तमाकुलो खाइक छुट्टी नै रहै छह।'' कहि भुखना चून झाड़ि चुटकीसँ तमाकुल बढ़ौलक। मुँहमे तमाकुल दैते रसगर लगलै। सुआद पाबि गुलटेन बाजल- ''बड़ टिपगर खैनी खुऔलेँ भुखन। एहेन टिपगर माल कोन दोकानक छिऔ?''

''काका की कहबह; दिन आठम एकटा समस्तीपुरक बेपारी साइकिलपर एक बोझ तमाकुल लऽ बेचए आएल रहए। रातिमे अपने ऐठीन रहल। एह काका भरि राति ओ बेपारी हिसाबे जगौनै रहल। जेहने खिस्सकर तेहने महरैया रहए। खाइसँ पहिने महराइ गौलक आ खेला बाद एक्केटा तेहन खिस्सा, रजनी-सजनीक, उठौलक जे ओरेबे ने करै। जखन डंडी-तराजू पछिम चलि गेल तखन हमहीं कहलिऐ जे आब छोड़ि दिऔ। बड़ राति भऽ गेल। तखन जा कऽ छोड़लक। भिनसर भने पोखरि-झाँखरि दिससँ आएल तँ चाह पीआ देलिऐ। दलानसँ साइकिल निकालि तमाकुल सरिअबए लगल। हमहूँ गिलास धोय चक्कापर रखि एलौं कि जेबीसँ दस टकही निकालि दिअ लगल आकि कहलिऐ- ''ई की दै छी।'' ओ कहलक हम बेपारी छी कोनो अभ्यागत नै, तँए खेनाइक पाइ दै छी। आब तोंही कहह कक्का ओकरासँ पाइ लेब उचित होइत। की हम सभ अपन बाप-दादाक बनौल प्रतिष्ठाकेँ भँसा देब? ई तँ बपौती सम्पति छी की ने एकरा केना आँखिक सोझमे मेटाइत देखब।''

थूक फेक गुलटेन कहलक- ''ऐहनो कियो बूड़िबक्की करए। पा भरि खेने हएत कि नै खेने हएत, तै लए लोक अपन खानदानक नाक कटा लेत। नीक केलह जे पाइ नै छुलह।''

अपन बड़प्पन देख मुस्की दैत भुखना बाजल- ''ऐँह कि कइहह काका, ओहो बड़ रगड़ी, कहए लगल जे से केना हएत। हम कि कोनो भुखल-दुखल छी,

आकि बेपारी छी। मुदा हमहूँ पाइ नै छुलिऐक। तखन ओ दस-बारह टा पात निकालि कऽ दैत कहलक, जहिना अहाँक अन्न खेलौं तहिना हमहूँ तमाकुल खाइये लए दै छी। सएह छी।"

आगू बढ़ैत गुलटेन- "बौआ अखैन औगताइल छी। नूनक दुआरे तीमन अनोन रहि जाएत।"

थोड़बे हटि कऽ घोघन साहुक दोकान। गुलटेनकेँ देखिते झिंगुर काका कहलखिन- "अखन धरि माथमे केश लगले देखै छिअह।"

माथ हसोथि कऽ देखैत गुलटेन बाजल- "अखन कटबै जोकर कहाँ भेलहैं। जखन कानपर केश लटकऽ लगत तखन ने कटाएब।"

"बिसरि गेलह। काल्हिये ने बाबूक बरखी छिअह। हमरो चच्चा सहाएब कँ छियनि। दुनू गोटे एक्के दिन ने मरल रहथि।"

झिंगुर काकाक बात सुनि गुलटेनकेँ धक् दऽ मन पड़ल। बाजल- "हँ, ठीके कहलौं काका। आइ ज अहाँ भेँट नै होइतौं तँ बरखी छुटिये जाइत।"

"अखनो किछु नै भेल हेन। जा कऽ कटा आबह। हमर तँ तेहन झमटगर दियाद अछि जे भोरेसँ चारि गोटे लागल अछि मुदा अखनो धरि पार नै लागल हेन।"

"अखन तँ हमहीं टा घरपर छी। दियादिक तँ सभ कियो अपन-अपन हाल-रोजगारमे चलि गेल। कियो झंझारपुर बेपारीक संग गछकटियामे तँ कियो सुखेतक चिमनीपर ईंटा बनबैए। अपने केश कटाएब, ओरियान बात करब आ कि ओकरा सभकेँ बजबै लऽ जाएब।"

"असली कर्ता तँ तोहीं ने छहक। तोहर कटाएब जरुरी छह। हमरा सभमे तँ पाँच बर्षी धरि सभ दियाद-वाद केशो कटबैट अछि आ कमसँ कम एगारह गोटेकेँ खाइयोले दैत अछि। तोरा सेहो एकटा आरो हेतह। खाऐन-पीनि माने मातृनवमी-पितृपक्ष चलिते अछि। चाचाजीकेँ तीर्थेपर वर्षी पड़ि गेलनि, तँए दोहरा कऽ खुअबैक झंझट नै रहलनि। मुदा तूँ सभ ते एकादशीकेँ खुअबै छह तँए तोरा दोहरा कऽ सेहो करए पड़तह। ओना ई सभ मन मानैक बात छी मुदा चलनियो तँ कोनो अपन महत्व रखैत अछि की ने।

झिंगुर काकाक बात सुनि दोकानदारकेँ गुलटेन कहलक- "हओ घोघन साहु, झब दए एक टकाक नून दाए।"
गमछामे नोन बान्हि गुलटेन लफड़ल घर दिस चलल। मनमे पिता नाचए लगलनि। हृदए पसीज गेलनि। स्मरण भेलनि, अनका जकाँ बाबू नै छलाह। आगू-पाछुक बात जनैत छलाह। जँ से नै जनितथि तँ किएक ने अनके जकाँ हमरो खेत-पथार कीन देने रहितथि। कोनो कि कमाइ खटाइ नै छलाह। जँ से नै छलाह तँ कातिक मासमे ओते खरचा कए कऽ भागवत केना करबै छलाह। तइपर सँ भोजो-भनडारा करिते छलाह। हमरे लए कि कम केलनि। घर-गिरहस्तीक सभ लूरि सिखा देलनि। बारहो मासक काज। हम कि कोनो नोकरी करै छी जे सालो भरि कहियो बैसारी नै होइत अछि। कमाइ छी खाइ छी ठाठसँ जिनगी बीतबै छी। जँ खेते रहैत आ खेतीक करैक लूरिये नै रहैत तँ छुछे खेते लए कऽ की होइतै। गाममे देखबे करै छी खेतबला सबहक दशा। रौदी हुअअ कि दाही अछैते खेते हाट-बजारसँ मोटा उघैत छथि। हमरा तँ एक्को धुर घरारी छोड़ि नै अछि। तँए कि ककरोसँ अधला जीबै छी। अपन खुशहाल जिनगीपर नजरि अबिते आनन्दसँ हृदए ओलड़ि गेलनि। मरहन्ना धान जकाँ लटुआएल नै अपन चढ़ल जुआनी जकाँ खेतक आड़िपर ओलड़ल। केना लोक बजैत अछि जे जकरा अ आ नै लिखल अबैत अछि ओ मुरुख अछि बाबू तँ औठे-निशान दऽ मट्टियो तेल आ चिन्नयो कोटासँ अनैत छलाह। बड़का-बड़का सर्टियोफिकेटबला सभकेँ देखैत छियनि जे दारु पीब लेताह आ बीच सड़कपर ठाढ़ भऽ अंग्रेजीमे भाषण करैत लोकक रस्ता रोकने रहै छथि। तइमे हजार गुना नीक ने बाबू छलाह। खाइ बेरमे अंगनामे नै रहै छलौं तँ शोर पाड़ि संगे खुअबै छलाह। जहिया कहियो नीक-निकुत अनै छलाह आ थारीमे अन्दाजसँ बेसी बुझि पड़ैत छलनि तँ थारीसँ निकालि माएकेँ दैत छेलखिन नै तँ ओते छोड़ि कऽ उठैत छलाह। आ हा-हा एहेन बाप होएब कि अधला छी। जखन काज करऽ जाइत छलाह तँ संगे नेने जाय छलाह आ काजक लूरि सिखबै छलाह। काजक लूरि भेल तहन ने बोइन करऽ लगलौं। केहन हुनकर सालो भरिक हिसाब छलनि। आसीन-कातिक गछपंगियाँ आ खढ़ कटिया हुनकेसँ सीखलौं। तहिना अगहन-पूस धन कटिया, नार बन्हिया, दौन

केनाइ, टाल लगौनाइ सीखने छी। कियए एक्को दिन बैसारी रहत। अखनुका छौंड़ा सभ जकाँ नै ने जे कहत काजे ने अछि। कि रस्तापर बालू उड़ाएब आकि पानि डेंगाएब। मुरूखो रहैत बाबूए ने सिखौलनि जे फागुनसँ जेठ धरि घरहटक समए होइ छै। जेकरा घरहट करैक लूरि रहत वएह ने अपनो घर आ अनको घर बन्हैमे मदति कऽ सकैत अछि जेकरा लूरिये ने रहतै ओकरा इन्दिरा आवासमे मुखिया, चिमनीबला, सिमटीबला नै ठकत तँ कि जेकरा अपन घर बनबैक लूरि रहत, ओकरा ठकत। अपनापर गुलटेनकेँ भरोस होइते मनमे खुशी उपकल। मुँहसँ हँसी निकलल। ओगरवाहीक गाछीक मचकीपर नजरि गेलै। कि हमरा सबहक दुनियाँ अछि। बड़क गाछपर सँ बड़्ड़ काटि बरहा बनबै छी। मूठबाँसीक बल्ला, पीढ़िया आ कील बना गाछक डारिमे लटका झुलबो करै छी आ गेबो करै छी। जे चौमासा, छहमासा, बारहमासा मचकीक स्टेजपर होइत अछि ओ बाजा-बूजी आ बैस कऽ गबैमे केना हएत? असकरे कृष्ण राधाक संग कदमक झूलापर चढ़ि नचबो करैत छलाह, बाँसुरियो बजबैत छलाह आ आसो लगबैत छलाह। मुदा अखन तँ देखैत छी जे बाजा कियो बजबैत, नाच कियो करैत आ गीत कियो गबैत अछि। तेहने ने देखिनिहारो छथि। कियो कैसियोबलाकेँ देखैत तँ कियो ठेकैताकेँ, कियो नचनिहारक नाच देखैत तँ कियो ओकर कानक झुमकाकेँ। गौनिहारक आबाज सुनैत, नै कि ओकर मुँह देखैत अछि।

नोनक मोटरी पत्नीकेँ दैत गुलटेन कहलक- ‘‘बाबूक बरखी काल्हिये छी। बिसरि गेल छलौं। केश कटौने अबै छी। ताबे अहाँ बरखी लए जे चाउर रखने छी ओकरा निकालि रौदमे पसारि दिऔ। राहड़ि सेहो उलबए पड़त। बेरु पहर तीमन-तरकारी आ मसल्ला हाटसँ लऽ आनब। दूध तँ आइये पौरल जाइत। ओना अमहौरपर सौझुको दूध जनमि जाएत।’’

पतिक बात सुनि मुनिया बजलीह- ‘‘ऐहेन जे अहाँ बिसराह छी, सभ काज चौबीसमा घड़ीमे सम्हरत। ने कुटुमकेँ नोत देलौं आ ने बेटी-जमाइकेँ खबरि देलिएनि।’’

‘‘अच्छा सभ हेतै। अनजान-सुनजान महाकल्याण। बाबू कोनो अधरमी रहथि जे कोनो बाधा हएत। उगलाहा सभ देखबो करै छथि आ पारो लगौताह।’’

कहि गुलटेन केश कटबए विदा भेल। केश कटा बरखीक जानकारी आ सबजना न्योत दऽ चोटे घुरि गेल।
काजमे गुलटेन जेहने होशगर माने लुरिगर तेहने बिसराह। जे सभ बुझैत। उजड़ल गाम केना बसत। दरिद्र गाम केना सुभ्यस्त बनत, ऐ कलाक प्रदर्शन गुलटेनक काज देखबैत। अनाड़ीकेँ काजक लूरि सिखाएब, हनपटाह गाए-महींस दुहब, डरबूकसँ डरबूक गाएकेँ बहाएब माने साँढ़ लग लऽ जा पाल खुआएब, घोरनोबला आ चुट्टियाहो गाछपर चढ़ि आम तोड़ब, झोंझगर बाँसमे पत्ता तोरब, सुरुंगवा शीशो पाङब, सुआगर घर छाड़ब, सक्कत खेत जोतब, पनिगर खेतमे धान रोपब, सांङिपर ढेंग उठाएब, दुखताहकेँ खाटपर उठा डॉक्टर ऐठाम लऽ जाएब, फड़काह बच्छाकेँ पटकि नाथब, हर लागएब इत्यादि काज समाजमे ककरो कऽ दैत। केना नै करैत? एकरे तँ अपन बपौती सम्पति बुझैत अछि।

वर्षी भोजक चर्चा जनिजातिक माध्यमसँ सगरे गाम पसरि गेल। अपन दायित्व बुझि एका-एकी मरदो आ स्त्रीगणो गुलटेन ऐठाम आबए लागल। जहिना अनका ऐठाम काज भेने गुलटेनो बिनु कहनौं पहुँच जाइत तहिना समाजोक लोक आबए लगलाह। रवियापर नजरि पड़िते गुलटेन कहलक- ‘‘रबी, तोरा ऐठाम तँ जाइये लए छलौं। भने आबिये गेलह। बहुत दिन जीबह।’’
रवि- ‘‘कियए भैया? अखने फोकचाहावाली काकी अंगनामे बजलीह; तब बुझलौं।’’
‘‘ठीके बुझलहक। बिसरि गेल छलौं। दोकानपर झिंगुर काका मन पाड़ि देलनि। मुदा काज तँ कौल्हुका बदला परसू नै हएत।’’
‘‘हमरा बुते जे हेतह तइमे पाछू थोड़े हेबह।’’
‘‘चाउर-दालि तँ घरेमे अछि। तेल-मसल्ला, तरकारी हाटेपर सँ लऽ आनब मुदा पंचकेँ दुइयो कौर दही नै खुऐबनि से नीक हएत?’’
‘‘सौझका दूध अपनो रहत आ किसुनोसँ लऽ लेब। कत्ते दूध पौरबहक?’’
‘‘दू मन चाउर रान्हब। अधोमन तँ दही चाही।’’
‘‘अधा मन सँ हेतह?’’

“अपना सभमे दहिये कते परसल जाइए। गरीब लोक अन्ने बेसी खाइए। दूध-दही आ कि फल-फलहरी जे खाइयो चाहत से आनत कतऽ सँ।”

“हँ, ई तँ ठीके कहलह। हम तँ कहबह जे तरकारियो कियए हाटपर सँ अनबह। अखन तँ सबहक चारपर सजमनि कदीमा आ बाड़ीमे भट्टा अछिये तइले पाइ कियए खर्च करबह। धड़फड़मे अदौरी बनौल नै हेतह। बैगन आ अदौरी नै बनेबह से केहन हएत?”

“मन होइए जे बर-बरीक ओरियान करी।”

“तों सनकि गेलह हेन। बर-बरीक घाटि कते मेठनियाँ होइए से नै बुझै छहक।”

“हँ, से तँ ठीके कहलक।”

“अखन जाइ छिअह। दहीसे निचेन भऽ जाह। काल्हि दुपहरमे ने काज हेतह। आकि पुजौनिहारो औथुन।”

“अपना सभमे कत्ते पुजौनिहारकेँ देखै छहक। जतिया आगू कोनो पतिया लगै छै।”

भगिन-पुतोहू दालि दड़ड़ैले अबैत छलि। डेढ़ियापर अबिते गुलटेनपर नजरि पड़लनि पड़िते मुँह बीजकबैत बाजलि- “बुढ़हा अपनो मरताह आ दोसरोकेँ जान मारथिन काल्हि-परसू ई सभ काज नै होइतै।” कहि दालिक मुजेला लऽ जाँत दिस बढ़लि।

गोसांइ डुबिते भाए भजनाक संग सिंहेसरी पहुँचल। अपना माथपर अपन पहिरैबला कपड़ा आ अल्लूक मोटरी आ भजनाक माथपर चाउर-दालिक। बिनु छँटले चाउर आ गोटे दालि। आंगन पहुँच सिंहेसरी कानल नै। माए-बाप लग बेटीक कानब तँ सिनेहक होइत। मुदा सिंहेसरीक मन तखनेसँ लहकल जखने भजना बरखीक चर्चा केलक। मनमे उठै जे अपना खूटापर लधैर महींस अछि, बरखी सन काजमे जँ एक्को कराही दही नै लऽ जाएब से केहन हएत? ओसारपर मोटरी रखि माएसँ झगड़ा शुरु केलक- “ऐँइ गे बुढ़िया, हमरा कोनो आए-उपाए नै यऽ जे, काल्हि बाबाक बरखी छियनि आ आइ तूँ अबैले कहलेँ?”

तहि बीच गुलटेन सेहो हाटसँ आबि गेला। माथपर मोटरी रहबे करनि कि मुनिया बाजलि- ‘‘दाय, हमर कोन दोख अछि मासे-मास जे छाया करैत एलौं तेकर ठेकाने ने रहल। बापो तेहन विसराह छेथुन जे बिसरि गेलखुन। आइये बुझलौं।’’

माएक जबाव सुनि सिंहेसरीक तामस पिता दिस बढ़ए लगल। मुदा मुँह-झाड़ि बाजब उचित नै बुझि माएकेँ अगुअबैत बाजलि- ‘‘जाबे बाबा जीबैत छलाह ताबे कत्ते मानै छलाह। आब जखन ओ नै छथि तखन हुनकर किरिया-करम छोड़ि देबनि। एगारहो गोटेक तँ ओरियान कऽ कऽ अबितौं।’’

बेटी आ पत्नीक बात गुलटेन चुपचाप सुनैत। कखनो मनमे उठै जे गलती हमरे भेल। फेर होइ जे कोनो काज करै काल ने उनटा-पुनटा भेने गल्ती होइत अछि। मुदा हम तँ बिसरि गेल छलौं। सामंजस्य करैत गुलटेन बाजल- ‘‘पाहुन कियए ने एलखुन?’’

सिंहेसरी- ‘‘से तूँ नै बुझै छहक जे नोकरिया-चकरियाक घर छी जे ताला लगा देबै आ विदा भऽ जाएब। दुनू परानी लगल रहै छी तखन ते एक्को क्षणक छुट्टी नै होइए। ढेनुआर महींसकेँ छोड़ि कऽ दुनू गोरे केना अबितौं।’’

बेटीक बात सुनि मुनिया बाजलि- ‘‘ऐ घर ओइ घरमे कोन अन्तर अछि तोरा लिये जेहने ई तेहने उ। अहूठीन ते दहीक ओरियान भइये रहल हेन। तइले तोरा कियए मनमे दुख होइ छौ। हम तोहर माए छियौ। कोनो आइऐक छिऐ कि सभ दिनेक बिसराह छथुन। तइले तामस कियए होइ छह। मोटरी सभकेँ खोलि-खोलि चीज-बौस ओरिया कऽ राखह। पहिने पाएर धोय गोसाँइकेँ गोड़ लगहुन।’’

पत्नी आ बेटीकेँ शान्ति होइत देख गुलटेन मुस्की दैत बाजल- ‘‘गाममे जेकर काज हम केने छी ओ कि हम्मर नै करत। कते भारी काजे अछि।’’

घरक गोसाँइकेँ गोड़ लागि सिंहेसरी पिताकेँ गोड़ लगैले बढ़ल कि गुलटेनक आँखि सिमसिमा गेल। सिमसिमाएल मने पुछलक- ‘‘बुच्ची, कोनो चीजक दुख-तकलीफ ने ते होइ छह?’’

हँसैत सिंहेसरी कहलक- ‘‘बाबाक बात कान धेने छी। हाथ-पाएर लड़बै छी सुखसँ दिन कटैए।’’

भोजमे खूब जस गुलटेनकैं भेल। भरि-दिन एम्हर-दौड़ तँ ओम्हर-ताकमे दुनू परानीकैं रहल। मुनियाक छाती केराक भालरि जकाँ कपैत। बिना अन्ने-पानिक भरि दिन खटैत रहलीह। जेना भुख-पियास कतौ पड़ा गेलनि। मुदा भोजक जस दुनू परानी गुलटेनकैं, जहिना ऊसर खेतमे कुश लहलहाइत, तहिना लहलहा देलक। पिताकैं सिंहेसरी कहलक- “सभ काज सम्पन्न भऽ गेल। आब अपनो सभ खा लाए।”

खेला-पीला उपरान्त गुलटेनक मनमे, सिनेमाक रील जकाँ, नाचए लगल- ठीके ने लोक कहैत छथि जे जेहन करत से तेहन पाओत। जहिना बाबूक मन शुद्ध छलनि तहिना ने हेतनि। आ-हा-हा ओंगरी पकड़ि-पकड़ि घर बन्हैक लूरि सिखौलनि। बारहो मासक काज जीबैक लेल सिखौलनि। मने-मन पिताकैं गोड़ लगलक।

::::::::::

८ डंका

चूड़लाइ, तिलकुट आ चूड़ा-मूढ़ि गमछाक एक भागमे बान्हि दोसर भाग दहिना हाथे पकड़ि लटकौने जीवानन्द उत्तर मुँहेक रास्ता डेग झाड़ने जाइत रहए। दरबज्जाक ओसारक दछिनबरिया अखड़े चौकीपर बाँहिक सोंगरक कान्हपर माथ अड़कौने भैयाकाका रस्ते दिस देखैत रहथि कि नजरि पड़िते जीवानन्दकेँ किछु पूछए चाहलनि मुदा मन रौकए लगलनि। सोगाएल मन। मुदा जीवानन्दक आकर्षित रुप देख मन धिक्कारलकनि जे सभ दिन एकठाम बैस नीक-बेजाएक, गप-सप्प करैत एलौं आइ तँ सहजहि तिलासंक्रान्ति सन पावनि छी। तहन जँ नै टोकब तँ केहन हएत। गंभीर मन मुदा मुस्की दैत पुछलखिन- ''कतऽ एत्ते हड़बड़ाएल जाइ छह जीवानन्द?''

भैयाकाकाक टोकबकेँ अनठा आगू बढ़ि जाएब जीबानन्द उचित नै बुझि रस्तेपर ठाढ़ भऽ कहलकनि- ''की कहू काका, ऐबेरक पावनि रीब-रीबेमे रहि गेल।''

जीवानन्दक परेशानी मिलल बात सुनि भैयाकाकाक मनमे गुदगुदी लगलनि। जहिना आत्मा खूटा (रस्सी) सदृश्य ब्रह्मसँ मिलैत तहिना भैयाकाकाक मन जीवानन्दक व्यथा-कथा सुनैले सुरसुरेलनि। चौबन्नियाँ मुस्की दैत पुछलखिन- ''तिलासंक्रान्ति सन खाइ-पीबैबला पावनि तहन तोरा केना रीब-रीबेमे जा रहल छह?''

भैयाकाकाक बातमे जीवानन्द ओझरा गेल। मनमे उपकलै नीक काज भेने खुशीसँ हँसी लगैत अछि मुदा अधला काज भेने की हँसी नै लगै छै? रास्तापर ठाढ़ भेल जीवानन्दकेँ किछु फुड़बे ने करै। जहिना खेतमे हाल कम रहने अंकुड़ नै जनमैत तहिना जीवानन्दोकेँ भेल। असमंजसमे पड़ल मन सोचलकै जे भोरसँ अखन धरिक अपने बात सुना दियनि। जँ किछु कहबनि नै तँ मनमे हेतनि जे कोनो उकड़ू काज केने अछि। मुस्कुराइत कहए लगलनि- ''काका की पूछै छी, चारि बजे भोरे पोखरिक घाट परक पी-पाह सुनि निन्न टुटि गेल। उठैक विचार करिते रही आकि पत्नी आबि कऽ कहलनि जे रतुपारवाली दीदीकेँ भरिसक दर्द उपकि गेलनि। पूर मासो छियनि। भरिसक वएह कुहड़ैत छथि। सुनिते मन खुशी भऽ गेल जे खूब पावनि हएत?

मुदा अपन दियाद नै रहने असथिर भेलौं। उठि कऽ गेलौं तँ देखलिऐ जनानी सभ घेड़ने। मुदा हमरा देखते सिबावाली काकी कहलनि जे बौआ गामपर नै समहरतऽ डाकडर लग लऽ जाहक।'' डाक्टरक नाओं सुनि लगमे गेलौं तँ देखलिऐ जे गाए-महींस जकाँ देहो-टाँग छिड़ियौने आ अड़ऽ-बोऽऽऽ करैत। एको क्षण विलंब करब उचित नै बुझि खाटक ओरियान केलौं आ तमोरिया लए गेलौं। ककर मुँह देख कऽ उठलौं जे अखन धरि दू कप चाहेटा पीने छी। दतमनियो पछुआएले अछि।''

''की भेलनि?''

''बेटा।''

''बेसी तबाही ने तँ भेलह?''

''एह की कहू काका, जनिजाति तेहन भौनी होइत अछि जे एक बर हेतै आ सातबर भभटपन करत। जखन खाटपर चढ़बैत रहियनि तहन तेना ने हाथ-पाएर कठुआ लेलनि जे बुझि पड़ल दाँती लगि गेलनि। मुदा मुँहमे बोल रहबे करनि। पकड़ि-पकड़ि हाथ-पाएर सरियौलियनि। मन तेहन लहरि गेल जे हुअए दू ऍंड़ उपरोसँ लगा दियनि। मुदा फेर भेल जे अधिक दर्द भेने लोकक बुद्धियो बाइत जाए छै। हो न हो कहीं सएह भऽ गेल होइन।''

मुस्की दैत भैयाकाका- ''डॉक्टर लग ने तँ बेसी भंडठी लगलह?''

''नै। संयोग नीक रहल जे एकमुहरी काज सुढ़ियाइत गेल। साते बजे निकास भऽ गेलनि। मुदा तते ने काजक ओझरी रहए जे सम्हारैत-सम्हारैत डेढ़ बजे विदा भेलौं।''

''पवनौट कत्तए लऽ कऽ जाइ छह?''

''तीन पुस्तसँ यूनूशक परिवारसँ आवा-जाही अछि। आइ भोरे हुनकर छोटकी बेटी एक मुजेला तरकारी दऽ गेल छलाए। सभ साल दै छथि। अपने कारोवार छन्हि। ओना पावनि सभमे सेहो पवनौट दै छथि। तहिना हमहूँ दै छियनि। सएह छी। आन बेर आठे-नअ बजे दऽ अबै छलियनि। मुदा आइ तँ दोसरे भाँजमे पड़ि गेलौं।''

''हमर तिल-चाउर कखन खेवह, आकि अपने ताले-बेताल रहबह?''

“की कहूँ काका मरैयोक पलखति नइए। निचेन भऽ कऽ आएब। अखन ओहो बच्चा सभ बाट तकैत हएत। सभ भोरे नहाएल आ हम दतमनियो नै केलौंहें।”

“अच्छा जाह। बाट तकबह?” -भैयाकाका कहि चुप भऽ गेला।

“तेहन माया-जालक झमेल अछि जे विचारकेँ घुसका-फुसका दैत अछि। जइसँ समैक झूठा बनि जाइ छी। काजक अपन गति छै। समैक गतिसँ मिल कऽ चलैले ओकरा केना छोड़ब?” कहि आगू बढ़ल रस्तेपर जीवानन्दकेँ यूनूशक कोरैला बेटा आ छोटकी बेटी देखलक। देखते दुनू दुआरपर सँ आंगन जाए माएकेँ कहलक- “जीवानन्द कक्का अबै छथिन। बड़ीटा मोटरी हाथमे छन्हि।” हाटक कोबी सरियौनाइ छोड़ि माए (यूनूशक पत्नी) अंगनाक मुँहथरिपर आबि, देखलनि। तै बीच भाए-वहिनकेँ कहलक- “बड़का लाइ हम लेबौ।”

बेटाक बात सुनि माए किछु बाजलि नै। मुस्किया कऽ रहि गेल। जीवानन्दकेँ पहुँचते माए बेटीकेँ कहलक- “कक्का एलखुन, प्लाष्टिक वला ओछाइन बइसै लए ओछा दहुन।”

हाथक गमछा दैत जीवानन्द कहलक- “नै दाइ, अखैन नै बैसब। झब दए गमछा अजबारि कऽ लाबह।”

जीवानन्दकेँ गेलोपर भैयाकाकाक नजरि जीवानन्देक बात ‘मरैयोक पलखति नै अछि’ पर नचैत। पावनियो रहने दतमनि करैक पलखति जेकरा नै छै, ओकरा लेल पावनिये की? मन आगू बढ़लनि ई दुनियाँ विचित्र रंगमंच छी। जेहने कलाकार तेहने ई रंगमंच। सुपात्रक लेल जँ इन्द्रासन सदृश्य अछि तँ कुपात्रक लेल गंध करैत नर्क जकाँ सेहो अछि। वीरक लेल वीरभूमि, तपस्वीक लेल तपोभूमि, साधकक लेल साधना भूमि तँ चोर-डकैतक लेल सोनाक चिड़ै। मधु चढ़ौनिहारक लेल मधुशाला तँ इज्जतखोर लेल बेश्यालय सेहो छी। पार्ट खेलेनिहार सेहो अजीब अछि। कतौ पुरुख महिला बनि कलाप्रदर्शित करैत अछि तँ कतौ महिला पुरुष बनि सेहो करैत अछि। मुदा तँए कि पुरुख पुरुख बनि आ महिला महिला बनि अपन पार्ट अदा नै करै छथि। जरुर करै छथि। मन आगू बढ़ि रामायण दिस बढ़लनि। हँसी

लगलनि। जे मार्यादा पुरुषोत्तम राम दसमुँहा रावणकेँ मारलनि (नाश केलनि) वएह वन जेबा काल कौशल्याक संबंधमे की केलनि। माएक सेवा बेटाक धर्म नै थिक? पितासँ कम माए होइत? मन ओझराए लगलनि। मुदा कने घुसुकि कृष्ण दिस चलि गेलनि। कृष्णपर जाइते हँसी लगलनि। ठोर पटपटेलनि जे नान्हि-नान्हिटा छौड़ा बड़का-बड़का जहलक छहर देवाली तोड़ि बहरा जाइत अछि मुदा जे सम्पूर्ण ब्रह्माण्डकेँ नचौनिहार छथि हुनका बुते उखरिक बनहन (ऊखल बन्धन) नै टुटलनि। भैयाकाकाकेँ छगुन्तासँ नजरि निच्चाँ भेलनि मुदा लगले बदैल गेलनि। नजरि बदैलते जोरसँ हँसी लगलनि। मनमे एलनि शिवजी। हद केलनि ओहो शिवसँ शिवानियो बनैमे देरी नै लगलनि।

फेर घुरि कऽ भैयाकाकाक मन जीवानन्देपर चलि एलनि। जाधरि जीवानन्द सन-सन बेटा समाजमे नै जन्म लेत ताधरि समाजक उन्नति कागजपर बनाओल फूल-फलक गाछ सदृश्य होएत। जै समाजक लोक पावनिक पाछू पनरह-पनरह दिन पहिनेसँ लगल रहैत अछि। तहूमे एकटा नै कतेको पावनि सालक भीतर अछि, खर्चाक बाट तँ चौड़गर देखै छिऐ मुदा आमदनीक बाटपर नजरिये नै जाइत छै। कियो चारि बजे भोरे स्नान कऽ लाइ-मूढ़ी खेलक तँ कियो चारि बजे बेर झुकैत तदमनि करत। की चारि बजे भोरक सूर्य चारि बजे अपराहनोमे रहै छथि। सूर्य तँ महाविशाल छथि। तहन मौसम किएक बदलैत अछि? कि तै सदृश्य मनुष्यक नै अछि।

रस्ते कातक बँसबीटीमे दतमनि तोड़ि रस्तेसँ दतमैन करैत जीवानन्द आंगन आबि बाल्टीन-लोटा लाए सोझे कलपर पहुँचल। हाँइ-हाँह कुडुड़ कऽ अधे-छिधे नहा आंगन आबि पीढ़ीपर बैस पत्नीकेँ कहलकनि- ‘‘पहिने लाइ-मुरही आ तिलवा नेने आउ?’’

‘‘आब कलौ खाएब कि भुज्जा-भरड़ी खाएब।’’ पत्नी सुधा कहलकनि।

‘‘हद करै छी अहूँ भोरुका स्नान अखन केलौं आ खाइ बेरमे साँझ पड़ि गेल। सभ सखी सासुर गेल हमरा लेखे चैत पड़ि गेल। ठीके लोक कहै छै। भिनसरसँ बारह बजे धरि लोक जलखैक बेर बुझैत अछि आ बारह बजेसँ पहिल साँझ धरि कलौक समए। जै समैक काज पछुआ गेल पहिने ओकरा ने पुराएब। जँ से नै करब तँ दुनियाँक संग केना चलि सकब।’’

जीवानन्दक बात सुनि पत्नी -सुधा- भरि थारी चूड़ा-मुरही लाइक संग-संग तरुओ तरकारी घरसँ आनि आगूमे रखि ठाढ़ भऽ गेलि। भरल थारी देख मुस्कुराइत जीवानन्द बाजल- ''एते कियए अनलौं। बिधे पुरबैक अछि। जहिना नै पान तँ पानक डंटियोसँ काज चलैत अछि तहिना लाइ मुरहीक बिधे पुराएब। मुदा खिच्चैड़ो तँ लैये भऽ गेल हएत?''

पतिक बात कटैत सुधा बाजलि- ''नै जखैन अबैक चाल-चूल पेलौं तखन खिचड़ी बनेलौं। धीपले अछि।''

''तखन तरुआ कियए पानि भेल अछि।''

''तरकारी आ तरुआ सबेरे बनेलौं। तँए सराए गेल अछि।''

दू- तीन फँका फकिते जीवानन्दकँ तरास जोर केलक। गिलास भरि पानि पीब निच्चाँमे रखिते सुधा बाजलि- ''तिलासंक्रान्तिमे सभ अपन-अपन वहिन ऐठाम पवनौट लऽ कऽ जाइए अहाँ छोड़ि देबै?''

पत्नीक बात सुनि जीवानन्दक मन थारीसँ हटि वहिनपर पहुँच गेल। सासुर बसैसँ पहिलुका वहिनपर नजरि पड़िते गठुलाक टाटपर सँ केना तिलकोरक पात तोड़ि आनि माएकँ तरै लए दैत छलि। जहन भानस करै जोकर भेल तहन कत्ते सिनेहसँ तरुआ तरि खुअबैत छलि। उझुक मारि-मारि पत्नीक बात मनमे उठैत। सोचए लगल, जँ एक्के दिन अपनो बेटाक वियाह आ सादूओक बेटाकँ वियाह होय, तहन की करक चाही। विचारमे अबिते अपना दिस तकलक। पावनिक दिन छी, बेर झुकि गेल मुदा नहायोक छुट्टी नै भेल छलए। अखनो धरि चैन नै भेलौं। भैयाकाकाक तिल-चाउर पछुआएले छन्हि। की हमरा हिस्सामे पैघ लोक लग बैस एक्को घंटा बुझै-सुझैक लेल नै अछि? सदिखन काजक टिकटिकिया कपारपर चढ़ले रहैए। मन घुमि कऽ भरदुतियापर पहुँचल। ठाँउ कऽ अरिपन बना पीढ़ी धोय केहन आसन बनबैत अछि। तइपर बैस जोड़ल दुनू हाथ धोय सिन्नुर पिठार लगा फुल-पान रखि आराधना करैत अछि। की ओइ वहिनकँ विसरि जाएब? कथमपि नै। मुदा वहिनो कि हमरासँ अधला जिनगी जीबैत अछि। सभ तरहे ओ नीक अछि। भागिन कओलेजमे पढ़ैत अछि। केहन ठाठसँ भगिनियोक वियाह केलक। अपन सभ लूरि सिखा माए अपने जकाँ बना देने छै। कोनो चीजक कमी

छै। ओ कि हमरे पवनौटक भरोसे हएत। मनमे खुशी एलै। मुस्की दैत बाजल- ''आइ तँ सभ ठाम पावनि छीहे। कोनो कि दुइर होइबला वौस अछि। काल्हि भोरे गेलासँ एते तँ हएत जे सबहक एकदिना तरुआ हमरा दू दिना हएत।'' कहि हाँइ-हाँइ खा कऽ जीवानन्द भैयाकाका ऐठाम विदा भेल।

अखन धरि भैयाकाका आँखि बन्न कऽ चौकीपर विचारमे डूबले रहथि कि फड़िक्केसँ जीवानन्द कहलकनि- ''गोड़ लगै छी काका। तिल-चाउर खाइले एलौंहेँ।''

जीवानन्दक बोली सुनि भैयाकाका आँखि खोलि असिदवाद दैत कहलखिन- ''बहुत दिन जीवह जीवानन्द। हम तँ लटकि गेलियह। देहसँ कम्मो लटकलौं मुदा मनसँ बेसी लटकि गेलौं। बुझि पड़ैए जे लहास ढोइ छी। अनेरे अनकर हिस्सा अन्न-पानि दुरि करै छी। मुदा तरे-तर गणेशजी जकाँ पेट फुलल जाइए। भने तूँ आबिये गेलह। होइए जे टन दे प्राण तियागि दी मुदा पेटक जे अँकुरी सभ अछि ओ जाधरि नै निकलत ताधरि प्राणो केना छोड़त?''

हँसैत जीवानन्द कहलकनि- ''अँकुरी तँ लोक छठिमे घाटपर खाइत अछि अहाँ आइयो खुआएब तँ खुआ दिअ।''

भैयाकाका- ''जहिना जनमौटी बच्चाक मल मृत्युकाल निकलैत अछि तहिना छोटका बाबाक खुऔल अंकुरी तोरा दए दैत छिअह। अपन गामक चारिम बसान छी। शुरुमे दू परिवार धारक मुँह बदलने आबि कऽ बसल। खेती शुरु भेल। जानवरक उपद्रवक संग-संग मनुक्खोक उपद्रव शुरु भेल। अपन रक्षाक लेल उपजौनिहार तैयार भेल। मुदा सोलहन्नी रक्छा तैयो नै भऽ सकल। पानिक सुविधा दुआरे गाम धुधुआ कऽ बढ़ल। जानवरो आ मनुक्खोक उपद्रवसँ बचैक लेल बलक जरुरत भेल। गाम-गाममे अखड़ाहा बनए लगल। लोक कुश्ती लड़ि अपन शक्तिक परिचए दिअ लगल रहए। गामे-गाम डंको हुअए लगल रहए। तहियेसँ अपना गाममे तिलासंक्रान्तिक दिन अपनो गाममे डंका शुरु भेल।''

भैयाकाका बजिते रहथि कि जीवानन्दक मुँह बाजि उठल- ''कक्का अपन बात कने रोकि कऽ राखू। हम बिसरि जाएब।''

मुस्की दैत भैयाकाका- ''बाजह?''

जीवानन्द- ''पावनिक दिन रहने मन छनगल रहए। तमोरिया (डॉक्टर एठाम) मे इलाज शुरु होइते भौजी (रतुपारवाली) कैँ खलास भऽ किछु सूढ़िआएल देख ड्योढ़वाली काकीकैँ गाम पठा देलिएनि। मन खुशी रहबे करनि। होइन जे के पहिने भेँट हएत जेकरा सोझामे पेटक गुदगुदी बोकरि दियनि। संयोगो नीक रहलनि। मदनावालीकैँ अंगनासँ मुड़िआरी दैत देखलखिन। छुतका (अशौच) दुआरे हाँइ-हाँइ अंगनेक चुल्हिपर लोहियामे तरकारी तरैत छलीह। सोझामे देख ड्योढ़वाली काकी ससरि कऽ आंगन बढ़ली! नजरि पड़िते मदनावाली भौजी आग्रह करैत कहलकनि- ''एत्तै आबथु काकी। बिना पाएर-हाथ धोनहि चुल्हिक पाछूमे बैस गेलीह। तीनसल्ला अड़ुआक तरुआ बढ़बैत कहलकनि- काकी कने नोन देख लेथुन।''

दुनू गोटे चुल्हिये लग बैस खाए लगली।

जीवानन्दक बात सुनि ठहाका दैत भैयाकाका कहए लगलखिन- ''अच्छा, तोहर बात भऽ गेलह। आगूक सुनह। केवल अपने गामटा मे डंका नै, आनो-आनो गाममे होइत छलए। तीन बजे भोरेसँ ढोलिया गाछपर चढ़ि वा बड़की पोखरिक मोहारपर सँ ढोल बजवए लगैत। बेरुका समए डंका होइत छलए। किछु दिनक पछाति रुपैयाक प्रवेश भेने डंका दंगलमे बदैल गेल।''

विचहिमे जीवानन्द- ''दू साल पहिने तक तँ होइत छलैए।''

जीवानन्दक बात सुनि कनेकाल गुम्म रहि कहए लगलखिन- ''जाधरि मालिक (जमीन्दार) कैँ मालगुजारिये धरि होय ताधरि गाम शान्त छलए। मुदा जखैन मालगुजारी तरे लोकक खेत निलाम हुअए लगल तहन ओ पाएर पसारए लगल। महाजनी सेहो करए लगल। छपरिया सिपाहीक आगमन गाममे भेल। पहिने तँ ओ कचहरियेक हातामे माने कम्पाउण्डमे अखड़ाहा खुनि लड़ै मुदा किछु दिनक पछाति गामक डंका अपना अखड़ाहापर लए गेल। साले-साल डंका करबए लगल। एकाएकी परोट्टाक खलीफा पीठ देखबए लगल। अपन इज्जत बचा हम मकरक रविकैँ डंका करबैत रहलौं। मुदा ओ सभ (छपरिया) डंकामे बलउमकी करए लगल। साले-साल झंझट हुअए लगल।''

भैयाकाकाक बात सुनि जीवानन्दक आँखि भरि गेलै। जीवानन्दक भरल आँखि देख बजलाह- ''जाधरि छोटका बाबा छलाह ताधरि कोनो गम नै छलए। ओना

समयो करबट लेलक। समैकेँ दहिन होइते शक्ति बढ़ए लगल। तिला-संक्रान्तिसँ अढ़ाइ मास पहिने मन बेकाबू भऽ गेल। पुरने अखड़ाहाकेँ छील-छालि खुनलौं। लपटनिहार सभ संग दिअ लगल। मालिकक खलीफाकेँ माटि पठा कहलिऐ जे जँ एक माएक दूध पीने हुअए तँ कचहरीक हात्तासँ बाहर आबि जतए तोरा फड़ियबैक हुअ, फड़िया लएह। देशक हवा देख बुझि पड़ल जे सभ जागल अछि केवल हमहींटा मुरदा भेल छी।''

जीवानन्द- ''तहन की भेल?''

भैयाकाका- ''ओहो (छपरिया) लक्ष्मण रेखा (सरकारी हाता) छोड़ि बाहर अबैक मानि लेलक। डंका भेल मुदा बाह रे संतोष ढोलिया। ओइ दिनक ओकरो हाथकेँ (बजबैक) धन्यवाद दी जे जहिना कुरुक्षेत्रमे कृष्णक शंखक आवाज रहनि तइमे मिसियो भरि कम ढोलक अवाज नै रहए। कहए लेल तँ अधिक गामक देखिनिहार (कुश्ती देखिनिहार) रहथि मुदा संख्या कम रहए। तहूमे ओहन देखिनिहार बेसी रहै जे ओइ खलीफाक (छपरिया) पीठि ठोकैत। मुदा नजरि पड़िते देख लेलिऐक जे मुँहक ठोर कारी सियाह छै। मनमे एहेन उत्साह उठि गेल, जहिना आगिमे घीउ देलासँ उठैत, तहिना। लंगोटो नै पहीरए लगलौं, धोतियेक ढट्ठाकेँ बरहा जकाँ वाँटि कसि कऽ बान्हि लेलौं। इम्हर ढोलपर संतोष अवाज दिअ लगल- चट-धा, गिड़-धा, चट्-धा गिर-धा।''

''आवाज सुनि कूदि कऽ अखड़ाहापर गेलौं। मनमे उठल जे अनेरे हाथ की मिलाएब। बाँहि पकड़ि लेलौं।''

ढोलिया हाथ बदललक। ढाक्-ढिना, ढाक-ढिना, ढाक-ढिना बजबए लगल। ढोलक अवाज तँ दहिन रहै मुदा देखिनिहारक अवाज वाम भऽ गेल। फेर ढोलिया हाथ बदैल- ''चट्-गिड़-धा, चट-गिड़ धा, चट-गिर धा'' बजवए लगल। हमरो साहस बढ़ल। भय मनसँ निकलि गेल। मुदा माटिपर चलि गेलौं। माटिपर जाइते ढोलिया (संतोष) हाथ बदललक। मेही अवाजमे- ''धाक्-धिना, तिरकट-तिना। धाक्-धिना, तिरकट-तिना।'' माटि परक दाँवसँ उपर भेलौं। उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलौं। देखिनिहारक आँखि सेहो बदलल। उपर होइते ढोलिया मोट अवाज आ भौड़ी अवाजमे बजबए लगल- ''चटाक-चट-धा, चटाक-चट-धा।'' अवाजेक संग ओकरा उठा कऽ पटकि देलिऐ।

मुदा पीठ गरे खसल। माटिपर खसिते ताल बदललक। बजबए लगल- ‘‘धिक-धिना, धिक-धिना।’’

अवाज सुनि धाँइ दऽ चित केलौं। चीत करिते ढोलसँ अवाज निकलए लगल- ‘‘धा-गिड़-गिड़, धा-गिड़-गिड़।

भैयाकाकाक बात सुनि जीवानन्द कहलकनि- ‘‘अहाँ एहेन चैनक समुद्रमे पहुँच गेल छी जे मगन भऽ जीबैत हएब?’’

मगन सुनि भैयाकाकाक हृदए, बाढ़िसँ उमड़ल गंगा जकाँ जे अपन घर (नदी) छोड़ि गाछी-विरछी, खेत-पथार पहुँच पवित्र (गंदा साफ) करए लगैत, तहिना भऽ गेलनि। विह्वल भऽ कहए लगलखिन- ‘‘बौआ तोरा देख हृदए शान्तसँ प्रशान्त भऽ जाइत अछि आब तँ तोरे सबपर छहरो-महर हएत आ दारो-मदार अछि। मुदा हवाक गंदगी तेना ने विहारिमे पसरि गेल जे एक्को क्षण जीबैक मन नै होइत अछि। लीला सभ जे देखै छी तँ शूल जकाँ सदिखन हृदेकँ बेधैत रहैत अछि। आजुक पीढ़ी जीवनक रास्तासँ एते दूर हटि रहल अछि जे मनुष्यक औरुदा (सए बर्ख) सँ घटि कुत्ताक औरुदा (बारह बर्ख) मे बदलल जा रहल अछि। दुख एतबे नै होइत अछि जे औरुदे टा घटि रहल छै, मनुष्यक वृतियो टुटि-टुटि ओम्हरे जा रहल अछि। जै रुपक व्यवहार भऽ रहल छै ओइ सभसँ आगम बुझि पड़ैत अछि जे माए-बाप, भाए-वहिन सबहक संवंध आ शिष्टाचार ऐ रुपे नष्ट भऽ रहल अछि जे साधना भूमिकँ मरुभूमि बनब अनिवार्य छै।’’

::::::::::

१ संगी

बालिग-नवालिकक सीमापर पहुँचल सुशील सत्तरह बर्ख सात मास पाड़ कए चुकल। पाँच मासक उपरान्त बालिक भऽ जाएत। शुक्र दिन रहने चारि क्लासक आशासँ समैपर कओलेज विदा भेल। संयोगो नीक, कओलेजक कम्पाउण्डमे पहुँचते घंटी बजल। वर्गमे बैसल बहुतो संगीक बीच सुशीलो। पहिल घंटी फोंक गेल। दोसरो-तेसरो-चारिमो तहिना। एक्को घंटी पढ़ाइ नै देख कियो खुशीसँ समए बितबैत तँ कियो बन्द कोठरीमे जेठक दुपहरिया बिनु पंखे बितबैत रहए। ओइमे सँ एक सुशीलो रहए।

कनैत मने सुशील क्लासक कोठरीसँ निकलि डेरा दिस विदा भेल। मनमे एलै- कि हमरा सबहक जिनगी, पोखरिक पानि जकाँ चारु भरसँ घेराएल अछि वा पहाड़सँ निकलैत नदी जकाँ समुद्र दिस बढ़ैत अछि।

डेरा एलाक उपरान्तो सुशीलक मनमे बेचैनी बढ़िते गेल। उन्मत् सुशील किताब-काँपी रैकपर फेकैत बिनु देहक कपड़ा आ पाएरक चप्पल खोलनहि चौकीपर ओंघरा गेल। जेना मन काबूएमे ने होइ तहिना बेसुधि। पहिल घंटीक पढ़ाइ कियए ने भेल? नजरि दौड़ौलक तँ देखलक जे ओइ विषयक तँ शिक्षके नै छथि तँ पढ़ैबतथि के? मनमे हँसी उपकलै। मुदा फेर मन घुमल। बिनु शिक्षकक शिक्षण संस्था केना चलि सकैत अछि। कि एकरा प्राइबेट संस्थाक बाट खोलब नै कहबैक? कि सार्वजनिक शिक्षण संस्था बाघक खाल ओढ़ल संस्था ने तँ छी। मन घुसुकि दोसर घंटीक विषयपर पहुँचल। एगारह सए विद्यार्थीक बीच एकटा प्रोफेसर छथि। तहूमे जहियासँ इन्चार्य भेलाह तहियासँ क्लासक कोन बात जे विभागक स्टाफो रुम छोड़ि प्रिंसिपलेक कुरसीपर बैइसए लगलाह। जहिना ईंटाक देवाल लेटरीन आ कीचेनक दूरी बनबैत तहिना छात्रक पढ़ाइ आ नब बेतनक हिसाव दूरी बनौने। अध खिलल फुल जकाँ, जेकरा ने कोंढ़ी कहबै आ ने फूल तहिना सुशीलक मन बीचमे पड़ि गेल। मनमे उठलै मधु दइबला माछीकेँ विधाता ओहन डंक किएक देलखिन। मुदा मन तेसर घंटीक विषयपर गेलै। तीन शिक्षक। तहन कियए ने पढ़ाइ भेल। ई तँ ओहन विषय छी जे बिनु पढ़ौने विद्यार्थीकेँ बहुत अधिक कठिनाइ हेतै।

प्रोफेसरपर नजरि पड़िते देखलक जे के एहेन व्यापारी हएत जे समए पाबि अपन सौदाकेँ महग कए कऽ नै बेचत। एहेन काज तँ वएह बेपारी कऽ सकैत अछि। जेकर बेरागी मन होय। मुदा मन ठमकलै। ने आगू बढ़ै आ ने पाछू हटैले तैयार होय। जहिना जीरो डिग्री अंक्षांससँ सूर्ज मकर रेखा दिस बढ़ैत तँ कर्क रेखा दिस विपरीत समए हुअए लगैत तहिना तँ ने भऽ रहल छै। एक दिस घर-घर शिक्षा आ दोसर दिस सोनो-चानीसँ महग। जहिना गरीबक घरसँ सोनाकेँ दुश्मनी छै तहिना कि शिक्षोक भेल जा रहल छै। मन आगू बढ़ि चारिम घंटीपर पहुँचलै। तीन शिक्षक तँ अहू विषयक छथि। तहन किएक ने पढ़ाइ भेल? एक गोटे सीनेटक चुनावक तिकड़ममे लागल छथि मुदा तैयो तँ दू गोटे छथिये। एक गोटे तेरहम दिन रिटायर करताह। मनमे खुशी उपकलै। जहिना मरै समए किछु दिन लोक दुनियाँसँ कारोबार समेट घरक ओछाइन धड़ैत अछि तहिना तँ हुनको धड़ैक चाहिएनि। सोगेसँ ने रोग होइत अछि। तेरहे दिनक उत्तर दरमाहा आधा भऽ जेतनि। समए तँ एहिना जहिना बिनु पढ़ौने, कौलेज नै अएने बीतिलनि, रहतनि। तँए सोग होएब अनिवार्य आ काज नै करब आवश्यक छन्हिये। मुदा तेसर तँ ऐ सभसँ अलग छथि। ओ कियए ने एला। नजरि दौड़ैबते देखलक जे ओ तँ सप्ताहमे एक दिन आबि छबो दिनक हाजरी बनबै छथि। शनि तँ काल्हि छिऐ आइ केना अबितथि? एते मनमे अबिते सुशीलक आँखि झलफलाए लगलै। मन खलियाएल बुझि पड़लै। उठि कऽ चप्पलो आ पेंटो-शर्ट खोललक। लूँगी बदैलते पानि पीबैक मन भेलै। कोठरीसँ निकलि कलपर हाथ-पाएर -मुँह धोअए गेल। पानि पीबते मन हल्लुक बुझि पड़लै। मुदा जहिना खढ़हाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतब भरिगर बुझि पड़ैत तहिना सुशीलक मन समस्याक बोनाइल रुप देखलक। कओलेजकेँ बीचमे देख सीमा दिस बढ़ौलक। एक सीमा सर्वोच्च शिक्षण दिस पड़लै तँ दोसर गामक टटघर स्कूलपर। जहिना पहाड़सँ निकलि अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जाए मिलैत अछि तहिना ने टटघरेक ज्ञान उड़ि कऽ सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत। एते विचार अबिते गाछसँ गाछ टकराइत आगिक लुत्तीकेँ छिटकैत देखलक। ई लुत्तीक आगि तँ कोसक-कोस सुखल लकड़ीक संग-संग लहलहाइत फुलल-फड़ल गाछकेँ सेहो जरा दैत अछि। जहिना सघन

बनमे रस्ताक ठेकान नै रहैत तहिना सुशील कोनो रस्ते ने देखए। मन अपन उमेरपर गेलै। सत्तरह बर्खसँ उपर। अठारहमक बीच। अठारह बर्ख पुरलापर चेतन भऽ जाएब। मुदा हमर चेतना कहिया जागत जे बाहरी दुनियाँकेँ अंगीकार करब। आकि देख कऽ छोड़ि देब। स्कूल-कओलेजक पढ़ाइक तँ यएह गति अछि। जहिना एक-एक ईंटा जोड़ि बिशाल अट्टालिका बनैत तहिना ने कने-कने सीख बाल चेतनाकेँ पैघ बना सकै छी। ई के करत? ई तँ अपनहि केने हएत। मन शान्त भेलै। नजरि देलक गामक ओइ बच्चापर जे माएक मुँहसँ लुखी सीखैत अछि मुदा स्कूलमे प्रवेश करिते गिलहरीसँ भेँट भऽ जाइ छै। कि हमर मातृभाषा गामो धरि नै अछि। कि हिमालय पहाड़सँ गंगा कूदि-कूदि रास्ता टपि समुद्रमे पहुँचैत अछि आकि नीच-ऊँचक रास्ता टपैत समुद्रमे पहुँचैत अछि। ज्ञान-कर्मक बीच भक्ति होएत। कि बच्चा कर्मरुपी माएसँ सीख ज्ञान रुपी गुरुसँ मिल पबैत अछि। जँ से नै तँ माए-बाप गुरु केना? गामक स्कूलसँ नजरि हटि मिड़ल स्कूल आ हाइ स्कूलपर पहुँचलै। कतौ हाइ स्कूलसँ क्लास काटि मिड़ल स्कूलमे जोड़ाइत अछि तँ कतौ कओलेजक क्लास हाइ स्कूलमे। जहिना क्लास तँ कटि कऽ चलि अबैत तहिना शिक्षको अबैत। पढ़निहार तँ विद्यालय पैदा कऽ दैत मुदा पढ़ौनिहार केना........। आगू बढ़ैत सुशीलक मन कओलेजमे नै अँटकि विश्वविद्यालय पहुँच गेल। मनमे उठल जिनगीक पाँचम (भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्साक उपरान्त) आवश्यक शिक्षा छी। ओना शिक्षण संस्था अनन्त अछि। मुदा एक सीमाक भीतर सेहो अछि। कियो अपना डेरापर पोथी उलटा प्रश्नक जबाब अपन परीक्षाक कॉपीमे लिखैत अछि तँ कियो पढ़ाइक अभावमे प्रश्न पत्रो ठीकसँ नै बुझि पबैत अछि। की ऐ दौड़मे के आगू बढ़त? कियो मार्कसीटे कीन लैत अछि। की शिक्षा सन समस्याकेँ बेदरा-बुदरीक खेतमे बनाओल गरदा-गुरदीक घर-आंगन छी? चिन्तासँ मातल सुशील निराश भऽ ओछाइनपर ओंघराएले रहल। चिन्ताक बनमे चिन्तनक गाछ कतौ देखबे ने करए जइसँ आशाक फल देखैत। सुतल शरीर आरो सुति रहल।

कओलेजसँ आबि वसन्ती कोठरीमे किताब-कॉपी रखि सोझे माए लग पहुँचल। जलखैक छिपली वसन्ती क आगूमे बढ़बैत बाजलि- ''बुच्ची, उदास कियए छह?''

अपनाकेँ छिपबैत वसन्ती बाजलि- ''नै, नै। उदास कहाँ छी?''

वसन्ती अपन वसन्ती बहारकेँ छिपबैक कोशिश करैत मुदा जहिना शरीरक रोग तरे-तर बिसविसाइत रहैत अछि तहिना मनक रोग वसन्तीकेँ। मनमे नचैत कओलेजक पढ़ाइ आ अपन जिनगी। सुशील आ वसन्ती संगे पढ़ैत। पढ़ाइ नै हेबाक सोगसँ सोगाएल वसन्ती माएसँ आगू गप्प नै बढ़ा विस्कुट खा चाह पीब चुपचाप अपन कोठरीमे आबि उतान भऽ ओंघरा गेल। सिरमापर माथ देने दुनू बाँहि समेट कऽ मोड़ि छातीपर रखि अपन जिनगी दिस ताकए लगल। आजुक शिक्षा लऽ कऽ की करब? माए-बापक संग जे अन्याय भऽ रहल अछि कि ओ एक इमानदार बेटीक दायित्व नै बनैत जे आगूमे आबि ठाढ़ हुअए। आजुक शिक्षाक रुप एहेन बनि गेल अछि जे सरकारी स्कूल-कओलेजमे पढ़ाइ नै भऽ रहल अछि तइपर एते महग शिक्षा भऽ गेल अछि जे अपन बेटा-बेटीक शिक्षा लेल बाप-माए अपन जिनगी तोड़ि, खूनक घूँट पीब कऽ जीवन-बसर करै छथि। जेकर परिणाम कि भेटैत छन्हि तँ जेहो अपन बनाओल आकि पूर्वजक देल जे सम्पत्ति रहैत छन्हि बेटी वियाह करबैमे देमए पड़ैत छन्हि। बीस लाख रुपैया खर्च कए डाक्टरीक शिक्षा बेटीकेँ दियाउ आ तइपर सँ बीस लाख वियाहोमे चाही। ओइ डॉक्टर सभसँ पूछै छियनि जे देशक प्रथम श्रेणीक नागरिक होइतो अपन अन्याय नै रोकि सकैत छी तँ कि आशा अहाँसँ कएल जा सकैत अछि। माघक शीतलहरीमे जाड़-भूखसँ ठिठुरल बच्चाकेँ जीबैक उपाए अहाँ कऽ सकबैक। मन आगू बढ़ि अपनापर एलै। बी.ए. पास कऽ शिक्षिका बनब। पति या तँ किसान, व्यापारी आकि नोकरिहरे किएक ने होथि महिलाक संग जे असुरक्षा बढ़ि रहल अछि ऐमे कते गोटे अपनाकेँ सुरक्षित बुझि रहल छथि। कि काओलेज हाइ स्कूलक विद्यार्थी अपन अध्यापिकाक संग ओहने नजरिसँ देखैत अछि जै नजरिसँ अध्यापककेँ। की अदौसँ अबैत हमर धरोहर (संयुक्त परिवार सामाजिक ढ़ाँचा) गाछसँ खसल पाकल कटहर जकाँ आँठी उड़ि कतौ, कोवा उड़ि कतौ, कमड़ी खोइचा थौआ भेल एकठाम

आ नेरहा ओंघराइत कतौ, तहिना आँखिक सोझमे नष्ट भऽ जाइत। ऐ दुखद घटनाक जबावदेह के? गामक बच्चाकेँ स्कूलसँ लऽ कऽ कओलेज धरि एते तरहक गाड़ीक अवाजसँ लऽ कऽ लाउडस्पीकरक अवाज धरि कानमे पड़ैत अछि जइठाम गप-सप्प करब कठिन भऽ जाइत अछि तइठाम पढ़ाइक की दशा होएत।

एत्ते बात मनमे उठैत-उठैत परा-अपराक क्षितिजपर वसन्ती अँटकि गेली। जहिना शिशिर-ग्रिष्मक बीच बसन्तक स्वागत गाछपर बैस कोइली अपन जुआनीक इठलाइत राग-तानसँ करैत अछि तहिना वसन्तीक स्वागतक लेल होरी खेलाइत राधा-कृष्ण सेहो वृन्दावनमे प्रतीक्षा कए रहल छन्हि। अबीर उड़बैत राधा अपन पौरुस देखबैत अखाड़ाक माटि लऽ हाथ मिलबए चाहैत छथि तँ कृष्ण पाछु घुसकैत पिचकारीक निशान साधि कखनो गुलाबी रंग फैकए चाहैत तँ कखनो हरियरका। आँखिपर नजरि पड़िते तँ कारी रंग मनमे अबनि मुदा निशाने साधै-साधैक बीच राधा सतरंगा अबीर मुँहपर फेक देलकनि। मुँहपर अबीर पड़िते दुनू हाथे कृष्ण मुँह-कान पोछए लगलथि। आकि हाथसँ पिचकारी खसिते राधा आगू बढ़ि दुनू बाँहि पसारि हृदेसँ लगबैत विह्वल भऽ निराकार-साकारक बीच दुनू हँसए लगलथि। नमहर साँस छोड़ैत वसन्तीक मनमे उठल ऐ धरतीपर किछु करैक लेल संगीक जरुरत अछि। जाधरि पुरुष-नारी मिल अपन समस्याक लेल अपन पौरुषकेँ नै जगाओत ताधरि सपना साकार केना भऽ पाओत।

ओछाइनसँ उठिते सुशील सूर्यक किरिणकेँ देखए लगल। देवालक एक छोट भूर देने रोशनी कोठरीमे प्रवेश करैत। सूर्यक ओ रुप नै जइठाम आँखि नै टिकैत। मुदा कोठरीक रोशनी ओहन नै। पातर-कोमल। बिजलोका जकाँ सुशीलक मनमे उठल पुरुष-नारीक बीच सृष्टि निर्माण करैक शक्ति अछि तहन जँ ओ नान्हि-नान्हिटा समस्यामे ओझरा जाए, कतेक लाजिमी छिऐक। कोठरीसँ निकलि सुशील वसन्तीसँ भेँट करैक विचार केलक।

प्रात भने क्लासक संगी वसन्ती ऐठाम पहुँचल। टेबुलक एक कोणपर पोथी गेंटि कऽ राखल। एकटा किताब आ काँपी आगूमे पसड़ल आ पेन सेहो

खोइल कऽ राखल मुदा कुरसीपर ओंगठि आँखि बन्न केने वसन्ती अपन वसन्ती बहारपर नजरि अँटकौने रहए। जहिना बसन्त साले-साल अबैत आ जाइत अछि तहिना कि मनुष्योक जिनगीमे बसन्त अबैत आ जाइत अछि? कथमपि नै। मनुष्यक जिनगी तँ ओहन होएत अछि जइमे बसन्त एलापर पुनः जाइत नै। दिनानुदिन बढ़ैत-बढ़ैत समुद्र जकाँ महा बसन्त बनि जाइत अछि। एते बात मनमे अबिते देह चौंकि गेलनि। हृदए सिहरए लगलनि। मुदा अपनाकेँ संयत करैत धियान बसन्त ऋृतुपर देलनि। ऋृतुपर नजरि पड़िते देखलनि जे एकठाम फसल लगल चौरस खेत, सुन्दर-सुन्दर गाछसँ सजल बगीचा जहिपर खोंता लगा रंग-बिरंगक चिड़ै अपन मधुर स्वरसँ बसन्तक स्वागत करैत अछि। तँ दोसर कोसीक बाढ़िसँ नष्ट भेल ओ इलाका जइमे बालुसँ भरल ढ़िमका-ढ़िमकी बनल खेत, गाछ विरीछक अभाव देख कनैत चिड़ै रहैक ठरक दुआरे छोड़ि पड़ा गेल। कि ओइठाम चैत-बैशाखकेँ बसन्त ऋृतु नै कहल जाइत अछि? अथाह समुद्रमे वसन्ती कखनो उगए तँ कखनो डूबैत रहए। अनायास नोरसँ आँखि ढबढ़बा गेलनि। नोर केहन? दुखक आकि क्रोधक। ओढ़नीसँ वसन्ती नोर पोछितहि रहथि कि सुशील कोठरीक दरबज्जापर सँ बाजल- ''वसन्ती ।''

वसन्ती कानमे पड़िते धड़फड़ा कऽ कुरसीसँ उठि दुनू हाथ आगू बढ़बैत वसन्तीक मुँहसँ निकलल- ''सुशील।''

कुरसीपर सुशीलकेँ बैसाए अपने बगलक कुरसीपर बैस पूछलि- ''पढ़ाइ-लिखाइक की हाल-चाल?''

सुशील- ''कॉलेज छोड़ैक विचार भऽ रहल अछि।''

सुशीलक बात सुनि अकचका कऽ वसन्ती पूछलक- ''कियए?''

-''कओलेज सहित शिक्षाक जे दुरगति देख रहल छी ओइसँ मन दुखी भऽ रहल अछि। उपरी ढाँचा किछु देख रहल छी आ भीतरी किछु आर छै।''

सुशीलक बात सुनि वसन्ती बाजलि- ''सिर्फ अहींटा दुखी छी आकि आरो गोटे छथि।''

वसन्तीक बात सुनि सुशीलक विचार ठमकल। मुँहसँ निकलल- ''अखन धरि जे देखलौं ओइमे नगण्य दुखी भेटलाह आ अधिकांशकेँ कोनो गम नै।''

“किछु तँ भेटलाह?”
“मुदा ओ कहिया तक संग रहताह एकर कोन ठीक। जँ रस्तेसँ घुरि जाथि आकि हलवाइक कुकुड़ जकाँ रसगुल्ला-जिलेबीक रस चाटए लगथि।”
“अहाँ जे कहलौं ओकरो हम नै कटै छी मुदा एकर अतिरिक्तो किछु छै?”
“से की?”
“जँ पुरुष नारी मिल सृष्टिक निर्माण कऽ सकैत अछि तँ कि कोनो व्यवस्थाकेँ नै बदैल सकैत अछि।”
“बदैल सकैत अछि मुदा ओकरा लेल.....।”
“हँ। ओकरामे पौरुष चाही। पौरुष सिर्फ पुरुखेक धरोहर नै मनुष्य मात्रक छी। गललसँ गलल आ सड़लसँ सड़ल व्यवस्थाकेँ हमहीं-अहाँ ने संग मिल बदैल सकै छी।
वसन्तीक बात सुनि, नमहर साँस छोड़ैत सुशील बाजल- “ओहन संगी कत्तऽ भेटत?”
“संकल्प स्थलपर।” - वसन्ती बाजलि।
“ओ स्थल कतऽ अछि?”
“दुनियाँक एक-एक इंच जमीनपर।”
“संकल्पक विधान की?”
“आत्माक मिलन।” कहि दुनू गोटे दहिना हाथ मिला संग-संग जीवन जीबाक बचन एक-दोसरकेँ देलक।

::::::::::

१० ठकहरबा

भोरहरबेमे दादीक नीन उचैट गेलनि। लाख कोशिश केलनि मुदा दोहरा कऽ नीन नै घुरलनि। ओना भोरूका समए बसन्ते जकाँ मधुआएल रहैत मुदा ओहो की सबहक लेल एक्के रंग थोड़े रहैए। दिन-राति काजक पाछु नचनिहारकेँ थोड़े बसन्त आ ग्रीष्मक भेद बुझि पड़ैत। दादीक मनमे एलनि जे अखने ललितक ऐठाम जा कऽ कहिऐ जे अखुनके माने भिनसुरके उखड़ाहामे चिमनीपरसँ पजेबा आ बेरूका उखड़ाहामे बजारसँ एस्वेस्टस आनि दिहह। भोरूका अन्हारक दुआरे रतिगर बुझि पड़लनि। मनमे एलनि जे जँ कहीं बिछानपर जाय आ निन्न आबि जाए तहन तँ पहपटि हएत। मुदा एत्ती रातिकेँ जेबो कतऽ करब? गुन-धुन करैत सोचलनि जे से नै तँ घरसँ ओछाइन निकालि अंगनेमे बिछा कऽ पड़ब नै, बैस कऽ काजक गर लगाएब। सएह केलनि। काजपर नजरि दैते पजेबापर मन गेलनि। एक नम्बर राँट ईंटा तँ तते महग अछि जे कीनब थोड़े पाड़ लागत। मन मन्हुवा गेलनि। जहिना दू-बट्टी, तीन-बट्टीपर पहुँचते बटोही अपन अगिला बाट हियाबए लगैत अछि तहिना दादियो हियाबए लगलीह। कते दिन जीबे करब जे एक नम्बर ईंटाक जरूरत पड़त। लऽ दऽ कऽ बीस-पच्चीस बर्ख आरो जीब तइले तँ तीनियो नम्बर ईंटा नीके हएत। फेर मनमे एलनि जे कियो की अपने टा लए घर बनबैए आकि बालो-बच्चाले बनबैए। मन ठमकि गेलनि। किछु फुड़बे ने करनि। फेर मनमे उठलनि जे लोक काँच-ईंटाक घर केना बनबैए। ओहो तँ तीस-चालीस बर्ख चलिये जाइ छै। ओइसँ नीक ने तीन नम्बर। कमसँ कम अध-पकुओ तँ रहैए। जतबे नुआ रहए ततबे टाँग पसारी। तीनियो नम्बर तँ ईंटे छी कीने? हँ, हँ, तीनिये नम्बर ईंटा लेब। मन आगू बढ़ि चदरापर माने एस्वेस्टसपर गेलनि। चदरापर नजरि पड़िते मन झुझुआ गेलनि। सिमटीक तेहन चदरा बनए लगल अछि जे सालो भरि चलत की नै? जँ कहीं गोलगर पाथर खसल तँ चूरम-चूर भऽ जाएत। पहिने केहेन बढ़िया टीनक चदरा अबै छलै जे एकबेर घरपर दए देलासँ कत्ते दिन ओहिना रहैत छलए। मुदा ओहो बैशाख-जेठक रौदमे रहै-बला नै होइए। ओना जँ गतगर कऽ खरही छाड़क उपरमे दऽ दियौ तँ कोठे जकाँ भऽ जाइए। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा बनियाँ सभ भऽ गेल

अछि जे लेबालकेँ जे होउ अपन धड़ि तिजोड़ी भरै। खएर जे होउ, जे सबहक गति से हमरो हएत। तइले कते मगज चटाएब।

पौहु फटिते सूर्यक लाली देख दादी ओछाइन समेट घरमे रखि ललितक ऐठाम बिदा भेलीह। मन पड़लनि, आठमे दिन अदरा नक्षत्र चढ़त। आठे दिनक पेसतर घर बनबैक अछि। जँ से नै भेल तँ गिलेबापर जोड़ल देवाल ढहत-ढनमनाएत आकि की हएत? सेहो ने कहि। जे घर अखन अछि ओहो उजड़िये जाएत। तै बीच जँ बरखा झहड़ल तँ जानो बँचब कठिन भऽ जाएत।

ललितकेँ दरबज्जा नै। भनसे घरमे सुतबो करैत। ठोकले दादी आंगन पहुँच ओलती लगसँ कहलखिन- ''गोसाइ उगैपर भेलखिन आ तों सुतले छह?''
दादीक अवाज सुनि ललितक पत्नी सुपती उठि केबाड़क अधा पट्टा खोलि चुपचाप बाड़ी दिस विदा भेल। ओसार टपि केबाड़क दुनू पट्टा खोलि ललितक देह डोलबैत दादी कहलखिन- ''ललित, ललित। उठह, कते सुतै छह?''
सुतले-सुतल आँखि मुननहि ललित बाजल- ''की कहै छी?''
''अखैन धरि सुतले किए छह?''
ओछाइनपर सँ उठि दादीकेँ बैसबैत अपनो बैस बाजल- ''बड़ी रातिमे पुलिसक गाड़ी खोइर-बन्हामे लसैक गेलै। भरि गाड़ी पुलिस रहए। कतबो बाप-बाप केलक मुदा गाड़ी नै निकललै। जना जानि कऽ अनठा देलकै।''

बिनु दाँतक चौड़गर मुँह, गालक मसुहरिपर दूटा इंच-इंच भरिक पाकल केश, सोन सन उज्जर धप-धप केश, गरदनिक चमड़ा घोकचि कऽ लटकल दादीक। ठहाका मारि बजलीह- ''तोरा सन-सन लोकसँ की बेसी बुत्ता ओकरा सभकेँ होइ छै। गांजा पीब-पीब छाती फोंक कऽ नेने रहैए।''
मुँह चटपटबैत ललित- ''बड़ मोटगर-सोटगर सभ रहए?''
''धु: बतहा कहीं कऽ, एतबो नै बुझै छहक जे तखैन थालमे से गाड़ी किए ने उखड़लै।''

मुँह डेढ़बड़ा कऽ ललित बाजल- ‘‘उ सभ हाकिम रहै की ने।’’
‘‘अच्छा, ई सभ छोड़ह। पाइ कते देलकह?’’
‘‘पहिने वएह पुछलकै जे कते दिअ? ओना हमहूँ सभ सात-आठ गोरे रही मुदा हमरा छोड़ि सभकँ होइ जे कहुना जान छोड़ए। सभकँ सुक-पाक करैत देखिऐ। एक गोरे बाजि देलकै जे हुजूर सरकारिये पाइ छिऐ की ने? एतबे सुनैत मातर तड़ंगि कऽ एक गोटे बाजल ‘रौ बहिं, तुम पहचानता नहीं है।’ कहि पाइ आगूमे फेक विदा भऽ गेल।’’
‘‘सुआइत तोरा ओंघी दबने छह। हमहूँ काजे एलौंहें। अखन ते तूँ भकुआएल छह। मुँह-हाथ धुअह। काजक गप छी तँए कने असथिर से विचार करब। ओना अपनो मुँह-कानमे पानि नहिये नेने छी।’’
‘‘एह, ते की हेतै दादी। एक दिन टुटलहो-फटलाहा घरक चाह पीब कऽ देखियौ।’’

सुपतीकँ कानमे फुसफुसा दादी चौमास दिस विदा भेलीह। जाबे दादी मुँह-कान धोए तैयार होथि तइमे पहिने ललित सुपतीकँ चाह बनबैले कहि ओसारक बीचला खूटा लग पीढ़ी रखि दादीक बाट देखए लगल। अबिते दादी बजलीह- ‘‘कलक पानि बड़ सुन्नर छह।’’ कहि खूटामे ओंगठि पीढ़ीपर बैस गेलीह। सुपती चाह नेने आगूमे रखि देलकनि। चाहक रंग देख दादीक मन खुशी भऽ गेलनि। एक घोंट पीब बजलीह- ‘‘तेहेन चाह छह जे एक्के उपे जलखै बेर तक रहब।’’
ललित- ‘‘आइ काज अनठिया दियौ दादी।’’
मुस्की दैत दादी- ‘‘किए, घरमे सिदहाक ओरियान छेबे करह...। (मुदा लगले बात बदैल) कोन ऐहन हलतलबी काज आगूमे छह जे आइ मनाही करै छह?’’
मुँह दाबि सुपती बाजलि- ‘‘हिनका नै बुझल छन्हि जे आइ इलेसन (इलेक्शन) छिऐ।’’
सुपतीक बात जना दादीक अँतरीमे छुबि देलकनि। जहिना आम तोड़िनिहार सरं-गोलिया गोला आमपर फेकैत तहिना दादी फेकब शुरू केलनि- ‘‘कोन फेरमे पड़ए चाहै छह, अपन दुख धंधामे लागल रहह। सभटा ठकहरबा छी।

एते दिन अपनो सएह बुझै छलौं मुदा आब बुझै छी जे ठकाइत-ठकाइत जिनगिये ठका गेल। (मूड़ी निच्चा कऽ) जहिया समाज खादी साड़ी पहिरा 'माए जी' कहलक तहिया बुझि पड़ल जे समाज की छी। स्वर्गोसँ उपर। मुदा तेहेन-तेहेन ठकहरबा सभ भऽ गेल अछि जे बाजत ढेरी करत किछु नै।''

ललित- ''अहाँकेँ किए समाज खादी पहिरौलनि दादी?''

ललितक प्रश्न सुनि दादी विस्मित भऽ गेलीह। जहिना बोनमे जानबरक छोट-छोट बच्चा बौआ कऽ हरा जाइत तहिना आजादी समयक बोनमे दादी हरा गेली। दादीकेँ विस्मित देख ललितकेँ बुझि-पड़लै जे दादी फेर कतौ औना गेलीह। तँए दोहरा कऽ नै पुछि जबाबक प्रतीक्षा ओइ रूपे करए लगल जै रूपे माए बच्चाकेँ विद्यालयसँ अबैक आशा करैत रहै छथि। चौअन्निया मुस्की दैत दादी बजए लगलीह- ''दुरागमन कए कऽ आएले रही। बूढ़ा-बूढी माने सासु-ससुर जीबिते रहथि। बेटा मात्रिक गेलनि। ओइठीनक लोक सभ झंडा उठा खूब हूड़-बरेड़ा करैत रहए। अपनहुँ (पति) हुनके सभ संगे बौउर गेलाह। तीन मास बीता कऽ गाम एला।''

ललित- ''बाबा बिगड़बो केलखिन?''

दादी- (अपसोच करैत) ''ओ सभ स्वर्ग गेला हम नर्कमे छी। आगि नै उठेबनि। हँ, ई भेलै जे बुढ़हो जोगारी रहथिन। तरे-तर सरहोजिसँ सभ भाँज लगा लेने रहथि। जाबे गाम घुरि कऽ एला ताबे ते इम्हरो लोक झंडा उठा हड़बिरड़ो करए लगल रहए। आजादीक दस-बारह बर्ख पछाति गाममे मलेरिया आएल। चारि अन्नासँ बेसिये लोक मरल। अपनो घरहंज भऽ गेल। तीनू गोटे (सासु-ससुर आ पति) मरि गेलाह। मात्र अपने आ छह मासक बच्चा बचलौं। ओही बेटाकेँ पोसि-पालि जुआन बनाएब अपन देशसेवा बुझलिऐ। खादी साड़ी पहिरैक यएह कारण रहए।''

मुस्की दैत सुपती पुछलकनि- ''नेता सभ जकाँ भाषणो करथिन?''

''बेसी ते नै बाजल हुअए मुदा मंचपर दुनू हाथ जोड़ि एत्ते जरूर कहिऐ जे 'हे ब्रह्मबाबा गामक रक्छा करिहह। 'मुदा सभ झूठ भऽ गेल। ने ब्रह्मबाबा सुनलनि आ ने ककरो रक्छा भेलै।''

सुपती- ''खादीबला सभ भरि दिन झूठे बजैए?''

सुपतीक बातसँ दादीकेँ दुख नै भेलनि। मुस्की दैत कहलखिन- ‘‘ओहिना कनी कऽ मन अछि। शुरूक तीन भोटमे बहरबैया नेता सभ संग कऽ कऽ गाम घुरलथि। जते काल संगमे रहियनि तते काल गामेक गप-सप्प करथि। गाममे ने नीक सड़क अछि आ ने बच्चा सभकेँ पढ़ैले स्कूल। ने पानि पीबैक समुचित बेवस्था अछि आ ने दवाइ-दारूक। गाड़ी-सवारीक नाओंपर बैलगाड़ी अछि। एहेन समस्या सिर्फ अपने गाम टाक नै इलक्केक अछि। सरकारक अपने बेवस्था लटपटाएल अछि। हरितक्रान्तिक पूर्व धरि पेटक दुआरे आन-आन देश से जनेर-गहूम मंगबए पड़ैत छलए। (कने चुप भऽ मन पाड़ि) तही बीच भूदानी आन्दोलन जगल। नारा देलक- ‘जमीनक छबम हिस्सा दान दिअ’ जइसँ गरीब लोककेँ बासक संग जोतो जमीन भेटतै। गामक-गाम दान हुअए लगल। मुदा अखन की देखै छहक जे जोतक कोन बात जे घरारियो सभकेँ नै छै। (ठहाका मारि) सबटा मदारी नाच केलक।’’

पटरीपर सँ दादीक बातकेँ उतड़ैत देख ललित पत्नीकेँ कहलक- ‘‘बूढ़ि दादी छथिन थकबो करै छथिन की ने। शिखरक पुड़िया खोलियापर से नेने आउ?’’

शिखरक नाओं सुनि दादीक मनमे भेलनि जे शिखर केहेन होइ छै। आइ धरि नामो नै सुनने छलिऐ। मुदा बजलीह नै। चकोना होइत देख ललित बुझि गेल जे भरिसक दादी शिखर नै खेने छथि। मुस्कुराइत कहलकनि- ‘‘जहिना चाह पीलापर देहमे फुनफुनी आबि जाइ छै तहिना दादी शिखरो खेने होइ छै। इस्कुलिया विद्यार्थी सभ ते भरि-भरि जेबी रखने रहैए।’’

सुपती हाथसँ एकटा पुड़िया लए ललित दादी दिस बढ़ौलक। जहिना खच्चा-खुच्चीमे पानि देख बकरी पाछु हटैत रहैत अछि। तहिना शिखरक पुड़िया देख दादीक मन पाछु हटलनि। मुदा नव चीज रहने सेहन्तो भेलनि। एक चुटकी मुँहमे दैते बुझि पड़लनि जे सरसरा कऽ कंठसँ निच्चा उतड़ल जाइए।

तखने ललित पुछलकनि- ‘‘अपनो गामक लोक जमीन दान केलक?’’

ललितक बात सुनि खौंझा कऽ दादी बजलीह- ‘‘कहबे ते केलियह जे सबटा बानरक नाच केलक। एक गोटे समस्तीपुर दिसक भूदानी नेता खोज करैत

अपने ऐठाम एला। (मने-मन मुस्कुराइत) की कहिहह हुनकर हाल। साँझू पहर जखैन गप-सप्प करए लगथि तँ बुझि पड़ए जे जहिना त्रेता युगमे रामराज रहै तहिना फेर कलयुगोमे भऽ जाएत। ने ककरो पेटक चिन्ता रहतै आ ने रोग-व्याधिक। मुदा ले सुथनी, भिनसर से दुपहर धरि ओकरा सावुन रगड़ि-रगड़ि नहाइये आ कपड़े साफ करैमे लगि जाय। बेरू पहर सभ कपड़ा सुखा, पहीरि कऽ दिन लहसैन निकले आ खाइ-पीबै राति धरि भाषण करै। एक पनरहिया से बेसिये रहल। तै बीच अकच्छ-अकच्छ भऽ गेलौं। खादी भंडारक मंगनी कपड़ा पबै, सदतिकाल बगुला जकाँ उज्जर धप-धप चेहरा बनौने रहए।''
ललित- ''खादी भंडरमे मंगनिये कपड़ा बटबारा होय?''
''मंगनी कतौ होइ। गाम-गामक उद्योगकेँ उला-पका कऽ खा-पी कऽ चौपट कऽ देलक। गामक गाम लोकक रोजगार मरि गेल। एक तँ कोसी-कमलाक उपद्रव तइपर सँ जेहो छोट-छीन रोजगार गाममे चलैत छल सभ चलि गेल। जखैन लोककेँ गाममे पेटे ने भरत तखन कते दिन पेटमे जुन्ना बान्हि कऽ रहत। गामक-गामकेँ पड़ाइन लगि गेल। ने बच्चा सभकेँ पढ़ैक स्कूल अछि आ ने रोग-व्याधिक लेल डखाना (अस्पताल)।'' बजैत-बजैत दादी विस्मित भऽ गेलीह। आँखि बन्न भऽ गेलनि।

गुम-सुम देख ललित पुछलकनि- ''पहिलुका बात तँ छुट्टिये गेल?''
ललितक प्रश्न सुनि दादी मन पाड़ि बजलीह- ''चारिम भोट अबै से किछु पहिने मारिते-रास पाटी फड़ि गेल। कखनो कोनो रंगक झंडा लऽ कऽ जुलूसो निकले आ सभो होय तँ कखनो कोनो रंगक। जहिना आखिरी लगनमे छुटल-बढ़ल, बूढ़-पुरान, लुल्ह-नांगर सभ पालकीपर चढ़ि लैत तहिना भदबरिया बेंग जकाँ गामे-गाम नेता फड़ि गेल। ओना हम लिखा-पढ़ी कऽ कऽ कोनो पाटीक मेम्बर नै भेल रही मुदा लोको बुझे आ अपनो मानैत रही। तँए मनमे अरोपने रही जे जेकरा जे मन फुड़ौ से करह मुदा जहिना शुरू से रहलौं तहिना रहब। भोट होइ से पहिने कताक गाममे मारि भेल। अपना गाममे भोट दिन तक ते मारि नै भेल मुदा भोट दिन एहन मारि भेल जे लोककेँ पड़ाइन लगि गेलै।''

सुपती- ‘‘हिनको कियो मारलकनि?’’

‘‘नै कनियाँ, हाथ तँ नै उठौलक। मुदा भोट खसबै नै दिअए। हमर भोट केदैन खसा नेने रहए। कते कहा-सुनी भेलापर अनके नाओंपर भोट खसेलौं। भोट खसा कऽ जखैन घुरलौं ते मनमे आएल जे आब भोट खसबै लए नै आएब।’’

ललित- ‘‘पाटीबला सभकेँ नै कहलिऐ?’’

दादी- ‘‘कि कहितिऐ। संयोगो नीके बुझहक। अगिला भोटमे पार्टीक उम्मीदवारे ने ठाढ़ भेल। जान हल्लुक भेल। आन पाटी ते मारिते रहै मुदा ककरा भोट दीतिऐ आ ककरा नै दीतिऐ। तै से नीक जे बूथपर जाएबे छोड़ देलिऐ।’’

ललित- ‘‘ककरो नफ्फा-नोकसान होउ, अहाँ ते बचलौं की ने?’’

ललितक बात सुनि दादीक आँखि नोरा गेलनि। मुँहसँ बकारे नै फुटनि। थोड़े-खान चुप रहि बजलीह- ‘‘बौआ, पटना दिल्ली ते कहियो मनोमे ने आएल मुदा गामोमे जहुना छलौं तहुना नै रहलौं। जै समाजक लोक ‘माए जी’ कहैत छलए ओइ समाजमे लोक ड़ॉड़ी कहए लगल। ऐ बातक दुख सदिखन मनकेँ व्यथित केने रहैए।’’ कहि आँखि बन्न कऽ सोचमे डुबि गेलीह। किछु समए गुम्म रहि पुन: बजए लगलीह- ‘‘गामे-गाम तेहेन अगराही लगि गेल छै जे शान्त हएब कठिन अछि। पूबारि गाममे खेतक झगड़ामे मारि भेल। से खूब मारि भेल। दुनू दिस कते गोटेकेँ कान-कपार झड़लै। एकटा खूनो भेलै। मुदा अचरज ई भेल जे एहेन सना-सनी रहितौ गौआँमे सुबुद्धि जगलै। कियो कोट-कचहरी नै गेल। गामेमे फड़िया गेल। अखन जँ ओना होइत तँ गाम उजरि जाएत। तेहेन-तेहेन मनुक्ख सभ बनि गेल अछि। जे सदतिकाल फोसरिये तकने घुरैए।’’

ललित- ‘‘भोटो दिन छी दादी। भोटो खसबैक अछि। मुदा जखैन अहाँ आबि गेलौं तखन पहिने अहाँक काज सम्हारि देब।’’

दादी- ‘‘भोट खसबैले थोड़े मनाही करबह। भिनसर से साँझ धरि भोट खसैए। पाँच बजेमे भोट खसा लिहह।’’

‘‘ताबे तक भोट बचले रहत?’’

“जे लड़ैए, ओकरा एतबो बुत्ता नै छै जे बूथ सम्हारि कऽ राखत। ओना भोँटे खसौने की हेतह। देखते छहक जे कियो बक्से हेरा-फेरी कऽ लैत अछि तँ कियो रिजल्टे बदैल लैत अछि।”
“बेस कहलौं दादी। काका (दादीक बेटा) कतऽ रहै छथि?”
बेटाक नाओं सुनते दादीक मनमे खुशी एलनि। मुस्की दैत बजलीह- “बौआ, पनरह-बीस बर्ख से बौआइते-ढहनाइते छलए। पहिने दिल्ली गेल। ओइठीन काज नै भेलै तब बमै गेल। ओतौ नोकरी नै भेलै। तखन हाड़ि-थाकि कऽ पाँच बर्ख पहिने कलकत्ता गेल। मुदा जहिना बमै पाइ बलाक छी तहिना कलकत्ता गरीब लोकक छी। ओइठीन एकटा साइकिल मिस्त्रीक दोकानमे नोकरी भऽ गेलै। दरमाहा ते बेसी नै दै मुदा साइकिल बनबैक सभ लूरि भऽ गेलै। अपने दिगारिक मिस्त्री छी। अपने वहिन से विआहो कऽ देलकै। सुनै छी जे पुतोहूओ मिसतिरिआइ करैए। दुनू बेकती एते कमा लैए जे अपनो गुजर करैए आ घर बनबैले रूपैइयो पठा देलकहैं। सएह रूपैया छी।”
“असकर लए तँ अहाँकैं एक्कोटा घर से काज चलि जाएत?”
“हँ, से ते चलि जाएत। मुदा पुरजीमे लिखने अछ। जे आब गामेमे रहब। पुरना जते मिसतिरी अछि ओ सभ मोटर साइकिलक मिसतिरी भऽ गेल। जहन कि गामे-गाम साइकिलक पथार लगि गेल हेन। तहूमे तेहेन साइकिल अछि जे छह मासक उपरान्ते मिसतिरीक काज पड़तै।”
ललित पत्नीकैं कहलक- “एकबेर आरो चाह बनाउ। दादीक संगे जाएब।”
सुपती- “घरमे दूध कहाँ अछि। नेबोओ सबटा चोराइये के तोड़ि लै गेल।”
दादी- “कनियाँ अहाँकैं नै बुझल हएत, नइ नेबो अछि। ते नेबोक दूटा पाते दऽ दियौ।”

चाह बनल। एक घोट चाह पीब ललित दादीकैं पुछलक- “दादी केहेन घर बनेबै?”
“बौआ, गिलेबापर जोड़ि तीन नंबर ईंटाक देवालपर सँ एसबेस्टसक छत देबै। कहुना-कहुना ते बीस-पच्चीस बर्ख चलबे करत।”
“से ते बेसिओ चलि सकैए आ सालो भरि नै चलि सकैए।”

“से की?”
“तेहेन सिमटीक घटिया एसबेस्टस बनैए जे पाथरक चोट बरदास करत।”
मूड़ी डोलबैत दादी- “हँ, से ते ठीके कहलह।” कहि गुम्म भऽ गेलीह। दादीकेँ गुम्म देख ललित बाजल- “दादी, जँए अस्सी तँए निनानबे। चदरा तरमे खूब गतगर कऽ खरहीक छाड़ दऽ देबै। जँ पथरो खसत ते चदरे ने फुटत, जान तँ बँचत किने। बेसीसँ बेसी देहपर पानि चुबत। सएह ने।”

::::::::::

११ अतहतह

तीन बजे भोरे झामलाल बैग नेने गरजैत चौकपर पहुँचल। ओना एकादशीक चान डुबि गेल रहै मुदा सुरूजक लालीसँ दिशा फरिच्छ हुअए लगल रहए। झामलालकँ चौकपर अबैसँ पहिने भुटुकिलाल डिबिया बारि चाहक चुल्हि पजारि नेने रहए। पाँच बजे चुल्हिमे आगि पजारैबला अढ़ाइये बजे पजारैक सुरसार करए लगल रहए। तेकर कारण भेल रहै जे पनरह दिनसँ राहड़िक दालिमे रोटी गुड़ि कऽ नै खेने रहए। तै खातिर रातिमे खाइये काल दुनू परानीक बीच झगड़ा भऽ गेलै। बिनु खेनहि पीढ़ीपर सँ खिसिया कऽ उठि गेल। माटियेसँ चारि घुस्सा दाँतमे लगा, कुड्डुड़ कऽ झामलाल दोकानपर पहुँच बाजल- "भुटुकि भाय, रौतुका सोठियाएल छिअ। खेवाक किछु नै रखने छह?"

"अच्छा पहिने अधा-अधा कप चाह पीब लिअ। जहिना अहाँ सोठियाएल छी तहिना हमहूँ छी। आन चीज की भेटत। बिस्कुट सबमे कोनो लज्जैत रहै छै। मुदा छालही अछि।"

"चलह हुन्डे दाम कहि दहक?"

"सबटा अहीं लऽ लेबै आ अपने?"

"पाइ हम्मर आ खाइमे दुनू गोटे अधा-अधी।" अधा-अधी सुनि भुटुकिलाल उछलि कऽ बाजल- "अधा किलोसँ बेसिये हएत मुदा अहाँ एक्के पौआक पाइ दिअ।"

"एहनो बुड़िबक जकाँ कियो बजैए। बैग खोलि कऽ देख लहक। एक किलोक पाइ आ सवा सौ रूपैया उपरसँ देबह। खाली भरि दिन संग पुरह।"

"हम तँ पेट-बोनिया आदमी छी भाय। जतऽ पेट भरत ततऽ रहब।"

"चौकक खर्च हम देलियह आ मालिक तूँ भेलह। मुदा पहिने खा लाए किएक तँ भरि दिन बहऽ पड़तह।"

अधा-अधा छालहीमे सँ उठा-उठा मुँहोमे दैत आ गप्पो करैत "टटके छालही बुझि पड़ै छह।"

"कौल्हुके छी।"

“छालहीक रस तँ तेसर दिनसँ बनव शुरू होइ छै। मुदा टटकोक अपन रस छै। आइ गामक झंडा गारि देलियह।”

“से की, से की?” बगुला जकाँ मुँह उठा-उठा भुटुकिलाल झामलालसँ पुछलक। पानि पीब झामलाल बाजल- “हमरा तँ बुझिते छह जे बैग आ मोटरे साइकिलमे कारोबार अछि। मुदा कहुना-कहुना सालमे पाँच लाख पीटिये दैत हेबै। बान्हल तँ अछि नै। दसटा कम्पनीक एजेंसी रखने छी जेकर जाल सगरे देशमे छै। एते पहुँच सेहो बनौने छी। जहिना आइ खच्चरपुर बलाक खच्चरपनी झाँड़ि मुता-मुता भरेलौं तहिना ओकर आगि-पानि कथा-कुटुमैतियो ढाठि देबै। तइले नअ पड़े आकि छह।”

“ठीके कहै छी भाय, एहेन-एहेन अगिलह सभकेँ एहिना हुअए।”

चाह पीब झामलाल बाजल- “भाय, ऐपर सँ जे पान सए नम्बर पत्ती देल पान खइतौं तँ आरो बुलन्दी आबि जैतै।”

“भाय, पान तँ तेहन खुआ दैतौं जे जेहेन बुलन्दी चाही तहूसँ सातबर बेसी आबि जाइत। मुदा पानबला छौड़बा अछि मौगियाह। वसन्ती नीन छोड़ि कऽ औत। सात बजेसँ पहिने थोड़े औत। ताबे सुपारी आ तमाकुलक पत्ती दऽ काज चला लिअ।”

“तोहूँ भारी इसकी छह। आइ तोरे दरबारमे आसन जमेहब। जना-जना तूँ कहबह तेना-तेना करब। मुदा एकटा बात अखने ऐ दुआरे कहि दै छिअ जे बिरड़ोमे झंडा उड़िया देलिऐ मुदा ओकरा तँ बाँसमे लगा जमीनमे गाड़ए पड़त की ने?”

“अहाँ खाली बैगक ताला खोलि कऽ रखने रहू, एक्के घंटामे चौकक चकचकी देखा दै छी।”

उत्साहित भऽ झामलाल- “भाय, तोरे सबहक असिरवादसँ दूपाइयो देखै छी आ दूटा लोको लगमे रहै छी। मुदा कमेनाइये-खेनाइयेटा तँ जिनगी नै ने छिऐ। फेर दोहरा कऽ सुन्दरपुरमे जन्म लेब। तँए जहिना गामक झंडा अकासमे उड़िआएल तहिना बचबैले जे करए पड़त, से करब।”

“अच्छा छोड़ू अगिला बात, अखैन की करब से विचारू।”

“तोहीं बाजह?”
“दूटा चाहबला छी। दूटा पानबला अछि। तीनटा मजरूटी अछि। भरि दिनक खर्च उठा लिअ।”
“मजरूटी की कहलहक?”
“मैजरिटी, एक मजरूटी गाँजा पीआकक अछि। दोसर ताड़ी-पोलिथीनबला अछि। आ तेसर इंग्लीस पीआकक अछि।”
“तीनूमे कते खर्च हेतह?”
“अहाँ खाली बैगक मुँहमे हाथ देने ने रहिऔ। सभ गप ने कऽ लेब।”
“सब तँ फुट-फुट बैसत तखन रौतुका बात कहबै केना?”
“मामूली लोक सबहक मजरूटी छी। कलाकार सबहक छी। जखने चाहक दोकानपर औत आ भरि दिनक मौज-मस्ती गछि लेबइ तखने चौकक ताल देख लेबइ।”
“किछु कहबहक नै?”
“कहबै आकि मंत्र देबै। दुइयेटा मंत्र दैक काज छै। अकासमे झंडा उड़ि गेल आ खच्चरपुरबलाकेँ सभ खचड़पनी घोंसारि देलिऐ। माटि दै छिऐ जे जतऽ फड़ियबैक मन होय फड़िया लिअ हमरा समाजसँ।”

घंटे भरिक पछाति चौकक जुआनी आबि गेल। गाँजाक मंचसँ फगुआ शुरू भेल- “एक दिस खेले कृष्ण कन्हैया, एक दिस राधा जोड़ी हो।” तँ ताड़ीक मंचसँ महराइक धुन- “किसकी मैया बाघिन जनमे जो रूदल पर फेरे हाथ।” तेसर मंचसँ अंग्रेजी डान्स शुरू भेल।
सात बजैत-बजैत चौकपर गदमिशान हुअए लगल। रविशंकर चाह पीबैले अबैत रहथि आकि दस लग्गी पाछुएसँ चौकक मस्ती देखलनि। गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ हियासए लगलथि तँ देखलनि जे सौंसे गामक लोक नाचि-गाबि रहल अछि। मुदा लगले जना पवन सुत किछु कहि देलकनि। मुस्की दैत भुटुकि लालक चाहक दोकान सोझे पहुँच भुटुकि लालकेँ पुछलखिन- “भुटुकि भाय, बड़ देखै छिऐ चहल-पहल की बात छिऐ?”

“पहिने चाह पीबू ने। गप कतौ पड़ाएल जाइ छै। निचेनसँ चाहो पीबू आ गप्पो सुनू।”
“कनियो तँ इशारोमे कहह।”
“एतबे बुझि लिअ जे खच्चरपुर बलाकेँ मुता-मुता भरेलौं।”
भुट्ठुकि लालक बात सुनि रविशंकर अचंभित भऽ गेलाह जे आखिर बात की छिऐ? तै बीच झामलाल कहए लगलनि- “भाय, मास दिनक कमाइक फल छी। जड़ियेसँ कहि दै छी। तेंइतीसम दिनक गप छी। एक लाल रूपैयाक पार्टीक काज कए कऽ आएले रही। बारहसँ उपर दिन चढ़ि गेल रहए। कपड़ा खोलि कलपर बाल्टी-लोटा रखि लताम गाछक निच्चाँ ठाढ़ भऽ उपर हियासैत रही। तैकाल हिरदे काका दछिनबरिया बाधसँ अबैत रहथि। नजरि पड़िते कहलियनि- ‘काका, गोड़ लगै छी। बड़ रौद छै कनी ठंढ़ा लिअ।’ जहिना कहलियनि तहिना ओहो लतामेक गाछ लग आबि गेलाह। लताम देखलाहा आँखि हिरदे काकाक मुँहक सुरखी देख मुँहसँ निकलल- ‘काका, एना हकोपरास किए छी।’ सुखल मुँहक मुस्की दैत बजलाह- ‘नै बौआ, नै कोनो। रौदमे सँ एलौंहेँ ने।”
“दूटा लताम खाउ?”
“नै बौआ, नै खाएब।”
“दूटा अंगने नेने जाउ।”
अंगनाक नाओं सुनि औटोमेटिक बम जकाँ कखन छाती फाटि गेलनि, से नै बुझलौं। मुदा आँखिसँ टघरैत नोर गालपर चमकए लगलनि। मन गरमाएले रहए। कहलियनि- “काका, जहिना परिवारमे भैया, काका, बाबा, होइए तहिना ने समाजोमे होइए। विरान किए बुझै छी। अहाँ सबहक असिरवादसँ कमाइयोक आ दस गोटेकेँ चिन्हैइयोक लुरि भऽ गेल अछि बाजू अहाँ किए एते पीड़ित छी जँ उठैबला हएत तँ जरूर....।”
नोर पोछैत काका बजलाह- “बौआ, देखैइयेटा ले बुझि पड़ै छियह जे मनुक्ख छिअ। मुदा से नै, मुइल मनुक्ख छी। अपनो परिवारक रक्छा करै जोकर नै छी। तहन तँ देखा-देखी आँखि तकै छी।”
“खुलि कऽ बाजू, काका?”

“बौआ, ऐ जुगमे हमसब महापापी छी, किएक तँ भगवान पाँचटा बेटी दऽ देलनि। चारिटाक तँ कोनो धरानी खेत बेच-बेच पार लगेलौं। सात बीघाक किसान मात्र पनरह कट्ठापर आबि गेल छी। तेहेन हवा-पानि देखै छी जे ओहूसँ पाँचमक पार लागत आकि नै।”

हृदेकाकाक बात सुनि अवाक भऽ गेलौं। जना बकार बन्न भऽ गेल। छाती असथिर करैत पुछलियनि- “कक्का कते खर्च हएत?”

“बौआ, गरथाह बात केना बाजब।” आँखिक नोर पौछैत पुन: बजलाह- “बौआ, ई पाँचम बेटी तत्ते दुलारू अछि जे हृदेमे सटल अछि। एक तँ कोड़ि-पच्छू बेटी तइपर सँ माइयक तते सिनेही जे सुग्गा जकाँ किछु बाजत। जेठकीकेँ दादिये पोसलकै। कहियो ओकरा कोरा कऽ नै लेलिऐ। जखैन टेल्हुक भेल तखनसँ संगे मेला-तेला लऽ जाए लगलिऐ। छोटकी बेटी माइयक तेहेन दुलारू बेटी अछि जे साइयोसँ उपरे नाओं रखने छथिन।”

“कक्का, छोड़ू ई सब। अपन बहीन बुझि वियाह पार लगा देब। जेहने जेठकी बेटीक परिवार अछि तेहने परिवार भजिआउ। खर्चक चिन्ता जुनि करब। ई पहिल दिनक गप छी।”

ओना तँ गामे-गाम अतहतह होइते अछि मुदा खच्चरपुर बलाकेँ तँ कोनो सीमे-नाङरि नै छै। ऐ साल पाँचटा वियाहमे अभरल। तते दोस-महीम भऽ गेल अछि जे एकटा वियाहक खर्च नौत पुराइमे होइए। तइले नै कोनो। दस सेरे नै नितराइ दस सगे नितराइ। पाँचो वियाहमे ओकरा सबहक खच्चरपनी देखिलऐ से एँड़िसँ टिकासन तक नेसि देने अछि। मुदा कोनो वियाहमे कोनो समाज (बरियाती-घरवारी) तँ नै छलौं तँए आँत-मसोसि कऽ रहि गेलौं। गर चढ़ा खच्चरपुरेमे कथा ठीक केलौं। कक्कोकेँ पसिन भेलनि। लेन-देन तँइ भऽ गेल। समए बना ओहू गामक समाज आ अपनो समाजक बैसार केलौं। बैसारेमे बजलौं- “अखन धरिक काज दुनू घरबारीक छलनि मुदा आब समाजक भऽ गेल। चाहै छी जे आन गाम जकाँ थूका-थूकी वियाहमे नै हुअए। तँए किछु समस्या अछि जहिपर अखने विचार विमर्श भऽ जाए।(१) वियाह पद्धतिक अनुकूल हुअए आकि जयमाला कऽ हुअए। (२) पलाउक चलनि भऽ

गेल से मखानक खीर खाएब आकि पलाउ? (३) खेला-पीला उत्तर लगले विदा भऽ जाएब आकि आराम कए कऽ?''

प्रश्न सुनि चुप्पी पसरल। जहिना चुल्हिमे खोरनासँ जारन घुसकौल जाइ छै तहिना घुसकौलौं- ''कन्यागत समाजक कन्हापर भार देने छथिन तँए समाज चाहै छथि जे आन-आन गाम जकाँ बरियाती-घरवारीक बीच कोनो तरहक राग-द्वेष नै हुअए। किएक तँ बरियाती घरवारीकेँ निच्चाँ देखबए चाहैत आ घरवारी बरियातीकेँ। जइसँ जहिना खेतमे कोनो चीजक बीया छीटल जाइत अछि। तहिना हम सभ झगड़ाक बीया समाजमे छीट देने छी। जे दुखद बात छी। नै चाहब जे समाजमे एना हुअए। वियाह सृष्टिक सृजनक प्रक्रियाक अंग छी तँए ऐ संग छेड़-छाड़ अनुचित। अपने लोकनि जे कहि देब ओइ अनुकूल वियाह हएत। घमरथन शुरू भेल। घमरथनक कारण भेल किछु देखौआ काज आ किछु चोरौआ। मुदा सुमति एलनि, कहलनि, जे लड़का-लड़कीक वियाह सामाजिक पद्धतिक अनुकूल हुअए। ई भार अहाँपर रहल। जहिना कोनो काजक प्रक्रिया होइ छै तहिना भोजनक प्रक्रियाक अंग अरामो छी। जानल बाज अछि जे नियमित भोजनसँ भिन्न भोजन बरियातीमे होइ छै, तँए आराम आरो जरूरी अछि। प्रात: काल नअ बजेमे चाह-पान खा असिरवाद दैत आपस हएब। पलाउ आ खीर खेनिहार दुनू रहताह। बाजा-बूजीक बेवसथा घरवारीक। नै चाहब जे रस्ता-बाटमे अनगौआँ सभसँ झंझट हुअए। मोटा-मोटी यएह बुझू जे सएक धतपत बरियाती रहताह। जिनका लेल अहाँ दू-ठाम बेबसथा करब। अहुँ सभ बुझिते छिऐ आ हमहुँ सभ बुझिते छिऐ। एक भागक जे बरियाती रहताह हुनका लेल जहिना भोजनक वृहत् बेबस्था रहत तहिना अरामोक हेबाक चाही। ई नै जे मधमन्नी जहल जकाँ मूड़ी-पाएर दुनूक पतियानी लगि जाए। पुछलियनि- 'जखैन दरबाजापर पहुँचबै तखन कोन रूपे शुरू करबै?' कहलनि- 'जे सभ भाँग खेनिहार छथि ओ सभ घरेपर भाँग खेता आ रस्ते-बाटमे कतौ झाड़ा-झपटा करताह। पाएर धोबसँ शुरू करब। एम्हर बरियातीक सनोमान शुरू हएत आ ओम्हर आंगनमे वियाहक प्रक्रिया शुरू

हएत। आठ बजे दरबज्जापर पहुँच जाएब। दस बजेमे खुआ-पीआ कऽ आराम करए छोड़ि देब।' हँसैत सभ निर्णए कऽ लेलनि। विदा भेलौं।''

रस्तामे झगड़ाक जड़ि ताकए लगलौं। एते तँ विसवास रहबे करए जे जहिना चोर फँसबैले सिपाही घेराबंदी करैत अछि तहिना जाल तँ लगबै पड़त। मन पड़ल दोसक गप। दोस कहने रहथि जे अपना सभ कारोवारी छी तँए कोट-कचहरीसँ सदति काल बचैक रहैक चाही। नै तँ अनेरे ओझरा जाएब कारोवार कारोवारे रहि जाएत। मुदा उखरिमे मूड़ी देलौं तँ मुसराक डर केने काज चलत। तहन तँ जहाँ धरि संभव हएत तहाँ धरि बँचब। अखनो समाजमे कहाँ कियो खुलि कऽ ताड़ी-दारू करै छथि। चोरनुकबा जरूर करै छथि। मुदा की हुनका सभकेँ अपना आँखिमे लाज नै छन्हि? जरूर छन्हि। मुदा जे होउ, जिनगी भरि जहलेमे किए नै रहऽ पड़ै मुदा खच्चरपुरबला सभकेँ सिखाएब जरूर। तेहेन कऽ नाङरि सुररबै जे इलाकामे मुँह उठाएब मुसकिल भऽ जेतनि। बेसीसँ बेसी दसटा बदमास, गाममे हएत पचासटा आनि कऽ रखि देबै। मुदा सिखेबै जरूर।

आठ बजे गामक सीमामे बरियाती प्रवेश कऽ गेल हमहूँ सभ साकांच रही। दरबज्जापर पहुँचते स्वागतक संग बैसारक कार्यक्रम शुरू भेल। दाय-माय वरकेँ अरिआति आंगन लऽ गेलीह। बरियातीक बीच प्लेटमे फ्राइ कएल मखान पहुँच गेलनि। दुनू समाजक (बरियाती-घरवारी) बीच मखानक मिठासक संग गप-सप्प शुरू भेल। गाममे कते सार्वजनिक स्थल...., कोन-कोन शिक्षण-संस्थान...., अस्पतालक की स्थिति...., गाममे कते किसान परिवार....., कते नोकरिहारा....., जोतसीम जमीन कत्ते...., बोरिंगक संख्या कत्ते....., खेतीसँ अलग कारोवारी परिवार कत्ते....., कते परिवार गामसँ पड़ाइन कऽ रहला अछि आ कते दोखतरीपर आबि-आबि बैस रहला अछि....। बड़ी जुमा कऽ महावीर जी लंकासँ आम फेकने रहथि से ने तँ खास भेल अछि। मुदा किछु गोटेकेँ भाँगक मातल मनमे उठए लगलनि जे मखानोक लाबा पानिये पीब भेल। ओ तँ अपने जिनगी भरि पानियेमे रहल अछि तँ तइमे नीक जे दू घोंट

बेसिये कऽ पानि पीब लेब। बिना मुंगबे मन थोड़े मानत। पेटेटा भरने नै ने होइ छै, मनो ने भरक चाही। मुदा फेर मनमे उठनि जे अखन कोनो उसरि गेल।

अंगनाक ओसारपर बैस हिरदय काका आँखि खिरा-खिरा तकैत तँ देखैत पाँचो बेटीक सिनेह। जेठकी बहीन माइयक पीठपर अंगनाक चीज-बौसकेँ उठा-उठा घरमे रखैत तँ घरसँ निकालि आंगनमे रखैत। मझिली तँ चारू वहिनक लेधे-गोधक आइ-पाइमे भिनसरसँ अखैन धरि लागल अछि सझिलियेकेँ की कहबै, बेचारीकेँ लगले हाथमे नीपौन देखै छी तँ लगले सिनुर-पिठार। चारिमकेँ तँ गीतिहारियेक आगू-पाछू करैत-करैत नाको-दम भेल छै। घुमैत नजरि हिरदय कक्काक बेटी-जमाएपर गेलनि। ओना देखिये कऽ केने रहथि ते देखैक ओ रूप नै। देखैक रूप रहनि मौलाइल गाछक पोनगल सरारिमे खिलैत फूलकेँ। हारल मनुष्यक जीत। जे कहियो कन्यादानकेँ उच्च कोटिक श्रेणीमे गनल जाइत छल ओ आइ समाजमे बेटियाह वंश बुझि वियाहसँ वंचित भऽ रहला अछि वाह रे हमर समाज।

हम अपना काजक पाछू तबाह। पच्चीसो काजकर्तापर मलेटरीक नजरि। तीन कदम आगू तँ एक कदम पाछु भऽ सावधान। ओना अगुआएल-पछुआएल बरियाती समयेपर गाममे प्रवेश कऽ गेल छलाह मुदा समाजक दरबज्जापर जहाँ-तहाँ छिड़िआएल। दू-चारि मिल-मिल अड्डा जमौने। जै पाछु एक-एक काजकर्ता लागल। ताड़ी जकाँ तँ इंग्लीसक गोष्ठी नमहर नै ने होइत अछि रंग-विरंगक पीनिहार रंग-विरंगक वस्तु।
साढ़े नअ बजे बरियाती भोजन कऽ ओछाइन पकड़ि लेखा-जोखा करए लगलाह। हराएल-बरियातीक खोज शुरू भेल। साढ़े दस बजे घरवारी बरियातीक बीच समझौता भेल जे जते समए आगू बढ़ि गेल ओइसँ पैछलाकेँ छोड़ि भोजने हुअए। सएह भेल। मुदा कमाल भऽ गेल। भोजन शुरू भेल पेशाव करैले उठब शुरू भेल। पेशाब खोलैबला दवाइ पानिमे मिला टीपि-टापि कऽ दस गोटेकेँ पीया देल गेल। एक गोटेकेँ देख छोड़ि देलौं, दोसरोकेँ छोड़ि

देलौं। मुदा जहिना चुट्टीक धारी चलैत तहिना जखैन शुरू भेल आकि बुढ़हा झामलाल सबहक बीच जा कहलियनि जे अखन धरि घरबैया समाजसँ कोनो तिरोट भेल हुअए से कहूँ? एक्के-दुइये पान-सात गोटे उपदेश दैत बजलाह- ''अखन जे हवा-बिहाड़ि उठि गेल अछि तइमे अहाँ लोकनिकेँ धन्यवाद दैत छी। हमहूँ सभ यएह गप करै छलौं जे गणेश जीक भक्त सभने छेनाक मिठाइ खाए छथि मुदा ओ तँ अखन धरि लड्डूए खाइ छथि। जुग बढ़ि गेने लोको उधिया जाएत। जे सुआद खाजा-मूंगवाक अछि ओ डिब्बाबला रसगुल्लाक हएत। ओ तँ भाँज पुराएब छी।' कहलियनि- 'जाधरि अपने लोकनि ऐठाम छी ताधरिक नीक-अधलाहक जबावदेह घरवारी हेताह मुदा अहाँ सभ जे उकठ करब, तहन.....।' की भेल, की भेल? दोसर वरियाती सबहक छिछा-बीछा चलि कऽ देखियनु? वामा करे पड़ि जे जाँघ कुड़ियबैत रहथि से उठले ने होइन। मुदा कासपरक दहीक ढकार फुर्ती आनि देलकनि। सभ कियो उठि दोसर पंडालमे पहुँचलाह तँ देखलनि जे एना किए रेलबे स्टेशनक टिकट खिरकी जकाँ दुनू दिसक पाँती लागल अछि। मुदा से दसे-बारहे गोरेकेँ देखै छी। खेवा-पीबाक वस्तुमे जँ किछु गड़वड़ी रहितए तँ यहागंजा होइतै। सेहो ने देखै छी। एक-दोसरसँ आँखि मिला प्रश्न पुछैत तँ मूड़ी डोला जबाव भेटनि। मुदा किछुओ दोख जाबे ककरो नै अछि ताबे एना भऽ किए रहल अछि। आन ठाम कहाँ भेल। मुदा बिना आधारे कोनो बात मानियो लेब से उचित-नै। आमपर फेकल गोला जकाँ जे लागियो सकैए आ हुसियो सकैए। इम्हर आराम करैले सेहो मन कछमछाइन। दोहरौलिएनि- 'जँ अपने लोकनि समाजक सीमा रेखा तोड़ि घिनबए चाहब तँ समाजोकेँ ई अधिकार बनै छै जे सीमाक सिपाही जकाँ अपन मातृ भूमिक रक्छा करए।' कबछुआ जकाँ भकभका कऽ तँ लगलनि मुदा घिनबैक कारण बुझबे ने करथि। खिसिया कऽ एकगोटे बजलाह- 'कोन-कहाँ बोतल पीब-पीब बरयाती औताह आ सभ किछु (समाजिक गुण)केँ खेने-पीने चलि जेताह। एको क्षण ई सभ जीबै नै देताह।' कहि छोटका भाएकेँ कहलखिन- ''बौआ, जिनका जे मन फुड़तनि से करताह। अपन इज्जत-आबरू अपना हाथमे लऽ चलह।'' एक्के-दुइये ससरि-ससरि घरमुँहा हुअए लगलाह।

::::::::::

१२ अर्द्धांगिनी

आने दिन जकाँ लालकाकी घर-आंगन बहाड़ि बाढ़निकेँ कलपर धोए पछबरिया ओसार लगा ठाढ़ केलनि। हाथ-पाएर धोअल बुझि नजरि फूल तोड़ैपर गेलनि। ओना एहन नियमित लालकाकी छलीह जे जहिना खर लगा पेटीमे कपड़ा लगौने छथि तहिना दिन भरिक काजोक छन्हि। मुदा मन पाड़ैक जरूरत ऐ लेल रहि जाइत छन्हि जे पढ़ुआ काका (पति) गाममे छथि आकि नै? गाममे रहने किछु काज बढ़ि जाइत छन्हि आ नै रहने कमि जाइ छन्हि। गामेमे रहने फूल तोड़ब बुझलनि। ओसारक खुट्टीसँ फुलडाली उताड़ि कल दिस बढ़लीह। कलक बगलेमे रंजनी गंधापर हाथ दैते छलीह आकि नजरि अपराजित दिस बढ़लनि। मेल-पाँच करैक विचार सोचैत रजनीगंधासँ अपराजित दिस बढ़लीह। अपराजित तोड़ि चम्पापर हाथ बढ़ौलनि। आँखि पड़लनि फुलडालीक फूलपर। फुलडालीक फूल देख विचारलनि जे पाँचटा बेलामे सँ निकालि लेब। चम्पासँ आगू बढ़िते छलीह आकि नजरि पतिपर गेलनि। पतिपर नजरि पड़िते मन दुखाए लगलनि। ककरा नै इच्छा होइ छै जे पतिक संग एयर कंडीशन गाड़ीमे बैस सराफा बाजार जाए हीरा-मोतीसँ सजल सोनाक हाड़ गारामे लटकवितौं। मुदा तेहेन भेलाह जे जखैन सरकारी दरमाहा भेटए लगलनि आ कहलियनि जे साइकिल कीन लिअ। सुभितगर हएत, तँ कहलनि जे चालीस-पैंइतालिसक भऽ गेलौं, हड्डी जुआ गेल जँ खसि-तसि पड़ब आ टूटत तँ केतबो पलस्तर करब तैयो ने जुटत। तइमे नीक पएरे। कहलनि एक मानेमे नीक। मुदा तैयो ढोढ़क बीख जकाँ हड़हड़ा कऽ नै उतड़लनि। मन गेलनि दोसर दिस। सभटा पोथी बरखामे भीज-भीजि सड़ि गेलनि, जखैन घर चुबै छलनि तखन जँ सड़िये गेलनि तँ ऐमे अपन साध की। मुदा जखैन घर बनौलनि तखन किए ने फेर कीनलनि। जै घरमे पोथी नै रहत ओ घर केहेन हेतै। क्रोध कमलनि। क्रोध कमैक कारण भेलनि अपन काज मन पड़ब। पाँच बजे भोरसँ ओछाइनपर जाइकाल धरि ककराले करै छी, परिवारे लए ने। फेर तामस मुड़ि गेलनि, कहैले आठ घंटा डयूटी करै छथि चारि घंटा बॉटेमे लगै छन्हि, अधा काज जे सम्हारि कऽ नै रखबनि

तँ पारो ने लगतनि। एहेन पुरूखे की जे अपन जिनगी अपनो हाथमे रखि नै चलैत? फुलडाली रखिते मनमे एलनि, एक विहीत काज भऽ गेल। चुल्हि लग बइसैमे अखनो बहुत बाकी अछि हड़बड़ा कऽ घर-निप्पा उठा ओसारपर पूजा ठाँउ कए चुल्हि-चिनमार दिस बढ़लीह। घर-निप्पा रखि अर्घा-सरायसँ लऽ कऽ थारी-लोटा लेने कलपर पहुँचली। कलपर सँ आबि लालकाकी घड़ी दिस देखलनि। अखन तक समए आ काजमे तल-वितल नै देख मनमे खुशी भेलनि। नजरि पतिपर गेलनि। कीड़ी आँखिमे पड़ने जहिना कड़ुआ जाइत तहिना मन कड़ुआ गेलनि। बुदबुदेलीह- “एकटा काजपर तवक्कल रहने घर आगू मुँहे ससरत?” फेर मनमे एलनि आन दिन जकाँ जारन सुखाएल नै अछि। भानसमे देरी लागत, से नै तँ पानि चढ़ा चुल्हि पजारि लै छी। चुल्हि पजड़ल रहत तँ कनी देरियो लगने समैपर भऽ जाएत। बाड़ी पहुँच पतरका जारन सभ बीछ कऽ चुल्हि लग रखलनि। चुल्हि पजारि बरतन चढ़ा तरकारीक मुजेला आ कत्ता नेने चुल्हि लग आबि काटि-काटि थारीमे रखए लगलीह। साढ़े आठ बजे साँस छोड़लनि। आगिमे सेकल देहो हल्लुक बुझि पड़लनि। मनमे एलनि- ऐसँ बेसी सेवा की भऽ सकै छै। फेर मन पतिपर गेलनि। उमकि कऽ मन कहलकनि- आरो जे हुअए मुदा भगवान जिद्दीयाह पुरूखक संग जोड़ा लगौलनि। हृदए विहुँसि गेलनि। ‘जै मर्दकेँ आनि नै आ जै बड़दकेँ पानि नै’ ओ अनेरे गाम धिनबै लए किए जीबैए। मन पड़लनि दुरगमिनया पीढ़ी। जहिना बाबू सत्पुरनि खोधाएल कटहरक पीढ़ी देलनि आइ धरि ओइपर बैस भोजन करै छथि। थारी साठि लाल-काकी पंखा नेने छोटकी पीढ़ीपर बैस बनौल विन्यासक सुआद बुझैक लेल पढ़ुआ काका दिस देखए लगलीह। मगन भऽ पढ़ुआ काका भोजन करए लगलाह। शरीरांगक (देहांगक) सिरखार देख लालकाकी सिकुड़ गेली। मुदा भोजन काल जे बजबे ने करताह हुनका कहलो की जाए। चुप्पे रहलीह।

कपड़ा पहीरि पढ़ुआ काका घरसँ निकलिते रहथि आकि आंगनमे पनबट्टी नेने पत्नीकेँ ठाढ़ देखलनि। पत्नीक काज देख मन मानि गेलनि जे सिपाही जकाँ छथि। मनमे खुशी एलनि। पान खा आगू-आगू पढ़ुआ काका आ पाछु-पाछु

लालकाकी आंगनसँ निकलि डेढ़ियासँ आगू सड़क धरि एली। सड़कपर आबि पढ़ुआ काका पुछलखिन- “किछु कहवो अछि?”

लालकाकी- “अपन तनदेही राखू।”

दुनू गोटे दुनू दिस विदा भेला। मुसकुराइत पढ़ुआ काका एक डेग आगू बढ़ि पाछु घुरि कऽ देख डेग तेज करैत आगू बढ़लाह। नाकमे सुरसुरी लगलनि। भेलनि जे छीक्का हएत। वामा हाथसँ नाककेँ सहलबए लगलाह। मुदा सुरसुरियो अपन चालि छोड़ैले तैयार नै। हाथ निच्चाँ करिते धियान पत्नीक शब्द ‘तनदेही’पर गेलनि। पत्नीक मुँहसँ निकलल शब्द विशारद पास पढ़ुआ काकाकेँ ओझरा देलकनि। फेर घुरि पत्नी दिस तकलनि तँ देखलनि जे सड़कसँ आंगनक घुमौन भौकपर पहुँच गेल छलीह, तँए आँखिसँ अढ़ भऽ गेलीह। कोकिलक कंठसँ निकलल शब्दक तरंग पढ़ुआ काकाकेँ ठेलने-ठेलने, तन आ देहीपर लऽ गेलनि। तन-देह। शरीर आ शरीरी। देह आ देही। मुदा एहेन चंदन जकाँ झलकैत शब्द हुनका एलनि कतऽ सँ। हम तँ कहियो अपन सीमाक अल्लंघन नै केलौं। अपन ज्ञान घरक सीमासँ बाहर बँटलौं। हुनका अखन धरि किछु देलियनि कहाँ। मुदा शब्‌द तँ शब्द जकाँ अछि किए ने बजनिहारियेसँ पूछि लियनि। ओहो तँ आन नै अर्द्धांगिनीये छथि। घरसँ बहार धरि बनल रहैक लेल दुनूक सहयोग तँ बराबरे अछि। एक सीमाक भीतर ओ एक सीमाक भीतर अपने। अपने तँ कमा कऽ विनु गनले रूपैया हाथमे दऽ दै छियनि। मुदा ओइ रूपैयाकेँ नचबै तँ वएह छथि। पिताक देल दसो बीघा जमीनकेँ तँ सेहो वएह नचबै छथि। मुदा जते दुनू गोटेक भीतर झकैत छलाह तते हटल-हटल बुझि पड़नि। मन बौआ गेलनि जे पति-पत्नीक, पुरूष-नारी आ स्त्री-स्वामीक बीच केहन संबंध हेबाक चाही। मुदा विचारमे समझौता भऽ गेलनि। किए ने दुनू गोटे विचारि कऽ परिवारकेँ ससारी। मनमे खुशी एलनि। गामक सीमो टपि गेलाह। विद्यालयक मुरेड़ापर नजरि गेलनि। सबुर भेलनि जे पहुँच गेलौं। तीस-पैंइतीस सालक अभ्यास तँए थकान नै बुझि पड़नि मुदा.......।

विद्यालय भवनक सीढ़ी, जइठाम ओसारपर चपरासी बैसैत। सीढ़ीसँ एक लग्गी पाछुए पढ़ुआकाका रहथि आकि चपरासी उठि कऽ ऑफिस दिस विदा भेल। जे कक्को देखथि। सीढ़ी लग पहुँच आगू तकलनि जे चपरासी घुरि कऽ अबैए आकि नै। मुदा नै देख काकामे पौरूष जगलनि। मनमे उठलनि अखन तँ सेवा निवृत्तो नहिये भेलौंहँ, तहन किए अनकर सेवा लेवा लेल मुँह ताकब। सीढ़ीसँ उपर तँ चढ़ि गेलाह मुदा सीढ़ीक ओ प्रश्न जे पछुएने अबै छलनि आगूसँ घेर लेलकनि। जे (चपरासी) बाबा कहैए, ऑफिसोक सभ भैये, काका कहै छथि मुदा की से कहने शरीरक शक्तियो घटि-बढ़ि सकैए। जँ से नै तँ परिवारमे किए कहल जाइए। नजरि ठनकलनि, अगर बीस बर्खक आधार बना देखै छी तँ उम्र दोबराइत जाइए। उमरे तँ शरीरक शक्तिकेँ घटबै-बढ़बैए। मन हल्लुक भेलनि। मुदा चपरासीक बेवहारसँ मन खटाएले रहलनि। हवा उठि चुकल छल जे आइ चारि बजे पढ़आ काकाकेँ सेवा-निवृत्तिक चिट्ठी भेटतनि। विद्यालयक वातावरणमे सोग पसरि गेल छल।

स्टाफ रूम पहुँचते एक नै अनेक तरहक खटका खटकए लगलनि। आन दिनसँ बेवहारो बदलल। मुदा चपरासीबला बेवहार बेसी मनकेँ हौंड़ैत रहनि। कुरसीपर बैसते मनमे उठलनि। मुदा तह दैत मनसँ हटौलनि। शिक्षक सबहक बीच गप-सप्पक क्रम सेहो बदलल-बदलल बुझि पड़नि। किछु व्यंग्यबातसँ क्रमकेँ बदलौ चाहथि तँ ओहन बेवहारे नै छलनि। चालिसँ थाकल रहबे करथि आँखि झल-फलाए लगलनि। गमे-गम नीनो आबि गेलनि। अलिसा कऽ आँखि मूनि लेलनि। आँखि मूनल देख इशारामे उतरीक चर्चा हुअए लगल। मुदा पढ़ुआ काकाक आँखि बन्न तँए किछु बुझबे ने करथि।

दू बजि गेल। अढ़ाइ बजे ट्रेन, तँए स्टाफ सबहक बीच चिल-मिलक कुचकुची जकाँ, देह-हाथ चुल-चुलाए लगलनि। कुरसीक पौआ सबहक अवाजसँ पढ़ुआ काकाक भक्क खुजलनि। बैग लऽ संगी सभ निकलैक उपक्रम करए लगलाह आकि ऑफिसक बड़ाबाबू आबि कऽ काकाकेँ कहलकनि- ‘‘अपनेक पत्र अछि। जे चारि बजेमे देल जाएत, तँए अपने चिट्ठी लेलाक बादे प्रस्थान करबै?’’

कहि ऑफिस दिस बढ़ि गेलाह। ठाढ़े प्रणाम कए कऽ संगियो सभ निकलि गेलनि। पिजरामे बन्न सुग्गा जकाँ पढ़ुआ काका असकरे कोठरीमे बैसल। बड़ाबाबूक भाषापर नजरि गेलनि। आन दिनक जे बोली रहैत छलनि ओइमे किछु कडुआहट बुझि पड़ि रहल अछि। भषे नै अखने की देखलौं? काल्हि धरि सहयोगी सभ अरिआति कऽ पहिने विदा कऽ दैत छलाह तेकर वादे कियो जाइत छलाह। नौकरीक एहसास भेलनि। जहिया विद्यालयमे सेवा करए एलौं तहिया बच्चा (विद्यार्थी) सभसँ की संबंध छल। एकठाम खेनाइ, एकठाम रहनाइ आ एकठाम बैस पढ़ौनाइ। पानि पीवाक इच्छा होइत छलए आ बजै छलौं तँ पानि अननिहारक होड़ लगि जाइत छलए। जे पहिने लोटा पकड़ि पानि अनै छलै ओ अपनाकेँ कुशाग्र बुझैत छलै। मुदा आइ की देखै छी शिक्षकक आगूमे छात्र सिगरेटक धुँआ उड़बैत अछि। केना एहेन रोगक प्रवेश शिक्षण-संस्थानमे भेल? जहियेसँ विद्यालय सरकारीकरण भेल तहियेसँ विद्यार्थी पतराए लगल। ओना गाम-गाममे स्कूलो खुजल आ पढ़बैक रूप सेहो बदलल। होइत-हबाइत छात्र-विहीन विद्यालय भऽ गेल। ओना महीनवारी बेतनो नीक बनि गेल। मुदा ओहूमे कमी रहल। महीने-महीना नै भेट सालक चुकती सालमे हुअए लगल। अखन धरि नोकरीकेँ नोकरी नै अपन काज बुझै छलौं मुदा आइ बुझि पड़ि रहल अछि जे कतौ बंधनमे जरूर फँसल छी।

चारि बजिते ऑफिसक बड़ाबाबू ऑफिसक स्टाफक संग, पढ़ुआ काका लग आबि हाथमे चिट्ठी दैत हस्ताक्षर करैले बही आगू बढ़ा देलखिन। जहिना रजिष्ट्री ऑफिसमे हस्ताक्षर केने परिवारक सम्पत्ति टुटैत तहिना पढ़ुआ काकाकेँ नौकरी टुटि रहलनिहँ। हस्ताक्षर करिते पढ़ुआ काका हतास भऽ गेलाह। मनमे उठलनि सभ किछु हड़ा गेल। जत्ते पढ़ने छलौं ओइमे सँ पहिने ओते हड़ाएल जेकर उपयोग नै भेल। जेहो किछु बँचल ओ विद्यार्थी हरेलासँ हरा गेल। जे किछु जीबैक आशा बँचल छल ओहो हड़ा गेल। की हम ऐठामसँ उठि सोझे असमसाने जाएब आकि......। मन पड़लनि अपना संग किनको हाथो पकड़ने छियनि किने? दू प्राणीक जिनगी केना चलत? कहैले पेंशन भेटत मुदा पेंशन पेबामे जे लेन-देन छै ओ हमरा बुते कएल हएत। अखन धरि, जहियासँ

सरकारी दरमाहा भेटए लगल तहियासँ ऑफिसक बड़ाबाबू आनि कऽ हाथमे जे दै छलाह ओ चुपचाप जेबीमे रखि पत्नीक हाथमे दऽ दै छलियनि। मुदा जेना सुनै छी तेना हमरा बुते कएल हएत। जिनगीक एक्रोटा ब्रत निमाहै जोकर नै छी। द्वनद्वमे छाती दलकए लगलनि। तै बीच चपरासी आबि कहलकनि- ‘‘कोठरी बन्न करब, अपने प्रस्थान करियौक।’’ अर्द्धचेत अवस्थामे पढ़ुआ काका कोठरीसँ निकलि पताइत डेगे ओसारपर एला। डेगे ने उठनि। कहुना-कहुना सीढ़ी लग आबि ओङठि कऽ बैस गेलाह। अर्द्धचेत मनमे विद्यालयक चिट्ठी एलनि। जेबीसँ निकलि पढ़ए लगलथि। सूचना देल जाइत अछि तेसर मासक अंतिम तिथिसँ सेबा-मुक्त होएब। निचला पाँति पढ़ौ नै लगलथि, मचोड़ि-सचोड़ि चिट्ठीकेँ सीढ़ीक आगूमे फेक लहरैत मने उठि कऽ विदा भेलाह। मुदा जहिना नदीक किनछड़िक पानिमे पैसैसँ माल-जाल पाछु पाएर करैत तहिना पढ़ुओ काकाक पाएर आगू-पाछु हुअए लगलनि। मनक लहरिसँ पाएर तनेलनि। आगू बढ़ए लगलाह। विद्यालयक फाटक (गेट) लग पहुँच पाछु धुरि तकलनि तँ बुझि पड़लनि जे जना खंडहर ठाढ़ अछि। मात्र ईंटा-सिमटीक जोड़ल घर। मुदा क्रोध चढ़ले रहनि। फुरेलनि, जहन जीबैक सभ रास्ता बन्न भए रहल अछि तहन मरैयोक तँ ढेरी उपाए अछि मुदा ओ तँ अपराधक श्रेणीमे औत। जीबैले अपराध कए कऽ कियो मृत्यु प्राप्त करैत अछि मुदा मृत्युले अपराध.....।

बीच रस्तापर आबि क्रोधक लहरिमे आरो ओझरा गेलाह। मुदा मनमे हुबा जगलनि। फुरेलनि, जहन विद्यालय अकाजक श्रेणीक सर्टिफिकेट दइये देलक तहन एक्रेटा उपाए अछि जे जिनकर हाथ पकड़ि भार नेने छियनि हुनक लग पहुँच कहिएनि जे अखने दुनू प्राणी हरिद्वारक रास्ता धड़ू। छोड़ू ऐ घर-दुआरकेँ। ओतै कोनो मंदिरक पुजेगरी बनि जाएब आ शिवजीक शरणमे रहि हुनको महेशवाणी सुनब आ अपनो नचारी कहबनि। डमडूओ बजाएब आ हुनके जकाँ नचवो करब। तखने एकटा छुछुनरि दहिना भागसँ बामा भाग छुछुआति टपैत रहै आकि भक्क खुजलनि। ताबे छुछुनरि ससरि कऽ बामा भाग पहुँच गेल। मनमे शंका भेलनि जे छुछुनरि पाएरमे काटि लेलक। झुकि कऽ

तर्जनीक नहसँ टोबए लगलथि। छोटकी चुट्टीक बीख जकाँ बिस-बिसेलनि। मन मानि गेलनि जे छुछुनरि काटि लेलक। सोझ भऽ चारू भाग हियौलनि। काजक बेर रहने सभ छिड़िआएल रहए। रास्ता खाली। विद्यालय दिस तकलनि। सभ चलि गेल छलाह। मनमे एलनि छुछुनरिक बीख तँ अपनो झाड़ए अबैए। मनमे खुशी एलनि। मुदा लगले मन बदलि गेलनि। अपन बीख अपना बुते कहाँ झरैत अछि तँ की ऐठाम पाएर पटकि कऽ मरि जाएब आकि जतऽ मनतरिया भेटत ओतऽ जाँच करा लेब। ताधरि अपने मंत्रसँ काज चलाएब। मंत्र पढ़ैत... सैयाँ-निनाबे....दू एक।

मंत्रकेँ चारि चरणमे वाँटि, एक चरण पढ़ि मुँहसँ फुकि दथि। अबैत-अबैत गामक सीमापर पहुँच गेलाह।

परिवारक पहिल पीढ़ीक विशारद पढुआ काका। किसान परिवार। दस बीघा खेती। लाल काकी सेहो किसाने परिवारक। खेतीक सभ लूरि माए-बाप सिखा देने रहनि। किसाने परिवार देख लाल काकीक पिता कुटुमैती केलनि। ओना पढ़ल बर पाबि दुनू प्राणीक हृदए जुरा गेल रहनि जे लछमीक संग सरस्वतीयो छन्हि।

जहिना एकटा सीमा टपने एसिया-यूरोपक दू तरहक सभ कुछ भेटैत, तहिना पढुआ काकाकेँ सीमा पर अबिते बुझि पड़लनि। साओनक मेघ जकाँ मनमे टोपर बान्हि देलकनि। पानि जकाँ बुद्धि पसरि गेलनि। जीबित छी आकि मुइल से होशे ने रहलनि। थुस दऽ बैस रहलाह। मन पड़लनि अकाजक हएब। दुनिया तँ काज करैबलाक छी। की मृत्यु सय्यापर सजि जाइ? जेहो कनी-मनी आशा पेंशनक होइत सेहो नहिये हएत। जिनगीमे कहियो जै हाथसँ घुस नै देलौं ओतनो नै निमाहल हएत। मुदा ब्रत तँ जिनगीक पाशापर बैसल अछि मन राँइ-बाँइ भऽ फाटि गेलनि। पहाड़क झरनासँ झहरैत पानि जकाँ नोर हृदए दिस बहि गेलनि। हृदए पसीज गेलनि। मन पड़लनि अर्द्धांगिनी। चालीस बर्खसँ संग रहनिहारि, जे बृत्ति अछि, ओइसँ हटल राखैमे ककर दोख भेल? की हम हुनका साँझो-भोर पढ़ा नै सकै छलियनि। जँ से केने रहितौं तँ

जिनगी बेलाइग किए होइत? जिनगीक सुख-दुख संगे भोगितौं। दू मिल करी काज हारने-जीतने कोनो ने लाज। माटिक मुरूत बना घरमे छोड़ि देलियनि। अपनो एते होश नै केलौं जे सए बर्खक जिनगीमे अधडरेड़ेपर कानून अकाजक घोषित कऽ देत। शेष जिनगी केना चलत? अपनो नै छोटोटा स्कूल बनेलौं जइमे जिनगी भरि सेवारत रहितौं। निराश मनमे सासुर मन पड़लनि। वियाहमे जे जमाए रूसैए से कोन दादाक कमेलहाले रूसैए। मुदा सासु मन पड़िते मन मधुआ गेलनि। जँ लोक सासु लग नै रूसि अपन मनोकामना पूरा करत तँ कतऽ करत? आरो मन पघिल गेलनि। हुनके देल ने कामधेनु पत्नी छथि। मुदा फेर मनमे उठलनि जे रूसवो तँ कते रंगक होइए। बचकानी आ सियानी रूसव एक्के रंग केना हएत। तत्-मत् करैत विचारलनि जे सियानी रूसवसँ शुरू करब आ जते निच्चाँ धरि सुतरि जाएत तते निच्चाँ धरि आबि अटकि जाएब। फुड़फुड़ा कऽ उठि घर दिस विदा भेलाह। चारू भर चकोना होइत जे कियो देखे नै। मुदा से सुतरलनि। घरपर आबि हाँइ-हाँइ कऽ चौकीपर पड़ि गुम्हड़ि कऽ बजलाह- ''ई घर मनुक्खक रहैबला छी, एम्हर मकड़ाक झोल लटकल अछि ते ओम्हर विढ़नी छत्ता लगौने अछि।'' कहि रूसि कऽ सिरहौनीपर मूड़ी रखि आँखि तकिते सुति रहलाह। बाड़ीमे काज करैत पत्नी अबैत देख नेने रहनि। हँसुआ-खुरपी बाड़ियेमे छोड़ि आङन दिस बढ़लीह तँ किछु अवाज बुझि पड़लनि मुदा नीक नहाँति नै बुझि सकलीह। ओना पढ़ुओ काका मुँह दाबिये कऽ, लोकक दुआरे बजैत रहथि। दोहरा कऽ फेर तरसँ गुम्हरैत बजलाह- ''एहेन-एहेन घरमे मरितो रहब तँ कियो खोजो-पुछाड़ि करैबला अछि।''

पढ़ुआ काकाक बात लाल काकी बुझि गेलखिन जे कतौ किछु भेलनिहें। दू बीघा हटल अबाजमे लालकाकी बजलीह- ''एलौं।''

'एलौं' सुनि पढ़ुआ काकाकेँ सबुर भेलनि। लाल काकी मने-मन सोचैत जे पुरूखक लटारम की धमना लटारम्भसँ कम होइए जे लगले सोझराएत। अच्छा कनी बौस कऽ शान्त कऽ देबनि। माल-जाल अबैक बेर अछि करजानमे उपद्रव करत। सएह केलनि।

पत्नीक अबाज सुनि पढ़ुआ काकाकेँ छाती दहलि गेलनि। नाङड़ि सुरैर कऽ विद्यालय घर धड़ौलक। कतौ के ने रहलौं। मन गरमेलनि। बमकि कऽ बजलाह- “काल्हिये विद्यालय जा कऽ लिख कऽ दऽ देबै जे आइयेसँ छुट्टीमे जा रहल छी। मन हुअए तँ मनिआर्डर कऽ रूपैया पठा दिअ नै होइ तँ नै पठबऽ।” मुदा लगले मन थलथला गेलनि। जना माटि पानिमे मिल भऽ जाइत। एना पाइयक खेल किए भऽ रहल अछि। विद्यालयक शिक्षक होइक नाते ऐ खेलकेँ किए ने बुझि रहलौंहेँ। आकि अर्थशास्त्र पढ़बाक अभाव रहल?

लग अबिते लाल काकी बजलीह- “चूड़ा भूजि, नोन-तेल-मरीच मिला कऽ रखने छी नेने आएब?”
लाल काकीक बात सुनि पढ़ुआ काकाक मन मचकी जकाँ झुलए लगलनि। मुदा आससँ दोसर दिस भऽ गेलनि। खिसिया कऽ बजलाह- “हूँ। चूड़ा-तूड़ा नै खाएब। रक्खू अपन चूड़ा-तूड़ा।”
मुस्की दैत लाल काकी उत्तर देलखिन- “हमरे छी अहाँक नै छी?”
पत्नीक बात सुनि मन सिहरि गेलनि। बेरूका सूर्जक रौद जकाँ पढ़ुआ काकाक गरमी कमलनि। बजलाह- “एकटा गप कहए चाहै छी?”
“भरि-भरि राति तँ गप्पे सुनलौं। अखन हाथ धुराएल अछि। हाथ-पाएर धोने अबै छी तखन अंडी तेलसँ घुट्ठियो ससारि देब आ गिरहो फोड़ि देब। मन हल्लुक भऽ जाएत। सदति काल कहैत रहै छी जे मोटर गाड़ी लऽ लिअ। अरामसँ जाएब-आएब। से हम्मर गप थोड़े सुनब। तैकालमे कहब जे मौगी-मेहरीक गप छी।”
लाल काकीक गप सुनि पढ़ुआ काकाक मन आगिमे पकैत भट्टा जकाँ असुआ गेलनि। लजबीजी जकाँ दुनू पीपनी सटि गेलनि। कल पड़ल रोगी जकाँ लाल काकी बुझि सहटि कऽ निकलि ठोकले बाड़ी पहुँच गेलीह।

पिताक देल जमीनकेँ पढ़ुआ काका बिसरि गेलाह। खाली गाछी-बँसबारिटा धियानमे रहलनि। किसानक बेटी लाल काकीकेँ खेतीक सोलहो आना लूड़ि। अन्नक खेती बटाइ लगा लेने छथि, पाँच कट्ठा चौमास आ गाछीक सेवा टहल

अपने करै छथि। दूटा गाइयो पोसिया लगौने छथि। जइसँ सुभ्यस्त भोजन भेट जाइत छन्हि। पक्का घर बना सभ बेवसथो केनहि छथि।

हँसुआ, खुरपी, कोदारि आङनमे रखि लाल काकी झाडू लऽ कऽ आङन बहारि, कलपर पाएर-हाथ धोइ पानि पीबते रहथि आकि मन पड़लनि पतिक रूसव। फेर मन पड़लनि अपन जिनगी। जाधरि माए-बाप लग रहलौं बच्चा रहलौं। दुनू गोटेक इच्छा सदति काल यएह रहनि जे धिया-पूता कखनो कानए नै। तहिना तँ सासुर एलाक बादो भेल। बूढ़ी (सासु) सदति काल कहैत रहै छलीह जे कनियाँ अंगनाक मालिक स्त्रीगणे होइत छथि। तँए अंगनकँ, वियाहक मड़वा जकाँ सतरंगा फुल लटकौने रही। यएह मिथिलाक धरोहर छी। एहेन कनियाँक कमी नै जे बेटा-बेटीसँ लऽ कऽ सासु-ससुर होइत पति धरिक दुखकँ अपन दुख बुझि सती धर्मक पालन करैत एलीह- सावित्री, दमयन्ती। कडुआ कऽ किछु कहब उचित नै। तै बीच दरबज्जा परक अवाज सुनलनि। ''हे भगवान, जानह तूँ।''
मने-मन पढ़ुआ काका अपने संबंधमे सोचैत रहथि। आमोक गाछी तेहन अछि जे एक तँ दू मासक भोजन, तहूमे सभ साल नहिये। गोटे साल मोजरबे ने करैत, तँ गोटे साल बिजलोकेमे मोजर जरि जाइत। गोटे साल बिहाड़ियेमे, आमक कोन बात जे गाछो खसि पड़ैए। गोटे साल तेहन दबाइ रहैए जे मोजरेकँ जरा दैत अछि। हुन्डा-हुन्डी पाँच बर्खपर दू मास आम भेटत तइमे जीब सकै छी, बाकी.....?

दरबज्जापर लाल काकीकँ अबिते पढ़ुआ काकाक टूटल मन कलपि उठलनि। गोरथारीमे बैस लाल काकी बजलीह- ''पाएर सोझ करू।''
लाल काकीक बात सुनि, जहिना तारक कम्पन्नसँ वीणाक स्वर बनैत तहिना पढ़ुआ काकाक बोल निकललनि- ''पाएर नै टटाइए, हृदेक व्यथा छी।''
पतिक बात सुनि फड़कि कऽ चौकीपर सँ उठि लाल काकी मधुआएल स्वरमे बजलीह- ''साँचे स्त्रीगण सबहक मुँहे सुनै छी जे पुरूख नङर-कट होइ छथि। कुत्ता जकाँ सदति काल नाङरि टेढ़े रहै छन्हि।''

“जे बुझी।”

“तँए कि स्त्रीगण अपन पतिकेँ मुइल कुकुड़ जकाँ टाँगमे डोरी बान्हि घिसिया कऽ बँसबीट्टीमे फेक आओत।”

“चौकीपर सँ उठलौं किए? डाँड़ सोझे बैसू। बामा हाथ तँ दुनू गोटेक एक्के वृत्त करैत तँए बामा हाथपर हाथ रखि दहिना हाथसँ छाती सहला दिअ।”

पढ़ुआ काकाक व्यथा सुनि लाल काकीक मन कानि उठलनि। जाधरि ओछाइनोपर पड़ल रहताह ताधरि..... सत्ती साध्वी तँ.....।

चौकीपर बैसते पढ़ुआ काका आँखिमे आँखि मिला कहलखिन- “सब अंगक दूरी समान अछि। विधाताक बनाओल जिनगीक आधा भाग अहाँ छी।”

“अहाँ छी।”

पढ़ुआ काकाकेँ मन पड़लनि छठियारीक बात। आनन्द-मग्न होइत पत्नीकेँ कहलखिन- “भारी भूल भेल जे आहाँसँ भरि मन कहियो जिनगीक गप नै केलौं। जेकर प्राश्चित अहाँ मुँहे सुनब।”

अवसर पाबि लाल काकी पुछि देलखिन- “अहीं कहू जे आइ धरि कहियो ई बात बुझा देलौं जे दुनू परानी कते दिन जीब। जते दिन जीब ओते दिन कहेन जिनगी जीब। राजा-दैविक कोनो ठेकान छै जे अहीं कहिया मरब आकि हमहीं कहिया मरब? अखन दुनू परानी जीबै छी मुदा इहो तँ भऽ सकै-ए जे एक गोरे जीबी आ एक गोरे मरि जाइ।”

पत्नीक बात सुनि उछलि कऽ चौकीपर सँ ठाढ़ होइत बजलाह- “नोकरी छीन निहत्था केलक मुदा तँए कि मरि जाएब। जँ अन्हरा-नेंगरा सौंसे जिनगी बना गामक आगिसँ अपन रक्षा कऽ सकैए तहन तँ....।”

::::::::::

१३ ऑपरेशन

पत्नीक बढ़ैत बीमारी देख चेतानन्द डॉक्टर ऐठाम जेबा लए रूपैयाक ओरियान करए लगलाह। अपना हाथमे तीनियेटा पचसटकही। कमसँ कम तँ पाँचो हजार चाही। जहिना गारामे उत्तरी नेने लोक घरारी लिखै लए रजिष्ट्री ऑफिस जाइत तहिना चेतानन्द चौमासपर रूपैया उठा पत्नीकँ संग नेने डॉक्टर ऐठाम पहुँचलाह। ओना पत्नी-सुनियाकँ गैस्टिकक शिकाइत चारि-पाँच बर्खसँ रहनि। मुदा आनो सभ जकाँ एकटा-दूटा गोटी खा-खा रोगकँ दबने रहथि। जाँच-पड़ताल केलापर डॉक्टर बुझि गेलखिन जे सात दिनक अभियनतरे दुनियाँ छोड़ि देतीह। मुदा जखैन कियो मृत्युक बाट पकड़ैत अछि तखने डॉक्टर ऐठाम जाइत अछि। बोल-भरोस दैत चेतानन्दकँ डॉक्टर कहलखिन- ''हिनका आँतमे पत्थर गोला भऽ गेल छन्हि, ऑपरेशन करए पड़त। मुदा शरीर तते अब्बल भऽ गेल छन्हि जे ऑपरेशन करैसँ पहिने पाँच-छह दिन दवाइ खुआबए पड़त। देहमे खून बनतनि तखन ऑपरेशन असान हएत।''

कहि दवाइक पुरजी बना देलखिन। भाड़ाक कोठलीमे पहुँच पत्नीकँ चौकीपर सुता, दुनू बच्चा मांगैन आ बिलटीकँ पत्नीक लगमे बैसाए चेतानन्द बजार विदा भेला। पहिने दवाइ दोकानपर पहुँच दवाइ कीन फुट-पाथेक दोकानमे रोटी-तरकारी कीन डेरा एला। डेरा आबि समान रखि कलपर सँ पानि अनलनि। दवाइ खुआ दुनू बच्चाक संग अपनो खाए लगलाह। खेबाक मन नै होइन। कंठसँ निच्चाँ धँसबे ने करनि। मुदा पानि पीब-पीब खाए लगलाह। मन कहैन जँ अधो पेट खाएब नै तँ दिन-राति दौड़-बरहा केना कएल हएत? जी-जाँति तरकारीक संग तीनटा रोटी खाए दू गिलास पानि पीलनि। पानि पीब चेतानन्द बिलटीकँ पानि पीआ पानिक हाथे मुँह पोछि देलखिन। मांगैन अपने हाथे मुँह धोइ उठि कऽ ठाढ़ भेल। थारी उठा ओचोनामे धोइ कोनमे रखलनि। पड़ल-पड़ल सुनिया सभ किछु देखैत छलीह। पतिक मनमे मन सटि थारी धोइत अपन रूप देखलनि। जहिना एनामे अपन चेहरा लोक देखैत तहिना सुनिया देखए लगलीह। दुनू भाए-वहिनकँ पाँजर लगा सुतबैत सुनिया पतिकँ कहलनि- ''अहुँक देह-हाथ बथैत हएत, पड़ि रहू।''

बात बदलैत चेतानन्द बजलाह- ''मन केहेन बुझि पड़ैए।''

“अखन की कहब।”

बिनु बात दोहरौनहि चेतानन्द जाजीम विछा निच्चेमे पड़ि रहलाह। बिलटीक देहपर हाथ सहलबैत सुनिया कहलखिन- “डॉक्टरे सहाएब जकाँ बुच्चीकेँ डाँक्टरी पढ़ाएब। जखैन बुच्ची डॉक्टरी पढ़ि लेत तखन एहिना कुरसी-टेबुल लगा कऽ काज करत। किने बुच्ची?”

“नै। खजुरिया दीदी जहाइन हमरो वियाह कऽ दे?” -तीन बर्खक बिलटी बाजलि।

बेटीक मुँहे वियाहक बात सुनि सुनिया हेरा गेलि। मनमे उठलनि घुरि कऽ घर जाएब तहन ने। बीमारी छुटत की नै, से के कहलक। दिन-राति तँ निच्चे मुँहे भेल जाइ छी। खेनाइयो-पीनाइ छुटले जाइए। विचार बदललनि जँ मरि जाएब तँ बेटीक वियाह केना हएत। की बिलटी बिलैटिये जाएत? जेकरा माए-बाप रहै छै तेकरो वियाह हएब भारी भऽ गेल छै। ई तँ सहजहि मइटुग्गर भऽ जाएत। मइटुग्गर बेटीकेँ कियो अपना घर लैयो जाइले तैयार हएत आकि नै। हे भगवान, एहेन युगमे बेटी किए देलह? जँ देबे केलह तँ ऐ बेटीक कोन दोख भेल जे मइटुग्गर भऽ दुनियाँक नजरिमे खसल रहत। यएह ने भानस-भात करैक लूरि नै हेतै। की मनुक्ख माटि सदृश्य छी जे एकबेर आगिमे पकलापर अपन स्वरूप बदैल दैत? मनुष्य तँ ओहन होइत जे अनाड़ीसँ जीबनी, भोगीसँ जोगी आ डाकूसँ साधु बनि जाइत अछि। की विधाता हमरा कपारमे यएह लिखलनि जे संगीक संग छोड़ि असकरे बोनमे बौआइ लए छोड़ि दियनि। जँ सएह लिखैक छलनि तँ एक उमरिया देख किए जोड़ा लगौलनि? तै बीच आँतमे दर्द उठलनि। चिचिआ कऽ बजलीह- “हौ बाप, आब नै बँचब।”

खलिये सिमटीपर जाजीम बिछा, कपड़ा मोटरी मूड़ीतर रखि उतान करे बन्न दुनू आँखिकेँ वामा वाहिसँ झाँपि चेतानन्दक पड़ल। मनमे उठलनि। अखन सीमाक सिपाही जकाँ ड्यूटीमे छी। ड्यूटीमे कहाँ होइ छै? अरामो तँ कते रंगक होइए। ओहनो अराम होइए जे नित्रसँ प्रेम करैए आ एहनो होइए जे अपन दुख निबारणक बाट जोहैए। फेर भेलनि भरिसक पत्नी नै बँचतीह। दुनू

गोटेक बीचक अंतिम समए गुजरि रहल अछि। अंतिम समैपर नजरि पड़िते भेलनि जे लड़का-लड़कीक माने बर-कन्याक वियाह स्थापित करैमे उमेरक किएक मानदंड बनाओल जाइत? जँ सन्तानेक लेल होइत तँ उम्रक लगीचक कोन प्रयोजन? जइठाम पनरह बर्खसँ पचास बर्खक सुविधा अछि उम्रक बराबरी तँ ऐ लेल मानल गेल अछि किने जे दीर्घ जिनगी संग-संग चलैत रहए। तहन एना किए भेल? विद्यार्थी जीवनमे सपना देखैत छलौं जे मातृभूमिक सेवा करब। जहिक लेल नोकरी नै केलौं। नोकरी कतऽ करितौं? जइठाम जन्म भेल अछि ओइठाम ने शिक्षण संस्थान अछि, ने कल-कारखाना, ने सरकारी कार्यालय आ ने अस्पताल। की ऐठाम ऐ सबहक जरूरत नै छै? की हमसभ शपथ खेने छी जे अपना माटि-पानि परक कारखानाक वस्तु उपयोग नै करब, आकि शासनमे सहयोग नै करब, आकि शिक्षा-स्वास्थक लाभ नै लेब। मुदा अखन धरि ऐसँ आगू बुझैक ने अबसर भेटल आ ने करैक जमीन। देश-सेवा की? यएह ने जे अपनो देशकेँ एक्कैसवीं शताब्दीक दुनियाँक कतारमे ठाढ़ करी। मुदा कतार तँ एकसँ लऽ कऽ सए तकक होइत अछि। तइमे कत्ते? एक दिस दुनियाँक गनल-चुनल धनवान तँ दोसर दिस सड़कपर भीख मंगनिहारक संख्या ओते अछि जते कताक देशक जनसंख्या नै छै। तै काल पत्नी मन पड़लनि। जहिना अन्हार रातिमे माएक पाँजर लग सुतल बच्चाकेँ निन्न टुटिते उठि कऽ माएक सुतल मुँह देख पुन: गर लगा कऽ सुइत रहैत तहिना चेतानन्द पत्नीक मूनल आँखि देख पुन: ओछाइनपर आबि पड़ि रहलाह।

ओछाइनपर पड़िते चेतानन्दकेँ मन पड़लनि कओलेजक ओ दिन जै दिन सरस्वती पूजा स्थलपर सुनियासँ पहिल भेँट भेलनि। मुदा लगले मनमे आबि गेलनि कओलेजक डिग्री आ पी.एच.डीक रजिष्ट्रेशन। पाँच बर्ख भऽ गेल मुदा एक्को अक्षर अखन धरि लिख नै पेलौं। लिखियो केना पबितौं? अखन धरि तँ यएह ने बुझि पेलौं जे देश सेवा की? मुदा आब तँ सहजहि पत्नीक भार कपारपर पड़ने बच्चाक तँ माइयो हुअए पड़त। दोबर भार पड़त। बच्चाकेँ पढ़ाएब आकि अपने पढ़ब। कओलेज छोड़लाक बादसँ अखन धरि 'गृहसूत्रो'

धुरझाड़ पढ़ल आ ने सीखल भेल 'धर्मसूत्र' तँ पछुआएले अछि। खाली मंगलाचरण रटि नेने नै ने हएत। विधातोक अजीब खेल छन्हि। जहिना गणेश जी मुसो आ बाघोकेँ नाङरि पकड़ि लड़बै छथि तहिना विधातो रंग-विरंगक जगहपर रंग-विरंगक बानरक नाच, मदारी जकाँ ठाढ़ केने छथि। एक दिस हार-पाँजर टुटल मनुष्यकेँ अपन देहक सोनित दए कियो देशसेवा करैत तँ दोसर दिस एक लबनी ताड़ी पीआ देशभक्त बनैत। कियो श्मशानमे अपन बेटाक लहास जरबैत जिनगी देखैत तँ दोसर दिसक सजल-धजल विशाल भवनमे बैस मस्तीक जिनगीमे पलड़ैत अछि। तै बीच सुनियाक बाजब- ''हौ बाप, आब नै बँचव।'' कानमे पड़लनि। कानमे पड़िते हृदए चहकि गेलनि। मनकेँ थीर करैत आगूक बात सुनैक लेल कान पाथि देलनि। मुदा आगूक बात नै सुनि मनमे उठलनि, जहिना मिझेवा काल डिविया भक दऽ जोरसँ बरि जाइत, तहिना तँ ने भऽ गेलनि। मन गुन-धुनमे पड़ि गेलनि। एक मन कहनि जे जँ प्राण छुटि गेल होनि तखन की करब? दोसर मन कहनि जे प्राण नै छुटल हेतनि तखन की करब? ऐठाम तँ चारिये गोरे छी। तहूमे दूटा बच्चे अछि। जँ एकोरत्ती आँखिसँ नोर बहत तँ बच्चा सभ अनेरे चिचिया लगत। गाममे तँ नै छी तँए जे समाजक लोक आबि कऽ मदति करत। मुदा ई जानि लेब तँ जरूरी अछि किने जे प्राण छुटि गेलनि आकि बँचल छन्हि। ओछाइनपर सँ चेतानन्द पुछलखिन- ''एना किए बजलौं?''

पतिक बात सुनि सुनिया उत्तर देलकनि- ''दर्दक धक्का लगि गेल छलाए मुदा अखन असथिर भऽ गेल।''

साँझक आठ बजे डॉक्टर सहाएब क्लिनिकसँ आबि सोझे वाथरूम विदा भेलाह। साँझू पहर टहलए नै जाइत। स्पष्ट विचार रहनि जे टहलब तँ हुनकर छियनि जे अपना पाएरे चलैत छथि। गाड़ी-सवारीमे बैस टहलब मन बहलाएब छी। जाधरि वाथ रूमसँ निकललाह ताधरि पत्नी टेबुल सजा, चौकीदार जकाँ केवाड़क परदा लग ठाढ़ छलीह। कुरसीपर बैस डॉक्टर सहाएब रस-पानि कए आराम कुरसीपर बैस गेलाह। मन फुहराम हुअए लगलनि। टेबुल सम्हारि पत्नी चलि गेलखिन। भरि दिनक हिसाब जोड़ए

लगलाह। नापल रोगी नापल फीस तँए जोड़ैमे देरी नै लगलनि। आमदनीक हिसाव जोड़ि काजपर नजरि दौड़ौलनि। काजक उपर होइत मन छिछलैत सुनियापर आबि अँटकि गेलनि। मुदा लगले काज हरा गेलनि। मन उड़ि कऽ अपनेपर चलि एलनि। अपनापर अबिते खुशीसँ मन ठहाका मारलकनि। अँइ, कहू जे आठ घंटा ड्यूटीक नियम अछि तइठाम बारह घंटा खटै छी तहन किए लोक बजैए जे फल्लाँ डॉक्टर दरमहे उठबै टा ले अस्पताल जाइ छथि। यएह ने जे खानगी रोगी देखै छी। जाधरि अस्पतालक समुचित बेबस्था नै हएत ताधरि डॉक्टरे की करताह? जइठाम अखन धरि रोगोक गिनती (पहचान) सरिया कऽ नै भेल अछि तइठाम रोगीक हिसाब जोड़ब धड़-फड़मे बाजब हएत। फेर मन घुरि सुनियापर पहुँच गेलनि। आइ धरि एक्कोटा रोगी इलाजक बीच मरल नै मुदा.....। आखिर कमी की अछि? जे दोख लागत? मन नचलनि। गंजिये-लूंगी पहीरने चेतानन्दक कोठरी विदा भेला।

सोगमे डुबल चेतानन्दकेँ पुछलखिन- “कहाली जगले छथि आकि सुतल?”
डॉक्टर सहाएबक बात सुनि देह-हाथ समटि सुनिया बाजलि- “जगले छी डॉक्टर सहाएब।”
सुनियेक चौकीपर बैस डॉक्टर सहाएब पुछलखिन- “कते दिनसँ दुखित छी?”
“ठीक-ठीक तँ नै कहि सकै छी मुदा पान-छअ बर्ख से पेटमे गैस बनऽ लगल गामेमे बहुतो गोटेकेँ ई रोग छन्हि। वएह सभ दवाइ बता देलनि। एकटा दूटा गोटी सभ दिन खाइ छी नीके रहै छी।”
नजरि दौड़बैत डॉक्टर पुछलखिन- “उपासो करै छी?”
“केना नै करब! अहीपर तँ आंग-समांग, बाड़ी-फुलवाड़ी लहराइ-ए।”
“महीनामे कतेक दिन सहै छी?”
“सात दिनमे रवि, मंगलवारी, शुक्रवारी ते करिते छी एकर बादो पावनिक उपास सेहो करिते छी!”
“देहक काट-खोंट करए पड़त तखन ऑपरेशन हएत।”
“दोसर उपाए नै छै। अपरेशनक कोनो ठेकान नै छै, बाल-बच्चा बिलटि जाएत।”

“हँ, उपाए छै। दवाइ लिख दै छी। साँझ-परात खाइत रहलासँ नीके रहब।”
“बड़बढ़ियाँ।”

चौकीपर सँ डॉक्टर उठि चेतानन्दकेँ बाँहि पकड़ि कोठरीसँ निकलि ओसारपर कहलखिन- “आँतमे एहेन गोला बनि गेल छन्हि जे बिना कटने नै हेतनि। तहूमे रोग बढ़ैत-बढ़ैत एते जुआ गेलनि जे देहक कोनो लज्जतिए नै रहलनि। अंग-अंग बैस गेलनि। तीनसँ चारि दिनक जिनगी बँचल छन्हि। नीक हएत अहाँ भोरे गाम चलि जाउ। ऐठाम पहपैटमे परि जाएब। बजारमे सभ सुविधा रहितो कियो ककरो बेरपर ठाढ़ नै होइ छै।” कहि डॉक्टर सहाएब घरमुँहा भेलाह। कोठरी आबि चेतानन्द पत्नीकेँ कहलखिन- “डॉक्टर सहाएब छुट्टी दऽ देलनि।”
“बड़बढ़ियाँ। भोरे विदा भऽ जाएब।”

चेतानन्दक नजरि सुनियाक परोछ भेलापर गेलनि। मनमे उठलनि माएक मृत्यु बेटा-बेटीकेँ कलंकक मोटरी कपारपर देने जाइ छै। जँ से नै तँ मइटुग्गरकेँ ओछ-आँखिये किए देखल जाइए। पत्नीक मृत्युपरान्त जँ परिवार ठाढ़ि करैले दोसर वियाह करब तँ आरो पहपटि बढ़त। कियो एहेन कहनिहार नै हएत जे भूखल बच्चाकेँ खाइ लए कहि बुझत जे बच्चा भूखल अछि आकि खेने। मुदा ई जरूर कहतै जे सत्माए खाइले दै छथुन की नै। रंग-बिरंगक अबलट जोड़ब शुरू कए देत।

::::::::::

१४ धर्मनाथ

प्रशासनिक सेवाक पच्चीस साल बाद धर्मनाथ एहेन दलदलमे फँसि गेलाह जइसँ नकलब कठिन भए गेलनि। सुसम्पन्न परिवारमे जन्म भेने जिनगीमे कहियो दुखक अनुभव धर्मनाथकेँ नै भेल छलनि। परिवारमे सरबे-सरबा पिता रहथिन तँए कोनो पैघसँ पैघ काज उपस्थिति भेलासँ निपटबैत। लोप होइत जमीन्दारी बेबस्था, ढेरो सम्पत्ति गामसँ बहार धरि रहनि। चारि भाँइक भैयारी रघुनाथकेँ। चारू भाँइक बीच बँटवारा भऽ गेलनि। मंदिर, स्कूल, खेत, पोखरि सभ बँटा गेलनि। भैयारीमे जेठ रहने रघुनाथकेँ पाँच बीघा जमीन जेठाउस तरे भेटलनि। रघुनाथकेँ चारि कन्या (बेटी) तीन पुत्र। दू कनियाँक वियाह साझियेमे भेल छलनि बाँकि दुनू कन्याक वियाहमे आठ बीघा खेत बिकलनि। घरक बरतन-बासन आ गहना-जेबर सेहो बन्हकी लागि गेलनि। तैयो पहिलुका अपेक्षा कुटुमैती हल्लुक भेलनि।

बच्चेसँ घर्मनाथ सुशील, सौम्य आ कर्मठ, जइसँ आइ.ए.एस. परीक्षा नीक-नहाँति पास केलनि। आइ.ए.एस. अफसर बनिते खानदान रूपी वृक्षमे फूल खिलल। अखन धरि परिवारमे सरस्वतीक अपेक्षा लक्ष्मीक सेवा अधिक होइत, जे बदलल। खानगी शिक्षा सार्वजनिक रूपमे बढ़ए लगल। घरक चिन्तासँ मुक्त धर्मनाथ परिवारक भविष्य, मात्र अनुमानसँ करैत। अखन धरिक सेवा (नोकरी) धर्मनाथक इमानदारीक गंगामे बीतल। जहिना गंगामे सूर्यक प्रकाश पड़लासँ चमकैत तहिना धर्मनाथक जिनगीमे इमान स्पस्ट झलकैत।

आरंभमे कम बेतन, छोट परिवार धर्मनाथकेँ रहनि। आस्ते-आस्ते धर्मनाथक परिवारो बढ़ैत आ बेतनो। पाछू-पाछू महगीयो पछुअबैत। बासी बचए ने कुत्ता खाए मासक कमाइ मासेमे सठि जाइन। परिवारक बजट, धर्मनाथ एहेन बनौने जे बेतनक भीतरे चलैत। मुदा संगी-साथीक बीच पँइच-पालट चलैत। कर्ज लेब आ सूदिपर कर्ज देब, दुनूकेँ धर्मनाथ पाप बुझैत। हुनक सदिखन प्रयास रहनि जे मेहनती परिवार बनए। पत्नी समैक उपयोग नियमबद्ध भऽ करनि।

खेवा-पीवाक वस्तुसँ लऽ कऽ नुआ-विस्तरपर विशेष धियान राखति। कपड़ा साफ करब, आइरन करब, सूइया-डोराक छोट-छीन काज अपने कऽ लैत। पढ़ै-लिखैक वातावरण धर्मनाथक क्रिया-कलापसँ प्रभावित।

सालक मास भरिक छुट्टी धर्मनाथ गामेमे सपरिवार बितबैत। छुट्टिये मासक बेतनसँ गाड़ीक मासूलक संग सनेस तक पुरबैत। रघुनाथ मने-मन सोचैत जे गामक अज-गज देख धर्मनाथकँ होइत हेतनि जे कोनो वस्तुक कमी नै मुदा बिना खेत बेचने परिवारक गाड़ी ससरब कठिन। जत्ते खेत बिकाइत ओत्ते उपजो कमिते जाइत।

नमहर-नमहर घर। जहिक मरम्मत आ रंग-टीप करैमे सेहो अधिक खर्च होइत। ढहल-ढनमनाएल हथिसार। घोड़ाक घर ओहिना पड़ल जइमे बिढ़नी, मधुमाछी, बादुर खोंता लगौने। कटैया काँट आ अंडीक गाछ सौंसे घर। जँ टूटलाहा घरक पजेबो रघुनाथ बेच लितथि तैयो कत्ते काज ससरि जैतनि मुदा जँ घरक पजेवा बिकाएत तँ बाँकिये की रहत। घरक आगू झील जकाँ पोखरि। पोखरिक चारू मोहारमे चारिटा ईंटा-सीमटीक घाट बनाओल। पुरान भेने चारू घाट टूटि गेल जइसँ नहाएबो जोकर नै रहल। पजेवा गुड़कि-गुड़कि निच्चा पानिमे छिड़िआ गेल। पाएरमे चोट लगै दुआरे लोक नहेनाइये छोड़ि देलक। सौंसे पोखरि समाढ़ आ कुम्ही तेना बोन जकाँ भेल जे पैसब मोसकिल। बीघा भरिक फुलवारी, जइमे सइओ रंगक फूल लगाओल। चारिटा नोकर सभ दिन फूलेक देखभाल करैत छल, ओ अखन गाए-महींसक चारागाह बनि गेल।

एक मास अधिक छुट्टी लऽ धर्मनाथ गाम एला। मोनमे विचारि आएल रहथि जे जेठ बेटीक वियाह करब। बी.ए. आनर्सक परीक्षा बेटी आशा देने। कन्यादान माए-वापक लेल ओहने होइत जेहने बेटाक लेल बृद्ध माए-बापक सेवा। उन्नैसम बर्ख आशा टपि गेल तँए वियाह करब आवश्यक। मने-मन धर्मनाथ सोचैत जे ओहन कार्य उपस्थिति भऽ गेल अछि जै संबंधमे किछु ने बुझैत छी। केना

हएत? की करब? कनिका कहबनि? विचित्र उलझनमे धर्मनाथक मन उलझल। हमहूँ तँ समाजमे ककरो कोनो उपकार नै केलिऐक तँए कियो हमरे किएक करत। गुनधुन करैत कोठरीसँ निकलि, असकरे टहलवो करैत आ सोचवो करैत। गामक बेरोजगार युवक, धर्मनाथकेँ बाहर बुलैत देख कियो साइकिलपर चढ़ि तँ कियो मोटर साइकिलपर छींटबला शर्ट-पेंट पहिर केश फहराबैत, वामा हाथे रूमाल साइकिलक हेन्डिलपर पकड़ि, मुँहमे सिगरेट लगौने धर्मनाथक आगूमे अँठि-अँठि कऽ धुँओ उड़बैत आ चक्करो कटैत। ओना धर्मनाथ मूँड़ी निच्चाँ केने चलैत मुदा अफसर आँखि बिना देखने केना रहत। इमानक आँखि रहने धर्मनाथकेँ कोनो कड़ुआहट नै अबैत। जे प्रतिष्ठाकेँ मिसिओ डगमगबैत नै। मने-मन यएह होइन जे प्रतिष्ठा ओहन वस्तु थिक जे ने ककरो देने होइत आ ने ककरो लेने जाइत। ओ अपना केने होइत आ अपने केने जाइत।

गाम एला धर्मनाथकेँ सात दिन भऽ गेलनि। मुदा अखन अखन धरि वियाहक कोनो चरचो नै भेल। आठम दिन धर्मनाथ आशा वियाहक चर्चा पिता लग केलखिन। पिता असमंजसमे पड़ि मने-मन सोचए लगलथि जे अखन धरि जेहन खानदानी आ सम्पन्न परिवारमे कुटुमैटी करैत एलौं, ओहन घरमे एत्ते पढ़ल-लिखल वर भेटव मोसकिल अछि। जँ भेटबो करत तँ खर्चाक इत्ता नै रहत। धर्मनाथ कत्ते खर्च करताह से कहबे ने केलनि। पूछबनि केना? हमरो तँ पोतिये छी। बोल भरोस दैक खियालसँ रघुनाथ फोन उठा कुटुमसँ लऽ कऽ दोस-महिम धरिकेँ जानकारी दैत भजियबैले कहलखिन। जिनगीक चढ़ा-उतरी रघुनाथक विचार बदैल देलकनि। जखैन पहिलुका सुख-भोग मोन पड़ैत तखन आँखिसँ नोर टघड़ए लगैत। मुदा पछते नै की होएतनि। चिड़िया तँ चुकि गेल। जतबो दिन मृत्युक शेष छन्हि ओहो कते निच्चाँ ढड़कतैन सेहो ठीक नै। सिर्फ एक्केठामसँ एम.ए. पास लड़काक भाँज लगलनि मुदा कूल-मूल दब।

जमा केलहा आ वियाहक लेल कर्ज मिला धर्मनाथ एक लाख रूपैया लऽ आएल छलाह। परिवारक खर्च पुरौलापर जतेक बचैत, ओ जँ जिनगीयो भरि

जमा कएल जाए तैयो, आइक युगमे एकटा बेटीक वियाह पार लागब कठिन अछि।

प्रशासनिक काजमे धर्मनाथ दक्ष बुझल जाइत तँए विशेष इज्जत रहनि। इमान आ चरित्रकेँ बँचबैत धर्मनाथ उपर-निच्चाँक बीच ताल-मेल बैसाए आसानीसँ ऑँफिसक काज निपटा लैत छलाह। मुदा परिवारक काजसँ अनभिज्ञ रहने किछु फूडबे ने करनि। गाम एलापर मने-मन अन्दाजैत जे केयो मदति करैबला छथि आकि नै! एकाएक धर्मनाथकेँ पच्चीस-तीस साल पहिलुका बात मोन पड़लनि। प्रोफेसर रामरतन, जे विचारवान आ सामाजिक लोक सेहो छथि, गुरूवो छथि, दू साल पढ़नौ छथि, हुनका जा कऽ कहियनि। हमरासँ तँ कहिओ हुनका मुँहा-ठुट्ठी नै भेलनि मुदा पिता जीसँ बक्क-झक्क कहिओ काल जरूर होइते रहैत छन्हि।

सायंकाल धर्मनाथ पत्नी राधाकेँ कहलखिन- ‘‘काकीजी, ऐठाम जा रहल छी। जँ काकाजी -प्रो. रामरतन- भेँट भऽ जेताह तँ बात-विचार करैमे अबेरो भऽ सकैए। तँए अनदेशा नै करब।’’
एक टकसँ राधा पति दिस देखैत रहलीह। चिन्ता आ परेशानी धर्मनाथक चेहरासँ स्पष्ट झलकैत छलनि। जे देख राधाक नजरि चन्द्रमुखी आशापर गेलनि। जे अखन धरि दुलार आ सिनेहक मूर्ति छलि, अनायास कमी बुझि पड़ए लगलनि। थलकमल जकाँ। जे सूर्योदयसँ पहिने उज्जर रहैत आ रसे-रसे लाल होइत गाढ़ भऽ जाइत, तहिना आशाक प्रति बदलैत सिनेह राधाकेँ बुझि पड़ए लगलनि। मने-मन सेचए लगलीह। यएह थिक आजुक समाज। जे बेटी समाजक बुझल जाइत वएह अगम पानिमे गड़गोटियो दैत। गुम-सुम राधा ओसारपर बैस रहलीह। खसल मोन राधाक देख आशा पूछलक- ‘‘माए, मोन किएक एत्ते खसल छोउ ऊ?’’
अपनाकेँ छिपबैत राधा बाजलि- ‘‘नै- नै- कहाँ- क.....।’’

राधा अपन व्यथाकँ छिपबए लगली मुदा मलिन मुँह आ बोलिक ध्वनि व्यथाक अढ़े-अढ़ निकालैत।

प्रोफेसर रामरतनक दरबाजा सुन्न देख धर्मनाथ ठाढ़ भऽ सोचए लगलाह जे भरिसक नै छथि। मुदा बिना भाँज लगौने धुमबो उचित नै। असगरे धर्मनाथ प्रो. रामरतनक दुआरपर ठाढ़ भेल। थोड़े कालक बाद तीन-चारि गोटेकँ अबैत देख, बोली अकानैत धर्मनाथक हृदेमे आशा जगलनि। एक गोटेक हाथमे दूधक लोटा रहए। प्रो. रामरतनकँ देखते जना भादवक दुपहरियामे कारी मेघसँ झाँपल सूर्य हवाक सिहकीसँ छटि जाइत आ भुक दऽ सूर्य देख पड़ैत तहिना धर्मनाथकँ भेलनि। लग अबिते धर्मनाथ प्रोफेसर रामरतनकँ गोड़ लगलनि। आशीर्वाद दैत बाँहि पकड़ि चौकीपर बैसबैत धर्मनाथकँ अपने हाथ-पाएर धोअए कलपर गेलाह। पत्नी चित्रलेखा लालटेन लेसि आंगनसँ नेने एलीह। चित्रलेखाकँ देख धर्मनाथ गोड़ लगलनि। असिरवाद दैत चित्रलेखा बाजलीह-
“भगवान, एक सए एक्कैस करथि। बौआ, अखन कतऽ छी?”
“चाची, छी तँ बड़ दूर। जनिते हेबै केरल।”
“परिवार आनन्दसँ रहै छथि की ने?”
“हँ, अपने लोकनिक दयासँ सभ आनन्द अछि”
“बच्चा?”
“तीन भाए-बहिन। जेठ बेटी, छोट दुनू बेटा। आशा बी.ए.मे परीक्षा देलक। जेठ बेटा आइ.ए.मे आ छोट मैट्रिकमे पढ़ैए।”
“आशा वियाह करै जोग तँ भऽ गेल हएत। काज केनहि बढ़ियाँ?”
“अपनो सएह विचार अछि। तखन तँ.......।”
“भगवान थोड़े अधला करताह। जे मोनमे अछि से हेबे करत। अहाँ सन बेटा भगवान सभकँ देथुन।”
चित्रलेखाक बात सुनि धर्मनाथक आँखि सिमसिमा गेलनि, जे नोरक बुन्न बनि निकलए चाहैत। मुदा धर्मनाथ हाथसँ आँखि पोछि नोर सुखाओल। मुदा बोली होइत धर्मनाथक हृदेक व्यथा निकलए लगलनि। एकाएक धर्मनाथक मोनमे एलनि जे एत्ते पैघ पदपर रहनिहारकँ जँ आँखिसँ नोर खसैत जे देशक सभसँ

पैघ बुझल जाइत। तँ खुशीसँ के रहैत हएत। ताबे प्रो. रामरतन चापाकलपर सँ हाथ-पाएर धोय खराम पटपटबैत दरबज्जापर एला।

चाहो बनल। लोटामे पानि नेने चित्रलेखा अएलीह। गिलासमे लोटासँ पानि ढारि धर्मनाथकेँ देलखिन। एक गिलास पानि पीब धर्मनाथ चाह पीबए लगलाह। प्रो. रामरतन चाहक चिस्की लैत धर्मनाथकेँ कुशल पूछलखिन। कुशलक क्रममे धर्मनाथ आशा वियाहक चर्चा कएल।

प्रो. रामरतन- “ककर वाकी रहलै जे अहाँक नै हएत।”

“चाचा जी, समाजसँ तँ सभ दिन हटल रहलौं। जिनगीक पहिल काज थिक तँए अगम-अथाह बुझि पड़ैए।”

मूड़ी डोलबैत रामरतन कहलखिन- “हँ, ठीक कहलौं। अहाँ हमर समाजे नै छात्रो छी तँए अहाँक बेटी, की हमर बेटी नै?”

प्रो. रामरतनक विचार सुनि धर्मनाथक हृदेमे आशाक अंकुर उदित होअए लगलनि। जहिना धारक धारामे भसैतकेँ किछु सहारा भेटलापर खुशी होइत तहिना धर्मनाथोकेँ भेलनि। पच्चीस-तीस बर्ख पहिलुका रूप प्रो. रामरतनक, धर्मनाथक हृदेमे ओहिना नचए लगलनि। धर्मनाथ जिनगीक ओइ चौबट्टीपर आबि ठाढ़ भेल, जइठाम सँ आगूक रास्ता की हएत से बुझबे नै करैत। अपन व्यथा व्यक्त करैत धर्मनाथ कहलखिन- “दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं जे बेटी वियाहक प्रक्रिया पूरा कऽ घूमब। मुदा आठ दिन ओहिना बीत गेल।”

“सभ काज हँसी-खुशीसँ सम्पन्न भऽ जाएत। आ समैपर चलिओ जाएब। बीचमे किछु प्रश्न अछि। अखन धरि जमीनदार खानदानमे रहलौं। जकर पतन भए गेल। सिर्फ ओकर ढाँचा ठाढ़ छै। जे उदीयमान अछि ओइ दिशामे बढ़व बुद्धियारी होएत।”

“अपनेक उपर वियाहक भार दए रहल छी तँए कोनो तरहक मान-अपमानक प्रश्न मनमे नै अछि।”

“दहेज विरोधी हम सभ दिन रहलौं जहिक चलैत अहाँक पिताजीक संग मतभेद रहल। मतभेदोक उपरान्त कहिओ कोनो अधला केलौं, शायद मन नै

अछि। आशा हमर बेटी छी। कन्यादान हम करब!'' जोशमे बजैत प्रो. रामरतन उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलाह।

अन्हरिया रातिक दुआरे राधा बेटा-बेटीक संगे प्रो. रामरतन ऐठाम अएलीह। दरबज्जासँ थोड़े फरिक्के रहथि आकि प्रो. रामरतनकेँ जोरसँ बजैत सुनि ठाढ़ भऽ अकानए लगलीह। मुदा कोनो अनर्गल बात नै सुनि सभ दरबज्जाक आगू अएलीह। दरबज्जा लग, चारू गोटेकेँ देख प्रो. रामरतन पूछलखिन। धर्मनाथक परिवार सुनिते प्रो. रामरतन उठि कऽ चारू गोटेकेँ आंगन लऽ जा पत्नीकेँ कहलखिन- ''जल्दी हिनका सभकेँ खुआउ। बिना खेने केना जाए देबनि?''
चारू गोटेकेँ चित्रलेखा रोटी-तरकारी खुऔलनि।

प्रो. रामरतनक ऐठामसँ घुमैकाल धर्मनाथ पत्नीकेँ कहलखिन- ''जहिना आशा वियाहक चिन्तासँ हृदए थरथराइत छल तहिना चाचा जीक आश्वासनसँ मोन हल्लुक भए गेल।''
ओ सभ भार लऽ लेलनि। हँसैत राधा कहलखिन- ''निर्बलकेँ बल राम' होइत छै। नीकक फल कखनो अधला नै होइत छै। थोड़े कालले सामाजिक परिबेशमे भइओ जाइत छै मुदा ओकर परवाह मनुष्यकेँ नै करक चाही।''

प्रो. रामरतन दीनानाथसँ वियाहक संबंधमे सभ बात केलनि। दीनानाथक बेटा एम.ए. कऽ पेट्रोल पम्प चलबैत। एकटा मैक्सी, भाड़ामे सेहो चलबैत। खेत तँ बहुत नै मुदा पाँच कोठरीक पक्का मकान आ घरारिओ नमगर-चौड़गर। दीनानाथ हिन्दुस्तान मोटर कम्पनी कलकत्तासँ रिटायर भए गामेमे लेथ मशीन चलबैत। अपने पुरान मैकेनिक। बिना दहेजक वियाह आशा आ श्यामक बीच पक्का भऽ गेल।

वियाहसँ पहिने समाचार पसरि गेल। रघुनाथक कानमे समाचार पहुँचल। समाचार सुनि एहेन चोट लगलनि जे एकाएक अचेत भऽ गेलाह। होश होइते

सोचए लगलथि। एक दिस प्रो. रामरतनक अगुआइमे वियाह होएत। जे पुश्तैनी दुश्मन। दोसर जमीन्दारीक ठाठ-बाठकेँ पानिमे धर्मनाथ फेक रहल अछि। ओछाइनपर पड़ल रघुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन- ''जै आशासँ धर्मनाथकेँ पढ़ेलौं, सभ पानिमे चल गेल।''

पत्नी कहलकनि- ''किएक एत्ते कड़ूआएल छी?''

''बोली कड़ूआएल अछि। होइत अछि जे लोरहीसँ कपार फोड़ि मरि जाय।''

''एना बताह जकाँ कियए बजै छी?''

''हम बताह छी, नै करेजमे चोट लागल अछि। एक क्षण ऐठाम रहब पहाड़ बुझि पड़ैए। जाबे धर्मनाथ रहत, हम ऐ घरमे नै रहब। चलू, कल्हिये दुनू परानी काशी, ओतए रहब। बाप-दादाक प्रतिष्ठाकेँ पानिमे फेक देलक। तखन जीबिये कऽ।''

बड़ीटा दुनिया छै, नै हरियर गाछ भेटत तँ सूखले गाछ तँ भेटबे करत। ओतै रहब।''

पतिक बात सुनि पत्नीक मनमे एलनि, बीचमे हम की कऽ सकै छी। माथपर दुनू हाथ दऽ ओसारपर बैस गेलीह। दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलै लगलनि। असकरे रघुनाथ ओछाइनपर पड़ल बड़बड़ाइत। बड़बड़ाइत-बड़वड़ाइत बोम फाड़ि कानए लगलाह। रघुनाथकेँ कानब सुनि चारू कातसँ लोक दौड़ल आएल। डॉक्टर बजोओल गेल। जाँच कए डाँक्टर कहलखिन- ''दिमागक नस फाटि गेलनि। अखने लहेरियासराए लऽ जइयौन।''

गाममे हल्ला भए गेल जे रघुनाथ बाबा मरि गेलाह। जनीजाति सभ अपनामे गप्प करैत जे रघुनाथ बाबाकेँ भूत लागि गेलनि। नवकी कन्या सभ बजए लगलीह- ''बाबाकेँ चुड़ीन लागि गेलनि'' धिया-पूत्ता सभ थपड़ी बजा-बजा नचबो करैत आ बजबो करैत- ''बाबा मुइलाह-पूड़ी-जिलेवीक भोज खाएब।''

::::::::::

१५ सरोजनी

मझोलका किसान भेलोपर जमीन्दारीक ठाठ-बाठ आ रूवाब अखनो हरदेवकेँ छन्हिये। वएह हथिसार सन-सन घर, बीघा भरिक फुलवारी, घरक आगूमे झील सन पोखरि जकरा चारू मोहारमे मेड़हाओल घाट। कलम-गाछीक कमी नै। सभ रंगक आम फुटा-फुटा लगौने। सरही फुटे, कलमी फुटे। एक भागमे सभ रंगक इलची पाँच कट्ठामे। आसामक बोन जकाँ बँसबारि जइमे हजारो बाँस सुखल। शीशो गाछक डारि सभ मोटा-मोटा गाछे जकाँ भऽ गेल। लताम बेल धात्री सपाटूक सरीफा आँता कटहर बरहर इत्यादिक बगीचा सेहो छन्हिये। सालो भरि कोनो ने कोनो फल गाछमे लुबधले रहैत छन्हि। अनेको रंगक देशी-विदेशी केराक करजान। दोसराक खेतमे पाएर नै देब, एहन रूवाब हरदेवक बाबाक अमलदारीमे रहनि। बनसी खेलै दुआरे पोखरिक बीचो-बीचो पुल जकाँ सेहो बनौने।

जमीन्दारी टूटलोपर बाहरसँ तँ नै बुझि पड़ैत मुदा भीतरे-भीतर फोक भऽ गेल। महाजनी चल गेलनि। बखारी टूटि गेलनि, नोकर-चाकर नै रहलनि मुदा मोनमे अखनो ओ टेरही छन्हिये। पाँच भाँइक भैयारीमे सभ कुछ बँटा गेल। अपन समांग सभ तँ अधिक पढ़ल-लिखल नै मुदा पढ़ल-लिखल नोकर रखि सभ कारोवार चलबैत रहथि। एते दिन झाँपि-तोपि निमहलनि। मुदा आब ने दोसर रूवाब मानैले तैयार आ ने अपना दम जे दोसरपर रूवाब करब।

बच्चेसँ हरदेव बाबाक संग कोट-कचहरी अबैत-जाइत। तइमे कानून-कायदा, लड़ाइ-झगड़ाक भाँज बुझने। घरोपर हरदेव नियमित क्रिया-कलाप बनौने। भोरे उठि दतमनि कऽ कुड़ा-आचमनि कऽ भरि छाँक पानि पीब, पान खा लोटा लऽ मैदान दिस जाइत। घंटो भरि सिनुरिया आम-गाछक निच्चाँमे लोटा रखि सौंसे गाछी टहलि-बुलि देखैत। पाकल फल तोड़ि-तोड़ि गमछामे बान्हि घुमै काल घरपर नेने अबैत। सभ दिन टटका फल खेने दुनू परानीक बुलन्द शरीर रहनि। चारिटा गाए पोसने। गाए तँ देहातिये छलनि मुदा नमहर कदक। एक

बड़ना कारी। डेढ़ियापर बाहैत-बियाइत तँए सभ दिन दूधक लाट रहबे करनि। सभ दिन बेरू पहर असेरी गिलाससँ दू गिलास दूधमे भाँग घोड़ि पीब हरदेव बनसी खेलए जाइत। बीच पोखरिमे चौखुट बनसी खेलैले जे बनौने रहथि ओइपर जा कुरता निकालि रखैत। पानक सभ सामान सेहो नेने जाइत। एयर कंडीशन जकाँ जल हवा ताहूमे झुलैत झिझड़ीदार परदा जकाँ भाँगक निशां हरदेवक हृदेकेँ झुलबैत। हरियर-हरियर कुमही हवाक सिहकीक संग जलक सवारीपर सपरिवार सवार भऽ रसे-रसे पोखरिमे टहलैत। बहुत पहिने हरदेवक पिता पोखरि भिंडासँ ललका कमल आ बेरमा बड़की पोखरिसँ उजड़ा कमलक गाछ आनि लगौने रहथि। दुनू रंगक कमलक शोभा अद्भुत देखैमे लगैत। आनन्दक समुद्रमे असकरे हरदेव सभ दिन मगन भऽ झुमैत। छोटकी माछ सभ बनसी बोर निचेनसँ खा लैत। लुक-झुक गोसाँइ होइते हरदेव बनसी समेट रखि घुरि कऽ घर अबैत। घरपर आबि चाह पीब टहलैले निकलि जाइत। बच्चेसँ घुरन हरदेव ऐठाम नोकरी करैत छल। साते-आठ सालक जखैन रहै बाप मरि गेलै। बपटुगर घुरन माएक संग नमहर जिनगी जीबैले दुखक पहाड़सँ संघर्ष करए लगल। जखैन घुरन छँटगर भेल वियाह-दुरागमन भेलै तखन पाँच रूपैया महीनाक नोकरी छोड़ि बोनियाती काज हरदेव ऐठाम करए लगल। घुरन आ हरदेव एकतुरिया। हरदेव सुखक बीच घुरन दुखक बीच जिनगी बितबैत। एक तुरिया रहने दुनूमे घनिष्ठ प्रेम। एकठाम रहने घुरनपर हरदेवक असीम विश्वास सेहो रहनि। जँ कहियो हरदेव कतौ बाहर जाइ छला तँ घुरनेपर खेती-बाड़ीक भार दऽ जाइत छलाह। घुरनक घरवाली सोमनी हरदेवक अंगनाक काज, बरतन-बासन धोनाइसँ लऽ कए पानि भरनाइ चुल्हि-चिनमार निपनाइ सभ करैत। जइसँ खेनाइ-पीनाइ चलि जाइत। बेटा रमेश माएक संग हरदेवक आंगनमे खाइत-खेलाइत। सरोजनी आ रमेश कहियो अटकन-मटकन खेलै तँ कहियो चोरा-नुक्की।

गामेमे स्कूल रहने रमेशक नाओं घुरन लिखा देलक। सरोजनी सेहो स्कूल जाए लगल। पढ़ैमे रमेश चन्सगर। हरदेवक परिवारसँ लाट रहने रमेशक गरीबी छिपल। रमेश दू बर्ख सरोजनीसँ जेठ। बच्चेसँ रमेश रोगसँ आक्रान्त

भऽ गेल। केयो रमेशकेँ बाल-ग्रह कहैत तँ कियो पछुआ लागब कहैत। घुरन आ सोमनी कते गहवर रमेशकेँ लऽ लऽ गेल मुदा रोग नै छुटलै। दिनानुदिन रोग बढ़िते गेलै। अंतमे निराश भऽ घुरन सोने वैदसँ रमेशक इलाज करौलक। साते दिनमे बीमारी छुटि गेलै। मुदा रमेशक शरीर खिदखिदाहे रहल।

परसुए माघक पूर्णिमा। गंगा नहाइले गामक मरद-स्त्रीगण उमड़ल। सुशीला सेहो पति हरदेवकेँ चलैले कहलकनि। दुनू परानी हरदेव गंगा-नहाइले रौतुके गाड़ीसँ सिमरिया विदा भेला। अंगनाक भार सोमनीकेँ माल-जाल भार घुरनकेँ हरदेव दऽ गेलाह। सिर्फ सरोजनियेँटा रहल। सोमनीकेँ सरोजनी चाची कहैत।

चारि साल पहिने गामक स्कूलसँ निकलि सरोजनी आ रमेश हाइ स्कूलमे पढ़ैत। संगे दुनू गोटे स्कूल अबैत जाइत। रमेश आ सरोजनी ओसारक चौकीपर बैस पढ़ै-लिखैक गप-सप्प करैत। सोमनी आंगन बहारि बाढ़नि रखिते छलि आकि सरोजनी पूछलक- "चाची अगिला महिनामे मैट्रिकक परीक्षा हेतै। मैट्रिकक बाद रमेशकेँ पढ़ेबै की नै?"
सोमनीक मोनक आशापर गरीबीक चादरि झपने। सोमनी ठाढ़ भऽ एक टक सरोजनीकेँ देख बाजलि- "बुच्ची कहलौं तँ बड़ नीक बात। कोन माए-बापकेँ मनोरथ बेटा-बेटीक पढ़ेवाक नै होइ छै मुदा खरचा जुमतै। गरीब लोक कोनो लोक होइए। सभ मनोरथ संगे जाइ छै।"
सोमनीक बात सुनि सरोजनीक मुँहक हँसी बिला गेल। कनेकाल चुप भऽ बाजलि- "कहलौं तँ ठीके चाची। हमहीं अखन बाप-माएक ऐठाम छी सुख करै छी। जँ हमरे गरीब घरमे वियाह हुअए तँ अखुनका सुख रहत।"
"जकरा जे भाग्य-तकदीरमे लिखल रहै छै से होइते छै। रमेशक भागे खराप छै तँ सुख कतएसँ आओत।"
"चाची गाममे तँ नोकरी नहिये हेतै, तब तँ बाहरे जाए पड़तै?"

“कियो चिन्हारेकँ संग लगा दिल्ली पठा देबै। कोठीमे कोनो काज भइये जेतै।”

“रमेश दिल्लीमे नोकरी करत। अहाँ दुनू परानी ऐठाम रहब। बड़-बीमारीमे ककरा के देखबै?”

“जकरा जे दुख-की सुख लिखल रहै छै से आन थोड़े बाँटि लै छै।”

सरोजनीक नजरिमे आशाक किरण चमकि रहल अछि जबकि सोमनी निराशाक पहाड़ तर दवाएल अछि। बच्चेसँ जुड़ल सिनेहकँ जेना वीणाक ध्वनिकँ हथौरीक चोट भग्न कऽ दैत तहिना सरोजनीक स्वरकँ सोमनीक आवाज ध्वस्त कऽ देलक।

पाँच तारा होटलमे डेरा। जहाजसँ देश-विदेशक एनाइ-गेनाइ। नीक नोकरीक संग नीक दरमहो। तइपर सँ चोरा-नुका कऽ दोहरी धंधो। एश-मौजक जिनगी जीबैत, पुष्ट गोर शरीर हृदयनारायणक। ने घरक चिन्ता ने पिरवारक बोझ। होटलक मालिक अंग्रेज, जिनका दुइ गोट कन्या। दुनूकँ एक-एक होटल दऽ अपन भार हटौने। अपने अंग्रेज साहब दुनू बापूत लोहाक कारखाना चलबैत। होटल चलौनिहारि रोजी। जखैन हृदयनारायणकँ होटलमे अबैत रोजी देखे तँ आँखि गड़ा एक टकसँ निच्चाँ-उपर निहारैत रहए। कोठरीमे गेलापर अनेरे जा-जा रोजी हृदयनारायणकँ पूछैत- “कोनो वस्तुक दिक्कत तँ नै अछि?”

बी.ए.पास रोजी। बीख बर्खसँ उपरे उमेर। सुनहला केश भूल्ल गोर। छरहरा शरीर, फुरतीसँ छट-छत करैत।

हृदयनारायण क्लबक सदस्य सेहो रहथि। मन-माफित मनोरंजन करैत। बसन्तक बहार छोड़ि पतझड़क अनुभूतिसँ अनभुआर भऽ गेल हृदयनारायण। देहाती जिनगीसँ गुजरल हृदयनारायण छल-प्रपंचसँ कोसो दूर। डयूटीसँ आबि कपड़ा बदैल स्नान-जलखै कऽ, सोफापर लेट अगिला जिनगीक संबंधमे सोचए लगल। वियाह करब परिवार बनाएब। हृदयनारणक कोठरीमे प्रवेश कऽ रोजी कुर्सीपर बैसैत बाजलि- “चिन्ताक पहाड़क तरमे किएक दबल छी?”

सुखल मुस्की दैत हृदयनारायण उत्तर देलक- “थाकल छी।”

रोजीक मुस्की भरल मधुर स्वर हृदयनारायणक हृदेमे चुभए लगल। प्रेमक अंकुर अंकुरित हुअए लगल। चिन्ताकेँ दबबैत हृदयनारायण मुस्कुराए लगल। रिंग कऽ रोजी नोकरकेँ कॉफी आनैक आदेश देलक। नोकर कॉफी सिगरेट सलाइ नेने आएल। जखने हृदयनारायण कॉफीक चुस्की लऽ कप रखलक आकि रोजी कपसँ कप भिरा पीबए लागलि। कप रखि रोजी दूटा सिगरेट लगौलक। एकटा हृदयनारायणकेँ हाथमे दऽ दोसर अपने कॉफीक संगे पीबए लगलीह। पाँच साल पहिने रोजी बी.ए. पास केने छलि। पसिनगर संगी नै भेटने अखनधरि अविवाहिते छलि। बिना हिचककेँ रोजी हृदयनारायणसँ पूछलक- ‘‘वियाह भऽ गेल अछ?’’

‘‘नै।’’

‘‘परिवारमे माता-पिता छथि।’’

‘‘अखन धरि वियाह किएक ने केलौं?’’

‘‘नोकरीसँ पहिने सोचैत रही जे जाधरि अपना पाएरपर ठाढ़ नै भऽ जाएब ताधरि वियाह नै करब।’’

‘‘तीन सालसँ तँ नोकरियो करै छी?’’

‘‘वएह सोचि रहल छी।’’

हृदयनारायणक हृदेक आँखि रोजीकेँ देखए लगल। धड़फड़ा कऽ उठि रोजी हँसैत चल गेलि। गप्प करैक इच्छा हृदयनारायणकेँ आरो छल जे अखन नै भऽ सकल। गामक पछुआएल जिनगीकेँ शहरक अगुआएल जिनगीमे बदलैक विचार हृदयनारायणक मोनमे। मुदा गंगाजल ताबे धरि गंजाजल रहैत जाबे धरि गंगा नदीक बीच रहैत लेकिन वएह अथाह समुद्रमे मिललापर बदैल जाइत। ऐ द्वन्द्वमे हृदयनारायण पड़ल-पड़ल तकियापर माथ दऽ कछमछ करए लगल।

दस बजे रातिक घंटी घड़ीमे टनटनाएल। बाहरक गैहिकीक आएब बन्न भऽ गेल। मुख्य दरवाजामे ताला लागि गेल। रोजी सिगरेटक डिब्बा सलाइ आ ह्वीस्कीक बोतल नेने हृदयनारायणक कोठरीमे पहुँच गेलि। दूटा गिलासमे ह्वीस्कीक मुन्ना खोलि ढारलक। एकटा गिलास हृदयनारायणक आगूमे बढ़ा दोसरमे अपने पीबए लागलि। दू-दू गिलास दुनू गोटे पीब सिगरेट पीबए

लागल। सिगरेटक धुआँ रोजी दिस उड़बैत हृदयनारायण पूछलक- ‘‘हमर परिचए तँ बुझलौं अपन कहूँ?’’
मुस्कुराइत रोजी बाजलि- ‘‘दू गोट होटल दुनू बहिनकेँ पिताजी देने छथि। अपने पिताजी आ भाय लोहाक मिल चलबैत छथि।’’
‘‘अखन धरि अहाँ किएक ने वियाह केलौं?’’
‘‘मनगर जोड़ीक अभावमे।’’
‘‘कत्ते दिन प्रतीक्षा करब?’’
‘‘बरिसो-बरिस, अखनो।’’
‘‘की मतलब?’’
‘‘जँ अहाँ हँ कहि दी तँ लगले भऽ जाएत।’’
‘‘पितासँ बिना पूछने?’’
‘‘अपन पसिनक उपरान्त हुनका कहि देबनि।’’
‘‘जाउ हम तैयार छी, हुनकासँ पूछि लियौन।’’

दोसर श्रेणीमे सरोजनी आ रमेश मैट्रीक पास भेल। नीक विद्यार्थी रहितो रमेश कम अंक पौलक। उत्साह आ लगने एहेन जे रमेश पढ़ि सकल। सरोजनी वय:संधिक सीमापार करैत किशोरीक सीमामे प्रवेश करति रहए। लज्जाक आगमन भऽ गेलै। किशोरीक विशेषता सरोजनीकेँ अंग-प्रत्यंगसँ हूलकी देमए लगलि। अपन रिजल्टक जानकारी रमेश हरदेवकेँ देमए पहुँचल। ओना सरोजनी पहिने पिताकेँ कहि देने।

हरदेव दलानक कुरसीपर ओङठि कऽ बैस सरोजनीक वियाहक संबंधमे आँखि मूनि सोचैत रहथि। मैट्रीक पास बेटीक लेल बी.ए. पास बड़ चाही। घरो अपनासँ दब नै होय। समए एहेन भऽ गेल जे खर्चक कोनो हिसाब नै रहत। जमीन्दारी चल गेल मुदा ठाठ-बाठ तँ वएह अछि बेटाक रिजल्ट सुनि घुरन हँसैत आबि हरदेवकेँ पूछलकिन- ‘‘मालिक एना मन्हुआएल किएक छी?’’
आँखि खोलैत हरदेव बाजलाह- ‘‘नै-नै मन्हुआएल कहाँ छी। सरोजनीक संबंधमे सोचै छलौं। तोरो रमेश तँ वियाह करै जोगर भऽ गेलह।’’

“मालिक बेटा-बेटीक वियाह तँ माए-बापक लेल करजे छी। देहक कोन ठेकान तँए जँ भऽ जाएत तँ ऐबेर कऽ लेब।”

दछिनबरिया घरमे पलंगपर पड़ल सरोजनी अपन भविष्य दिस तकैत। भैया कलकत्तासँ गाम नहिये औताह। माए-बाबू रसे-रसे बुढ़े होइत जेताह। दुनू गोटेकेँ बुढ़ाढ़ीमे के सेवा करतनि। अछैते बेटा-बेटी दुख हेतनि। रमेश गुरू जकाँ पढ़बैत अछि। माए-बाप नोकर जकाँ सेवा करैत अछि। दुनू गोटेक - रमेश आ सरोजनीक- बीच धन आ जातिक अन्तर अछि। राजा दशरथोकेँ स्त्री तीन जातिक छलनि। अधर्म कहाँ भेलनि। जिनगी हँसैत शान्तिसँ चलै यएह तँ सबहक इच्छा होइत छै। रमेश दिल्ली बम्बई जा कोठी आकि मिलमे नोकरी करत। आइ धरिक जे सिनेह रहल ओ टूटि जाएत।

हरदेवकेँ गोड़ लागि रिजल्टक जानकारी दैत रमेश आंगन गेल। सरोजनी घरसँ निकलि आबि रमेशकेँ पूछलक- “कओलेजमे नाओं लिखाएब की नै?”
“पढ़ैक इच्छा तँ अछि मुदा......।”
भगवतीक रूप जकाँ आँखि निड़ाइने सरोजनी कहलक- “रमेश, हम निश्चय कऽ लेलौं जे अहींसँ वियाह करब। तखने दुनू परिवारक कल्याण होएत।”
सरोजनीक बात सुनि रमेशक करेज डरसँ कँपए लगल। आँखिमे डर सन्हिया गेलै। मुदा सरोजनी बजिते रहल- “दुनू गोटे एम.ए. तक पढ़ि, गामेमे हाइ स्कूल बना शिक्षक बनब।”
कँपैत हृदेसँ रमेश पूछलक- “पिताजी विरोध करताह, तखन?”
“अपन मालिक हम स्वयं छी। हुनको बुझौबनि। पुतोहू इसाइ भेलनि से बड़बढ़िया। अखन धरि जातिक पहाड़ जे समाजमे बनल अछि ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ पेट नै भरैत, नाङटकेँ बस्त्र नै दऽ सकैत, बेघरकेँ घर नै बना सकैत। मूर्खकेँ पढ़ा नै सकैत। लूटैत इज्जतकेँ बचा नै सकैत ओइ समाजकेँ विरोध करवाक कोन अधिकार छै।”
“सभ रहलाक वादो समाजमे मिल कऽ रहब आवश्यक होइत।”

“हँ होइत। जे समाज अछि ओ हमरा अहाँ छोड़ि कऽ नै अछि। जे समाज हमरा विचारकेँ महत्व नै देत ओहो अपन विचार थोपि नै सकैत अछि। तँए समाज सोचअ जे हमर कल्याण केना होएत।”

सरस्वतीक फोटोमे पहिराओल फूलक माला धड़सँ उताड़ि सरोजनी रमेशक गरदनिमे पहिरा देलक।

::::::::::

१६ सुभद्रा

सुरूजक किरण अन्हारकेँ धकलैत, संघर्ष करैत, पाछु मुँहे ठेल रहल अछि। जीव-जन्तुक गाढ़ निन्न पतराए लगल अछि। चिड़ै-चुनमुन्नी प्रभात बेलाक धुनमे मस्त। गाए-महींस घरसँ बहार होइले डिरियाइत। एकाएक कमलनाथक ऐठाम कन्नारोहट शुरू भऽ गेल। गाएक डोरी पकड़ि रविया बहार करैत छल आकि सुनलक। कानब सुनि रविया अकानए लगल आकि गाएक डोरी हाथसँ छूटि गेलै। गाए पड़ा गेल। गाए पकड़ैले रविया पाछू-पाछू दोड़बो करै आ कानबो अकानए। बेहटवाली कलपर पानि भरैले अबैत छलि आकि गाए हूरपेट देलकै। रास्ताक किनछेरिमे बनल खाधिमे गिर पड़लि। चोट तँ कम्मे लगलै मुदा सड़ल थाल-पानि सौंसे देह लागि गेलै। चुट्टीक धारी जकाँ लोक कमलनाथक ऐठाम जाय लगल।

एक तँ ब्लड प्रेशरक रोगी दोसर दुखद समाचार सुनि कमलनाथ दलानक ओसारपर अचेत पड़ल। बेधड़क गिरने कमलनाथक अगिला दुनू दाँत टुटि गेलनि जइसँ खून बहए लगलनि। जिज्ञासा केनिहार हुनके मृत्यु बुझि आँखिसँ नोरो बहाबे आ नाक लग आंगुर दऽ, छातीपर हाथ दऽ, परेखबो करै। छातीक धुकधुकी आ साँस ठीके रहनि। मोतीहारी अस्पतालमे डॉक्टर चन्द्रकान्त कार्यरत रहथि, ओहो गाम आएल। चन्द्रकान्त अबिते कमलनाथकेँ देख बीअनि हौंकैले कहि, बेटीकेँ कहलखिन- "बौआ, कने बैग नेने आबह?" बेटी दौड़ल आंगन गेली। टेबुलपर राखल बैग लऽ दौड़ल आएल। आला निकालि चन्द्रकान्त जाँच कए, एकटा सूइया लगा देलकनि। दशे मिनटक पछाति कमलनाथ होशमे एला। होशमे अबिते कमलनाथ कानि-कानि बजए लगलाह- "अन्याय भऽ गेल, जुलूम भऽ गेल। बापरे बाप, एहेन बिपत्ति ककरो नै दिहक। हे भगवान हमरा कोन सन्ताप देखैले रखने छह।" बजैत-बजैत फेर बेहोश भऽ गेलाह। आंगनमे कमलनाथक पत्नी सुनयना कपार पटकि-पटकि फोड़ि अचेत भऽ ओंघराएल। एक्के-दुइये आंगनसँ दरबज्जा धरि लोकक करमान लागि गेल। दछिनबरिया घरमे सुभद्रा बताहि जकाँ ओंघरनिया दैत।

अगहनक वियाह-पंचमी दिन सुभद्राक वियाह इंजीनियर बड़क संग भेल। दू भाँइक बीच एकटा बेटी रहने कमलनाथ हृदए खोलि वियाहमे खर्च केने। आगू पढ़ैले जमाइ अमेरिका जाइत रहथि। हवाइ जहाज दुर्घटना भऽ गेल। यात्रीसँ चालक धरि कियो ने बँचल। वएह खबरि टेलीफोनसँ चारि बजे भोरमे कमलनाथकेँ एलनि। जे सुनिते पिरवारमे, जेना पहाड़ टूटि ककरो देहपर गिरैत, तहिना भेल। खरचाक सोच नै मुदा सुभद्रा विधवाक जिनगी विताओत सोच तकर। अखन धरि समाजो जकरा अधला बुझैत। अशुभ बुझैत।

जेहने सुभद्रा हँसमुख तेहने सुन्नरि। जोरसँ बजैत कियो ने सुनने। पढ़बोमे चन्सगर। घरक सभ काजक लूरि माएसँ सिखने। भोरे उठि फुलडाली धोय फूल तोड़ि नहा कऽ पूजा करैत। सालो भरि जे उपास होइत सभ करैत। पिताकेँ खुऔने बिना सुभद्रा मुँहमे पानियो ने लैत। भगवानकेँ कोसैत नवटोलवाली बाजलि- ‘‘भगवानो नीकेकेँ अधला करै छथिन। पपियाहा सबहक बेरमे सुइत रहताह।’’

ओसारक खूटा लागल ठाढ़ भेल सुशील सभ देखैत-सुनैत। किछु काल देख गुम्मे अपना ऐठाम विदा भए गले। अपना ऐठाम आबि कोठरीक चौकीपर पड़र रहल। सुशीलक मोनकेँ, जते घटना नै कझोड़ैत तइमे बेसी समाजक व्यवहार। अखन धरि सुशीलक विचार पढ़ाइ समाप्त कऽ राँचिएमे नोकरी करैक छल। मुदा औझुका घटना विचारकेँ बदैल देलकनि। जहिना भूमकम भेलापर खाधि ढिमका बनि जाइत आ ढिमका खाधि तहिना। समाज शास्त्रक प्रोफेसर पिता रहथिन। दू तल्ला कोठा राँचीमे बनौने। दश कट्ठा बाड़िओ कीनने। जइमे तीमन-तरकारी उपजबैत। एकाएक शुशीलकेँ गामक आकर्षण आ संकल्प जागल, जे कुबेबस्थाकेँ मेटौने बिना समाजक नीक नै भऽ सकैत। जहिक चलैत ढेरो वहिन सभ पापिनी बनि समाजमे मुँह नुका-नुका जीबैत छथि। परीक्षा लग रहने दोसर दिन सुशील बससँ राँची विदा भऽ गेल।

सुशीलक मन्हुआएल मुँह देख माए-पिता सन्न भऽ गेलखिन। बिना किछु बजने सुशील दुनू गोटेकें गोड़ लागि नहाइले गेल। माए थारी परोसलक। चिन्तित भऽ पिता कुर्सीपर बैसल, टेबुलपर केहुनिक बले मुँहपर हाथ दए सोचए लगलाह। नहा कऽ आबि सुशील खाए लगल आकि माए पूछलकनि- "बौआ, बसमे बेसी झमार भेल जे मुँह सूखल अछि?"

"नै।"

"तखन मन्हुआएल किए छी?"

"आब ऐठाम (राँचीमे) नै रहब। परीक्षा दऽ गाम चल जाएब।"

माए-बेटाक गप-सप्प कान पाथि पिता सुनैत। सुशील पढ़ाइसँ किएक विमुख भऽ रहल अछि। ऐ तारतम्यमे प्रोफेसर तरूणक दिमाग ओझराएल। रंग-विरंगक सवाल-जबाव मनमे उठए लगलनि। सिर्फ तीन साल अपन नोकरी बँचल अछि। अखन धरिक कमाइक मकानेटा अछि के रहत? अपन इच्छा छल जे सुशील एम.ए. कऽ ऐठाम नोकरी करत। सभ मिल कऽ रहब। जे सभ विचार धुरा बनि हवामे उड़िया रहल अछि। सुशील नवयुवक अछि जे निर्णए कऽ लेत तइमे पाछू नै हटत। जिद्दी तँ ओ शुरूहेसँ रहल। जँ हम दुनू परानी राँचीमे रही आ सुशील गाममे, तखन ककर सेवा के करत? राँचीओक वातावरण जे पहिने छल ओ धीरे-धीरे कम भेल जाइत अछि। सेवा-निवृत्ति भेलापर पेंशन भेटत। पिताजीक देल गाममे बहुत सम्पत्ति अछि। ऐठामक सभ कुछ बेच गामेमे बना लेब। सुशीलोक वियाह नै ऐ साल तँ आगू साल करबे करब। गामेमे सभ मिल रहब।

सुभद्राक समाचार रूपलाल बाबाक कानमे पड़ल। शरीरसँ असमर्थ बाबा। १९३४ई.क भूमकममे सेवाक इमानदारीक चलैत सभ गाँधीजी कहए लगलनि। लोकक बीच बाजव, गोलवन्द करब बाबा जहलमे सिखलनि। आजादीसँ पहिने बकास्त सिक्कमी जमीनक लड़ाइ लड़ि गरीबक बीच सेहो बँटौलनि। जमीन्दार सबहक विरोध ऐ रूपे रूपलाल बाबा केलनि जे सस्तेमे बेच-बेच सभ गामसँ पड़ा गेल। समाजमे ककरोसँ कोनो भेद-भाव नै। ने जाति-पाति ने छोट-पैघ

ने ई धरम-उ धरमक पछड़ामे कहियो पड़लाह। सबहक ऐठाम एनाइ-गेनाइ, नीक-बेजाएक गप-सप्प करब शुरूहेसँ रहलनि। आजादीक उपरान्त जखैन गाँधीजी गोलीक शिकार भेलाह रूपलाल बाबाक मोन टूटि गेलनि। अपन जीवन-यापनक लेल समाजसँ सिकुड़ परिवारमे समा गेलाह। जवानीक सभ अरमान आ क्रिया-कलाप बूढ़ाढ़ीमे चूर-चूर भऽ गेलनि।

आनर्सक परीक्षा समाप्त होइते सुशील गाम चल आएल। बसक झमारसँ भरि दिन घरमे सुतले रहल। गामक जानकारी पेबाक लेल सुशील भोरे चाह पीब रूपलाल बाबा ऐठाम गेल। पाकल आम जकाँ जिनगीसँ लड़ैत रूपलाल बाबा दलानेपर बैस सूइया-डोरासँ धोती सिबैत। एकटा पतरे ठेंगा बगलमे राखल। आँखिक ज्योति सेहो कमि गेलनि। पाएर छूबि सुशील गोड़ लगलकनि। अनचिन्हार बुझि बाबा पूछलखिन- ''नै चिन्हलौं?''
विस्तारसँ अपन परिचए दऽ सुशील आगूमे बैसल। पहिलुका सभ वृतान्त रूपलाल बाबा कहलखिन। जिज्ञासा भरल स्वरमे सुशील पूछलकनि- ''समाज कल्याणक संबंधमे अपनेक की विचार अछि?''
''बौआ, हमर नेता गाँधीजी छलाह। जाबे जीबैत रहलाह आ जे कहथिन जान-परान लगा लड़ैत रहलौं। कहिओ पाछू घूमि नै तकलौं। मुदा जखैन हुनका गोली लागव सुनलौं मन टूटि गेल। जखैन गाँधीजी सन त्याग-तपस्वी नेता गोलीसँ दागल गेलाह तखन समाजक कल्याण केना होएत। पढ़ल-लिखल नै छी। हुनकर लिखल पोथी जे कीनलौं ओहिना बक्सामे राखल अछि। जकरा हाथमे देशक शासन गेल, अपन सुख-भोगक खातिर, अपना-अपना ढंगसँ गाँधी जीक विचारकेँ व्याख्या करए लगल। बेइमानी-शैतानी बढ़ैत गेल।''
''बड़ अनुभवक बात बाबा कहलौं।''
''जहलमे बड़का नेता सभ कहथिन जे गामक भीतरकेँ सभ कुछ गौआँक थिक। ओकरा अधिकसँ अधिक उपजा गामक विकास करब। छोट-छोट कारोवारक जन्म हएत। आमदनी बढ़ैत जेतै छोट कारोवार पैघ बनैत जाएत। जते पैघ कारोवार होइत जेतै ओते खुशहाल गाम होइत जाएत। छोट-छीन झगड़ा अपनेमे फड़ियाएत। सबहक धिया-पूता पढ़त-लिखत। दवाइ-दारूक

जोगार सरकार करतै। स्वस्थ समाज स्वस्थ देशक निर्माण करत। सभ सपना भऽ गेल। हृदए विदीर्ण भऽ गेल। जते दिनका दाना-पानी अछि, जीबै छी। सभकेँ सभ जाल बुनि फँसबए चाहैत अछि। शान्तक जगह अशान्त लए लेलक। प्रेमक जगह कटुका। समाज टूटि-टूटि कमजोर बनैत जा रहल अछि।''

जे विचार सुशीलकेँ आइ धरि नै आएल छल ओहिक लेल हृदेमे जमीन तैयार हुअए लगल। गुम-सुम्म सुशील एक टकसँ रूपलाल बाबा दिस देखैत। जहियासँ सुभद्राक संबंधमे बाबा सुनलनि तहियासँ राति कऽ निन्न नै होइन। भादो मास जकाँ सदिखन आँखिसँ नोर झहैरते रहनि। सोगाएल स्वरमे सुशील पूछलकनि- ''बाबा जै विपत्तिमे सुभद्रा फँसि गेलि, ओइसँ उवरबाक कोनो रास्ता छै?''

''हँ अछि। जै विपत्तिक चर्चा केलौं ओ बनौआ छी। ओकरा सुधारल जा सकैत। सुधारलासँ ओइ विपत्तिक अंत भऽ जेतै।''

''सुधारवाक की रास्ता हेतै?''

''समाजमे सबहक लेल ई विपत्ति नै अछि। किछु जातिक बीच अछि। ऐ लेल नौ-जबानकेँ डेग उठबए पड़त। मेहौता बड़द जकाँ हमहुँ सभ पाछू-पाछू चलब।''

उत्साहित भऽ सुशील पूछल- ''बाबा एहिक लेल जे करए पड़त करब। अहाँक अर्शीवाद चाही।''

''बौआ, जना लोक जीबैत अछि तना हम मरि गेल रहितौं। अस्सीसँ उपरे वएस भऽ गेल। दधीचिक हड्‌डी जकाँ जे जरूरत होएत अखनो तैयार छी।''

''अखन जाइ छी। काल्हि खन फेर आएब।'' कहि सुशील विदा भेल। सुतल जवानी रूपलालमे पुन: जागि गेलनि। देहमे नव शक्तिक संचार हुअए लगलनि। थरथर कपैत शरीर, हाथमे ठेंगा नेने बाबा कमलनाथ ऐठाम विदा भेलाह।

सोनपुरवाली दादी चौपारिपर सोफ विछा बारहोटा पोता-पोतीकेँ खेलबैत रहथि। कोरामे कतेक कऽ रखितथि। सभ धिया-पूता खेलाइत। खेलबैले दादी एकटा छिपली आ कड़चीक टुकड़ी रखने। जहाँ कोइ कानए लगैत तँ दादी छिपली बजा गीत गावए लगैत। बच्चा चुप भऽ दुनू हाथे थोपड़ी बजा दादीक संग गीत गावए लगैत। दादीक लाटमे आनो-आनो गोटे अपना बच्चाकेँ आनि खेलबैत। महरैलवाली हँसमुख। सदिखन हँसिऐ कऽ बजैत। मुदा आइ मन्हुआएल देख ननौरवाली चुटकी लैत बाजलि- "दीदी, बड़ मन्हुआएल छथि, भैया किछु कहलकनि?"

विचहिमे कछुवीवाली टपैक कऽ बाजलि- "भैयाकेँ तँ दीदी खेलौना बनौने छथि, ओ की कहथिन।"

कछुबीवालीक बात सुनि महरैलवाली उत्तर देलखिन- "नै कनियाँ, सुभद्रा दाइक दुख मोन पड़ि गेलि। भरि दिन अन्नो ने नीक लगल।"

सुभद्राक नाओं सुनि ठाढ़ीवाली च्यू,च्यू करैत बाजलि- "कनियाँ, तूँ सभ नव-नौतुक छह। नै बुझल हेतह। हमर जे मैझली पुतोहू अछि ओ दोती अछि। पहिलुका घरबला जे रहै ओ बौर गेलै।"

कछुबीवाली पूछलक- "कतऽ बौर गेलै?"

ठाढ़ीवाली उत्तर दैत बाजलि- "दिल्लीमे नोकरी करए गेल, जे घूमि कऽ नै आएल। बेटा तँ हमर कुमार रहए। बापक मन दोती लड़कीसँ वियाह करैक नै रहनि। मुदा विदेसरक मेलामे जे कनियाँ देखलौं देख कऽ मनमे गड़ि गेलि। हमरे जोरसँ वियाह भेलै। अखन ओकरेपर गिरथाइन बनल छी। जेठकी तँ तेहेन अछि जे कहिया ने झोटिया कऽ बइला देने रहिताए।"

सोनपुरवाली दादीकेँ सभ बुद्धियारि आ बेसौउ बुझैत। ओ कहए लागलीह- "कनिया तोरा सभकेँ नै बुझल हेतह। हमर वियाह ढेरवामे भेल रहए। दादी जीबते रहथि। ओ दोसर वियाहकेँ अधला बुझैत। बाबू हमर बड़ विचारक। साल भरिक बाद माएकेँ कहलखिन- "बुच्चीक दोसर वियाह कऽ देबै जाबे अपना दुनू गोटे जीबै छी ताबे ने। जखैन मिर जाएब तँ ओकर के देखतै।

गाममे तँ देखते छिऐक जे केहेन-केहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि। खानदानक नाक कटि जाएत। हम सुनलौं तँ बुकौर लागि गेल। माए पोलहा-पोलहा बुझौलक। हम हँ कहि देलिऐक। अखन देखते छहक जे भगवानक दयासे केहेन फड़ल-फुलाएल परिवारमे सुख करै छी। भगवान सभकँ सुख-भोग देथुन। ककरो मन कलपै नै।''

रूपलाल बाबाकँ अबिते देख कमलनाथ आगू बढ़ि बाँहि पकड़ि दुआरपर अनलकनि। दुनू आँखिसँ कमलनाथकँ नोर टघरऽ लगलनि। कानि-कानि अपन दुखनामा बाबाकँ सुनबए लगलनि। बबोक आँखिसँ नोरक टघार गालपर होइत चौकीपर ठोपे-ठोप खसए लगल। कनैत रूपलाल बाबा कमलनाथकँ कहलखिन- ''कमल, समाज एहेन नाशक रास्ता धेने अछि जे ककरो नीक नै हेतैक। आइ तोरा जे भेलह कत्ते दुखद अछि हमर नेता गाँधी जी कहथिन मर्द-औरतक बीच जे विषमता अछि ओकरा मेटबए पड़त। तखन समाज एकरंग बनत। अखनो देखै छी जे मरद तीन-तीनटा वियाह करैत अछि मुदा औरत जिनगी भरि बैधव्य भारसँ कलंकित जरैत रहैत अछि ने कोइ देखिनिहार आ ने कोइ ओकरा मनुख बुझिनिहार।''
''भाय, एकर उपाए?''
''हँ छै। लकीरक फकीर-बनब नीक नै। पैघ-पैघ समाज सुधारक समाज सुधारलनि। अखनो किछु बाँकी छै। जे हमहीं-तोहीं ने सुधारबै।''

कमलनाथक हृदयमे जे व्यथाक पहाड़ बनल अछि आस्ते-आस्ते पघिलए लगल। चेहरामे चमक आ मुँहमे मुस्कान आबए लगल। उत्साहित भऽ कहलखिन- ''भाय, समाज अहाँकँ गुरू मानैत छथि। ककरो नीक छोड़ि अधला जिनगीमे नै केलिऐक। हमहूँ अहाँसँ बाहर नै छी। जे कहब मानि लेब।''

कमलनाथक बदलल विचार रूपलाल बाबाकँ जुआनीक उमंग आनि देलकनि। ठहाका मारि दुनू गोटे हँसलाह। गद्-गद् हृदेसँ रूपलाल बाबा बजलाह-

“कमल तोरा कोनो तर्दुत नै करए पड़तह। सभ भार हमरा उपर। हमहूँ जिनगीक अंतिम घड़ीमे जुआनिक कएल कीर्तिकेँ पुन: जोड़ि जीब। समाजक बीच ढोलहो दऽ कहबै जे पढ़ल-लिखल नौजबान सुशील अछि। देखबोमे भव्य, विचारो उत्तम छै। ओकरा संग सुभद्राक वियाह होएत।”
हँसैत कमलनाथ बाजलाह- “सुभद्रा हमरे बेटी नै समाजक थिकैक। तँए नीक-अधलाक भार समाजक उपर छै।”
उठि कऽ ठाढ़ होइत रूपलाल बाबा बजलाह- “कन्यादान हम करब”

गाममे फगुआक उमंग जकाँ रंग-अबीर उड़ए लगल। मुरझाइल सुशील एकाएक प्रफुल्लित भऽ गेल। जहिना जाड़क मासमे ठंढ़सँ गाछ-बिरिछ मरनासन्न भऽ जाइत मुदा बसन्तक वयार पबिते लहलहा उठैत, तहिना समाजमे भेल।

सौंसे गामक लोक ब्रह्मस्थानमे जमा भेलाह। की मरद की औरत, की बूढ़ की बच्चा सभमे खुशीक आनंद। समाजक बीच सुशील-सुभद्राक वियाहक माला पहिरा सम्पन्न भेल।
लोक नारा लगबए लगल- “रूपलाल बाबा- अमर रहे-२”
“विधवा वियाह- अमर रहे-२”

::::::::::

१७ सोमना काका

भरि राति ओछाइनपर एक करसँ दोसर कर उनटैत-पुनटैत कखनो उठि कऽ बैसै तँ कखनो पेशाव करैले बहार निकलै। पोह फटिते चिड़ै-चुनमुनीक चहचहेनाइ सुनि सोनमा काका डिबिया लेसि कुट्टी काटए लगल। घरवाली रूपनीक इलाज करबैले डॉक्टर ऐठाम जाएब छलैक। काल्हिये डेढ़ सएमे खस्सी बेचलक। सबेरे विदा हएब तखन ने समैपर पहुँच बेर धरि घुरि कऽ आइब सकब सोचि सोनमा काका धड़फड़ करैत गाम परक काज सम्हारए लगल। घरवालाक चाल-चुलि पाबि रूपनी सेहो उठि कऽ हाँइ-हाँइ मकैक चिक्कस निकालि चुल्हि लग पानि छीट पजारलक। रोटिपक्का धिपै दुआरे चुल्हिपर चढ़ौलक। चिक्कसमे लसिये ने कपड़ै तँए बेसी काले सानि दुनू हाथ पानिमे भिजा-भिजा रोटी बना रोटिपक्कामे देलक। रोटिपक्कामे रोटी दऽ कोठीपर राखल मौनीमे सँ चारिटा अल्लू निकालि चुल्हिमे घोसियेलक। जाबे किरिण फूटै ताबे रोटी आ सन्ना बनौलक। सोनमा काका नाइदमे कुट्टी दऽ पानि छीट दुनू हाथे मिला गाएकेँ घरसँ बहार केलक। लोटा लऽ कलपर जा हाथ-मुँह धोय पानि नेने आएल। अपनेसँ पीढ़ी लऽ जलखै करैले बैसल। रूपनी पतिकेँ थारी आगूमे दऽ कलपर जा हाथ-पाएर धोय आबि चुल्हिये लग बैस खाए लागलि। जलखै खा धोती, गोल-गला आ पाएरमे चट्टी पहिर सोनमा काका रूपनीकेँ कहलक- ‘‘कत्ते दूर जाए पड़त से नै बुझै छिऐ, फुरती करू?’’
काँख तर छाता कान्हपर तौनी, धोतीक खूँटमे रूपैया बन्हलक। रूपनीकेँ हुक्काक चहैट। बिना हुक्काक भरि दिन केना कटतै तँए बीड़ी-सलाइ खोंइछामे लऽ तैयार भेल। आगू-आगू सोमना काका पाछू-पाछू रूपनी बाजार दिसक बाट पकड़ि विदा भेल।

तीन महला भारी-भरकम मकान देख सोनमा काकाकेँ फाटकसँ भीतर जेवाक साहसे ने होइ। पीचपर ठाढ़ भऽ रिक्शाबलाकेँ पूछलक- ‘‘बौआ डॉक्टर सहाएब ऐठाम जाएब?’’

''जा-जा वएह मकान डॉक्टर सहाएबक छियनि।'' रिक्शाबला हाथक इशारा दैत कहलक।

पीचसँ उतरि फाटक लग सोनमा काका जाइते छल आकि खाटपर टँगने एकटा रोगीकेँ भीतर जाइत देखलक। सोनमो काका पाछू-पाछू बढ़ल। लोकक करमान लगल देख रूपनीक दिल दहलि गेल। मने-मने बाजलि- ''बाप रे बाप एते दुखताह कतऽ सँ एलै। असकरे डॉक्टर सहाएब केना इलाज करथिन।''

सोनमा काका भीतर जा कम्पाउण्डर लग फीस दऽ पुरजा बनौलक। पुरजा दैत कम्पाउण्डर सोनमा काकाकेँ कहलक- ''ताबे बाहर जा बैसू। जखन नम्बर आओत तखन सोर पारि लेब।''

सोनमा काका बाहर निकलि फुलवारीमे घूमि-घमि फूल देखए लगल। रंग-विरंगक फूल फुलवारीमे। कोनो-कोनो सुगंधित आ कोनो-कोनो बिना सुगंधेक। कियारी बनल। पतयानीमे फूलक गाछ रोपल। पटैक लेल पनिबट बनल। टहलै-बूलैले दू हाथ चाकर रास्ता। रास्तापर गदगर दूभि। पछबारि भाग नीमक गाछ तर बैस सोनमा काका तमाकू चुनबए लगल। चून झाड़ि तमाकू मुँहमे लऽ आगू तकलक आकि दश-बारहटा खढ़ियाकेँ गाछक दोगे-दोग दौड़ैत देखलक। कोनो उज्जर, कोनो कारी कोनो भटरंग देख दुनू परानी सोनमा काका देखए लगल। हवा सिहकैत। नीमे गाछ तर गमछा बिछा सोनमा काका पड़ि रहल। थोड़े-कालक बाद कम्पाउण्डरकेँ सोर पारिते दुनू गोटे डॉक्टर लग पहुँचल। रूपनीकेँ बेंचपर बैसाए डॉक्टर आला लगा जाँच करए लगलखिन। बीमारीक भाँज नै बुझि डॉक्टर सहाएब सोनमा काकाकेँ पूछलखिन- ''कत्ते दिनसँ बीमार छथि। की सभ होइ छन्हि?''

मिरमिरा कऽ सोनमा काका बाजल- ''पौरूँका साल गाममे हेजा भेलै। बड़ लोक मुइलै। हमरो जेठका बेटा आ मझली बेटी मरि गेल। तहियेसँ बीमारीक परबेश भऽ गेलै।''

''कतेक बाल-बच्चा अछि?''

''आब एक्केटा छोटकी कनटिरबी रहल।''

डॉक्टर सहाएब एकटा टॉनिक लिख कागज दऽ देलखिन। कम्पाउण्डर सामनेमे रोडक पछिम दवाइ दोकान हाथक इशारासँ सोनमा काकाकेँ देखा देलक। खाट उठा कऽ जे अनने छल ओकरा देख सोनमा काका पूछलक- ‘‘भाय, तोरा रोगीकेँ की भेल छह?’’
माथ कुरियबैत ओ बाजल- ‘‘की कहब भैया, हमरा भायकेँ दूटा स्त्री। अपने हर जोतए गेल रहए। अंगनामे दुनू शौतीन झगड़ा करए लागलि। छोटकी बुफगर। ओ बड़कीकेँ उठा कऽ सिलौटपर पटैक देलक आ मुकियबए लगल। मुकयबैत-मुकयबैत बेहोश कऽ देलक। जाबे भैयाकेँ खबरि होय आ आबे ताबे थारी लोटा नुआक मोटरी बान्हि समदौआ पड़ा गेलि। हमहूँ गामपर नै रही जखन एलौं तँ देखलऐ। लगले एक सए रूपैया पितियाइनसँ लऽ टँगने एलौं।’’

दवाइ फीस लगा सोनमा काकाकेँ सए रूपैया खरच भऽ गेल। रूपैया गनि देखलक तँ पचास रूपैया बँचल। मने-मन सोनमा काका सोचलक जे कहिया बाजार आएब कहिया नँइ। विछानोक तकलीफ अछि आ अन्नो राइ-छित्ती होइत रहैए। किराना दोकान जा सुपारीबला खलिया चारिटा प्लास्टिकक बोरा कीन लेलक। अन्न रखैले दूटा बोरे राखब आ दूटाकेँ सियनि उधारि कऽ बिछानो बना लेब। पथारो सुखत आ सुतबो करब। जखन बाजारसँ बहराएल आकि धक दऽ सोनमा काकाकेँ मोन पड़ल जे बाजार एलौं किछु खेलौं कहाँ? घुरि कऽ थोड़े आगू बढ़ल आकि मुरही कचड़ी बेचैत एकटा बुढ़ियाकेँ देखलक। पाँच रूपैयाक मुरही कचड़ी मिला सोनमा काका कीनलक। अधा अपने गमछाक खोचड़ि बना लेलक अधा धरवाली रूपनीकेँ देलक। रूपनी खोंइछामे लऽ लेलक। दुनू गोटे रस्तो चलै आ खेबो करै। कचड़ीकेँ गुड़ि मुरहीमे सोनमा काका मिला देने। थोड़े दूर आगू बढ़ल तँ मुँहमे मिरचाइक टुकड़ी पड़लै। कड़ू मिरचाइ रहने सोनमा काकाकेँ हुचकी उठल। दुनू आँखिसँ नोर सेहो गिरए लगलै। जहाँ हाथसँ नोर पोछलक आकि आँखियोमे लागि गेलै। पानिक कतौ पता नै। सोनमा काका सुसुएबो करै आँखिसँ नोरो चुबै आ हुचकबो करै। मील भरि जखन बढ़ल तँ रास्ताक बगलेमे उत्तरबारि भाग

इनार देखलक। इनार देखते सोनमा काकाकेँ हूबा भेल। इनारक चारू कात सिमटीक लहरा बनल। चारि-पाँच गोटेकेँ पानि भरैत देख हिचकैत सोनमा काका कहलक- "बुच्ची, कने पानि पीयाबह, कडू लागल अछि।" बीचेमे हुचकी उठलै। हुचकैत आ सुसुआइत सोनमा काकाकेँ देख पनिभरनी सभ आँचरसँ मुँह दाबि-दाबि हँसवो करै। करिया डोलमे पानि भरि सोनमा काकाकेँ देलक। पानि पीब सोनमा काका इनारक बगलेमे कनैल फूलक छाहरिमे बैस खाए लगल। करिया भूल्लीकेँ कहलक- "हे गै पितररिया आँखिवाली बाबाकेँ देख-देख हँसै छीही?"

आँखि डेढ़ करैत भूल्ली करियाकेँ कहलक- "हे गै जरसी गाए अनके टेटर देखै छीही। दादी (रूपनी) अखनो दुनू गोटे हाट-बाजार घूमैले जाइत अछि"

बिचहिमे नेङरी बैहरीकेँ कहलक- "अपना सभ चल। एकरा दुनूकेँ ठिठिआए दही। नहेवो ने केलौं हेन।"

सोनमा काका पानि पीब तमाकू चुनबए लगल। रूपनी बीड़ी लेसि पीबए लागलि। दुनू गोटे रास्ता धेलक। अपना गामसँ कोस भरि पाछुए दुनू परानी सोनमा काका रौदमे गरमा गेल। रास्ताक बगलेमे पीपरक गाछ देख सुसताए लागल। भोलवा, पहिनेसँ सुसताइत छल, देख सोनमा काका पूछलक- "तूँ कात्तऽ सँ अबैत छेँ भोला?"

उठि कऽ बैसैत भोलवा उत्तर देलक- "तेल पेड़बैले गेल छलौं। रौदमे मन घूमए लगल। काकीकेँ कत्तऽ लऽ गेल छेलहक?"

"की कहबौ भोला। तीन सालसँ बिपत्तिये-विपत्तिमे पड़ल छी। साल भरिसँ बुच्चिया माए तरे-तर खियाइत जाइत अछि। पहिने होइ छलै जे बेटा-बेटी मुइलाक सोग भऽ गेलै। मुदा डॉक्टर लग गेलौं ते बीमारी ठहरल।"

"देखहक काका, ऐ देहियाकेँ कोन ठेकान। मुदा जाबे तक शरीरमे परान रहै छै ताबे तक सेवा करक चाही। जाबे तक आँखि तकै छह ततबे काल ई दुनियाँ। स्वर्ग-नर्क सभ एतै छै।"

"बेस कहलेँ भोला। ई तँ अपनो सोचै छी जे घरवालीक भार घरबलापर रहैत छै।"

''काका हमर विचार अछि जे दोसर वियाह कऽ लाए। बिना बेटे बापकेँ गति नै होइ छै।''

''भोला तूँ चौल करै छँ। बुढ़ाढ़ीमे दोसर वियाह कऽ गरदनिमे ढोल बान्हब। जाबे थेहगर छी कहुना-कहुना दिन कटिये जाएत। बादमे बुझल जेतै।''

तीनू गोटे गाम दिस चलल। थोड़े आगू एलापर पिपराहीमे हल्ला सुनलक। कान लग हाथ दऽ दऽ सभ सुने जे हल्ला कथीक होइ छै। ओना गामे छऐ, कोनो ने कोनो हल्ला होइते रहैत छै। हल्ला सुनि डेगो नमहर दैत बढ़ल। गाममे प्रवेश केलक तँ हल्ला स्पष्ट सुनाइ पड़ए लगलै। कियो कहै 'नीक भेलै' तँ कियो कहै 'अधला भेलै।' तीनू गोटेकेँ कोनो भाँजे ने लगै। रास्ता दछिनबारि भाग मुनेसरकेँ दरबज्जापर बैसल देखलक। तीनू गोटे रास्ता छोड़ि मुनेसर ऐठाम जा पूछलक। मुनेसर अखरे चौकीकेँ अंगपोछासँ झाड़ि तीनू गोटेकेँ बैसैले कहि कहए लगलै- ''बजैत लाज होइए। मुदा जब पूछलौं तँ कहबे करब। आ-हा-हा रामलोचन काका छल। कहयो ककरो अधला नै केलक। आ ने ककरोसँ कहिओ मुहाँ-ठुठी भेलै। सभ साल कातिकमे भोज कऽ सौंसे गौआँकेँ खुआबैत छलाह। कोनो चीजक कमी नै। बेचारे मरलाह आकि तेहन चालि-चलैन बेटा धेलक जे सभ सम्पत्ति बोहा देलक। घैला-घैइले ताड़ी पीब अनेरो लोककेँ गरियबै। घरारियो नै बचलै। बापक राखल नाओं रामकिसुन रहै जकरा सभ बतहा कहए लगलै। वएह मुइल तँए कोइ नीक कोइ अधला कहै छै।''

सोनमा काका मुनेसरसँ पूछलक- ''परिवारमे के सभ छै?''

''एकटा तेरह-चौदह बर्खक बेटा छै। ओहो माइटुग्गर अछि। समदौआ बौह जे छलै ओ महिना दिन पहिने भागि गेलै। अन्न-अन्नकेँ बतहा मुइल। अँगनामे ओहिना पड़ल अछि। ने बाँस छै जे चचरी बनत ने कपड़ा छै। लगमे बैस बेटा कनै छै।''

मइटुग्गर सुनि रूपनीक आँखिमे नोर आबि गेलै। सोनमा काकाक हृदए पसीज गेलै। बजिते-बजिते मुनेसरक आँखिमे सेहो नोर आबि गेलै। सोनमा काका

मुनेसरकँ कहलक- ''भाय सहाएब मुरदा जरा दियौ। बेटा धन छिऐ चरबाहियो कऽ के जीबे करतै।''

सोनमा काकाक विचार सुनि मुनेसरक मन बदैल गेल। चौकीपर सँ उठि बाजल- ''सभ कोइ चलि कऽ देखियौ। जँ कोनो जोगार हेतै तँ अंगनेमे बेटासँ मुँहमे आगि दिया गारि देबै।''

रामकिसुन बतहा बेटाक नाओं भूखना। जहिना पूब मुँहे बतहा सुतल तहिना अछि। भूखना लगमे बैसल कनबो ने करैत। कते कानत। कनैत-कनैत मुँह दुखा गेलै। जहिना ओसमे भीजल दुभि रौद लगिते सूखि जाइत तहिना मुनेसरक क्रोध भूखनाक दशा देख सूखि गेल। हृदए पिघलि गेलै। डेन पकड़ि मुनेसर भूखनाकँ उठा कहलक- ''बच्चा अखनसँ तोरा हम बेटा बना रखबौ।''

मुनेसरकँ देख टोलोक लोक एकाएकी आबए लगल। सोनमा काकाकँ जे बीस रूपैया बचल छल ओ डॉड़सँ निकालि कपड़ा लए देलक। मुनेसर अपने गाछीमे जरबैले सेहो कहलक। जरना आ चचरीक बाँस सेहो देलक। सभ मिल बतहाकँ जरौलक। समाज समुद्र होइत छै। अधलासँ अधला आ नीकसँ नीक सबहक समाबेश समुद्रे जकाँ समाजोमे होइत छै।

गरमी मास रहने सोनमा काका भोरे हाँसू-छिट्टा लऽ घासले विदा भेल। कने आगू बढ़ल तँ मोनमे एलै जे भूखनाकँ ऐठाम आनि बेटीक संग विआहो कऽ देबै आ रखियो लेब। घुरि कऽ आबि हाँसू-छिट्टा रखि छाता लेलक। आ पिपराही विदा भेल। पिपराही जा मुनेसरकँ कहलक- ''भाय, हमरो बेटा नै अछि एकटा बेटी अछि। विचार भेल जे भूखनाक बेटीसँ वियाह कऽ जमाइ बना रखी। अहू बच्चाकँ नीक हेतै आ हमरो दुनू परानीकँ।''

हँसैत मुनेसर कहलक- ''तेलोसँ चिक्कन। अखने भूखनाकँ नेने जाउ।''

सोनमा काका भूखनाकँ संग केने अपना ऐठाम आएल। गाममे जते घरहटिया अछि सभकँ सोनमे काका सिखौने अछि स्कूल जकाँ सोनमा काका घर बन्हैक एक एकटा काज करैक लूरि सभकँ सिखौने तँइ सभ काका कहैत।

::::::::::

१८ दोती वियाह

पचास वर्षीए प्रोफेसर उमाकान्त दोहरा कऽ वियाह कइये लेलनि। केना नै करितथि? संयमी रहने पचास बर्खक चेहरा पेंइतीस-चालीससँ उपर नै बुझि पड़ैत छन्हि। पत्नीक मुइने घर सुनसान लगए लगलनि। ढन-ढन चैघारा कोठरी सभ करैत रहनि। अपना छोड़ि ने दोसर भैयारी आ ने कियो आन परिवारमे रहनि। दुइएटा सन्तानो! जेठ बेटी प्रोफेसर पतिक संग बनारसेमे रहै छथिन। दुरागमनक पछाति आइ धरि मात्र तीन बेर माए-बापसँ भेँट करए एलीह। बेटो तहिना। डॉक्टरीक अंतिम साल, बंगलोर मेडिकल कओलेजमे पढ़ैत छथिन। सालक दुर्गापूजाटा मे गाम अबैत छथि।

किरिण फुटितहि तीनू बकरी घरसँ निकालि बाहरक खुट्टीमे बान्हि, कटहरक पात आगूमे दऽ बगलमे बैस अपने फुड़ने असकरे बैसल बैहरी बजए लगलीह- ‘‘घोर कलयुग! घोर कलयुग आबि गेल। जते दिन ई दुनियाँ चलैए, चलैए, नै तँ धरती फाटत सभ ओइमे चलि जाएत। सुआइत लोक कहै छै जे मनुक्ख तते पपियाह भऽ गेल अछि जे खिआइत-खिआइत चुट्टी-पीपरी जकाँ भऽ गेल। हमरा सभकेँ भगवान पाड़ लगौलनि जे एतेटा मनुक्ख भेलौं। आबक लोक थोड़े एते-एते हएत। तेहेन हएत जे लग्गी लगा-लगा भट्टा तोड़त।’’

ओना वियाहसँ दू दिन पहिनहिसँ स्त्रीगणक बीच गुन-गुनी शुरु भऽ गेल छलैक मुदा कियो खुलि कऽ नै बजैत छलीह। मुदा आइ सबहक मुँह खुजि गेलनि। टोलक बीच सरकारीक तीनियेटा चापाकल अछि वाकी पाँचो अपन-अपन अंगनेमे गरौने छथि। जहिपर आन-आन नै जाइत। तीनूमे सँ एकटाक हेडे खोलि तड़िपीबा सभ बेच कऽ ताड़ी पीब गेल। दोसराक फील्टरे फुटि गेल छै। जइमे पानिसँ बेसी गादिये अबैत अछि। खाली चैराहा परहक कल बँचल अछि। मुदा ओहो कोन जनमक पाप केने अछि जे भरि दिनमे कखनो आराम नै भेटैत छै। चारु दिससँ पनिभरनी बाल्टी-घैल लऽ आबि-आबि चारु दिससँ

घेरि बेरा-बेरा पानि भरैत। तँए गप-सप्प करैक नीक अवसरो आ जगहो फइल।
चिक्कारी मारैत मझौरावाली सोनरेवाली दिस देख कऽ बजलीह- ''साओनक लगनक गीत अबै छन्हि, दीदी?''
मुस्की दैत सोनरेवाली उत्तर देलखिन- ''जहिना एक्के लोरहीसँ सिलौटपर मिरचाइयो पीसल जाइत अछि आ मिसरिओ, तहिना ने डहकनो फागुनोक लगनमे गाओल जाइत अछि आ साओनोमे गाओल जाइत।''

दुनू गोटेक चिकारीमे गप्प सुनि बेलौंचावाली बजलीह- ''अपना भैंसुरकँ नै देखै छहुन जे काठपर जाइ बिना दुइर भेल जाइ छथुन आ तइपर पुट्ठा खलीफा घर लऽ अनलखुन। से बड़वढ़ियाँ। बड़ चिक्कन। आ प्रोफेसर भैयाकँ अखन की भेलनिहँ। मारे दरमहो कमाइ छथि आ उमेरे कते हेतनि। तीस-पेंतीस बर्खसँ बेसी थोड़े भेल हेतनि।''
मझौरावालीक पछ लैत मुँह चमकबैत मोहनावाली बाजलि- ''जानिऐ कऽ तँ पुरुख छुद्दर होइए। तइमे उमाकान्ते जे छुद्दरपना केलनि तँ कोन जुलूम भऽ गेलै।''
मोहनावालीक कडुआएल गप सुनि बेलौंचावालीक मन जरए लगलनि। तुरुछि कऽ बजलीह- ''सभ पुरुख तँ छुद्दरे होइए मुदा मौगी तँ सभटा गिरथाइने होइए। सएह ने। सत-सतटा मुनसा देखैए मौगी आ छुद्दर होइए पुरुख। हिनकँ पुछै छियनि जे प्रोफेसर भैयासँ नीक अपन घरबला छन्हि?''

घरबलाक नाओं सुनि मोहनावाली काँख तरक घैल निच्चाँमे रखि आगू बढ़ए लगलीह। मुदा तै बीच साठि वर्षीए झबरी दादी जोरसँ बजलीह- ''मरदक कमाएल खाइ जाइ छह आ गरमी चढ़ै छह तँ कलपर झाड़ैले अबै छह। एक्को दिन कोइ उमा बौआकँ भानसो कऽ दै छहुन आकि एक लोटा पानियो भरि कऽ दए अबै छहुन। मुदा उल्लू जकाँ मुँह दुसल सभकँ होइ छह। बेचारा नोकरीपर सँ अबै छथि अपने हाथे बरतन-वासन धोए, पानि भरि भानस करै छथि से बड़बढ़ियाँ! मुदा वियाह कऽ लेलनि से बड़ अधलाह।''

झबरी दादीक गप ओते मोहनावाली नै सुनथि जते तरे-तर बेलौंचावाली जरैत रहथि।

छह मास पूर्व प्रोफेसर उमाकान्तक पत्नी स्वर्गवास भऽ गेलनि। जाधरि जीबैत छलथिन ताधरि घरक कोनो भार प्रोफेसर सहाएबकेँ नै बुझि पड़ैत छलनि। जहिना कोसीक धार अनवरत बहैत रहैत अछि तहिना उमाकान्तोक परिवार अपना गतिसँ छह मास पछाति धरि चलैत छलनि। ओना दस बर्ख पूर्व धरि माए-पिताक नजरिमे उमाकान्त बच्चे आ पत्नी कनियेँ छलथिन। घरक भार दुनूमे सँ किनकोपर नै छलनि। सोलहो आना माइये-बाबू सम्हारैत छलथिन। पढ़नाइ-पढ़ौनाइ उमाकान्तक आ दुनू साँझ भानस केनाइ पत्नीक काज छलनि।

पत्नी मुइलाक उपरान्त उमाकान्तकेँ घर-आंगन सून-मशान बुझि पड़ए लगलनि। चौघारा घरक आंगन, नमहर दरबज्जा तै बीच असकरे उमाकान्त रहै छथि। परिवारकेँ डूबैत देख उमाकान्तक मनमे बेचैनी बढ़ए लगलनि। जहिना भूमकमक समए धरतीक संग-संग उपरक सभ किछु कँपए लगैत तहिना मनक संग-संग उमाकान्तक बुधि-विबेक डोलए लगलनि। हृदए चहकए मन मसकए लगलनि। मसकैत-मसकैत एहेन चिरक्का भऽ गेलनि जे उपयोग करै जोकर नै रहलनि। अनायास धैर्यक सीमा बालुक मेड़ि जकाँ ढहए लगलनि। ढहैत-ढहैत सहीट भऽ गेलनि। सहीट होइते बरखा पानि जकाँ रास्ता बनबए लगलनि। जइसँ नव-नव विचार जनमए लगलनि। नव-नव विचारकेँ जनैमते आँखि उठा आगू तकलनि तँ मेला-जकाँ दुनियाँ बुझि पड़लनि। सभ रंगक देखिनिहार। सभ तरहक वस्तुक दोकानपर एका-एकी एवो करैत आ जेवो करैत। अपन-अपन धुनिमे सभ बेहाल। दोसर दिस देखैक ककरो समए नै। अपने ताले सभ बेताल। जइसँ ककरो-ककरो आँखिसँ नोरो खसैत आ कियो-कियो ठहक्को मारैत। अनका दिससँ नजरि हटा उमाकान्त अपना दिस मोड़लनि तँ जिनगीक लेल संगीक जरुरत पड़लनि। मन पड़लनि पत्नीक मृत्यु। मृत्युक उपरान्त सोग परगट करैले तँ बहुतो एला मुदा की सबहक नोरमे एक्के रंग बेदना

रहनि? एक घटना रहितौं एक रंगक विचार आ बेदना कहाँ छलनि? भरिसक सभ भाँज पुरबैले आएल छलाह। मुदा प्रोफेसर हरिनारायणक नोर किछु आरो बजैत छलनि। कि हुनकर नोर पत्नीक प्रति छलनि आकि पढ़ैत बच्चाक प्रति छलनि आकि हमर विधुर जिनगीक प्रति छलनि। मनपर भार पड़लनि। भारक तर मन दबेलनि। जइसँ सोचै-विचारैक रास्तो अवरुद्ध हुअए लगलनि। मुदा तरमे दबल मन कहलकनि- "समाजक लोक की कहत?" फेर मनमे उठलनि, की कहत समाजक लोक! जते लोक तते विचार। जहिना ताड़ीक गंधसँ ककरो उलटी होइत तँ कियो सुगंध बुझि आत्म-तुष्टि करैत अछि। बूढ़-बुढ़ानुस परम्परानुसार कहताह जे संयुक्त परिवारमे व्यक्ति-विशेषक बेदना परिवारक बीच हराए, फुलाएल फूल जकाँ हँसैत अछि। जइसँ अभाव कोनो वस्तु नै रहि जाइत अछि। फेर मनमे एलनि जे जै कओलेजमे शिक्षक रुपमे छी, बेटा तुल्य विद्यार्थीकेँ जिनगीक बाट देखबै छी ओ कि कहत? मुदा कोनो घटनो तँ अनिवार्य नै होइत आकस्मिको होइत। जे सबहक संग घटबे करत? घटियो सकैत अछि नहियो घटि सकैत अछि। मन ओझड़ेलनि। किछु कालक वाद मनमे एलनि जे जे मनुष्य ऐ धरतीपर जन्म लैत ओ मृत्यु पर्यन्त हँसैत जीबए जाहैत अछि। से कहाँ भऽ रहल छै। पहिलुका जकाँ परिवारो नै रहल। असकर जीबो कठिन अछि। दोसराक जरुरत सदति काल पड़ैत अछि। भलहिं जिनगीक क्रिया निमाहि लेब मुदा मनक व्यथा के सुनत। सभ ठाम ने तँ लोक कानि सकैत अछि आ ने हँसि सकैत अछि। परिवार तँ हँसै-कनैक जगहे छी। जँ से नै भेटए तँ गुर-घाव जकाँ तरे-तर सड़ैन करैत रहत। जते सड़ैन करत तते शरीरसँ गंध निकलबे करत। जइसँ कष्टो हएत आ औरुदा घटत। जखने औरुदा घटत तखने जिनगी सिकुड़त। जते जिनगी सिकुड़त तते मृत्यु करीब आओत। फेर मन ओझरा गेलनि। मन ओझराइते नजरि घुमौलनि तँ कओलेजक इतिहास विभागक प्रोफेसर हरिनारायणपर पड़लनि। हरिनारायणे बाबूटा एहेन जिज्ञासु रहथि जनिका आँखिसँ हृदेक बेदना, पहाड़पर सँ खसैत झरनाक पानि जकाँ अनघोल करैत रहनि जे 'बाप रे, अन्याय भऽ गेल।' उमाकान्त ठूठ गाछ सदृश्य भऽ गेलाह। जइमे फूल-फड़क संग छाहरियो अलोपित भऽ जएतनि। अपने जानटा लऽ कऽ पत्नी नै

गेलखिन। असीम बेदनाक पहाड़ सेहो माथापर पटकि गेलखिन। सभ किछु छिड़िया जेतनि। केना समेट पओताह उमा भाय! की एकरे जिनगी कहबै?''

चेतना शून्य उमाकान्त दुनियाँक बजारमे हेरा गेलाह। चारु दिसक बाट बन्न बुझि पड़ए लगलनि। किम्हर जाएब? रस्ते नै। कि ओ खरहोरिक ओहन गाड़ल कड़चीक सदृश्य भऽ गेलाह जइसँ कोनो क्रिया नै भेनौ आन ओगरवाह बुझैत अछि। अनायास मनमे जगलनि जे दुनियाँमे कियो अप्पन नै। जाधरि आँखि तकै छी ताधरि दुनियों अछि नै तँ ओहो नै अछि। अपनहि करनीसँ कियो दुनियाँकेँ सुन्दर बनबैत अछि आ कियो अधलाह। आगू जीबैक लेल संगीक जरुरत सभकेँ होइत छै। आनक अपेक्षा हरिनारायणबाबू, लग बुझि पड़ै छथि। अखने हुनका ऐठाम जाए अपन मनक बात कहबनि।

उमाकान्तकेँ देखते दुनू हाथसँ दुनू बाँहि पकड़ि हरिनारायण अरिआति कऽ अपन कोठरीमे बैसाए पत्नीकेँ पानि नेने अबए कहलखिन। वामा हाथमे लोटा दहिना हाथमे पानिसँ भरल चमकैत स्टीलक गिलास उमाकान्त दिस बढ़ौलखिन। पत्नी विहीन उमाकान्त नजरि निच्चाँ केने शोभाक -हरिनारायणक पत्नी- हाथसँ गिलास लऽ पानि पीबए लगलाह। मुदा दू घोंटक बाद पानि कंठसँ निच्चाँ धसबे ने करनि। दोसर गिलास भरैक लेल शोभा बामा हाथक लोटा दहिना हाथमे लैत उमाकान्तपर नजरि गारने। ने उमाकान्त मुँहसँ गिलास हटबैत आ ने पानि पीबैत। उमाकान्तक व्यथा हरिनारायण बुझि गेलखिन। शोभा हाथक लोटा अपना हाथमे लैत कहलखिन- ''अहाँ चाह बनौने आउ। भायकेँ हम पानि पीया दै छियनि।'' चाह बनबैले शोभा कीचेनरुम चलि गेलीह।
मुँहमे गिलास सटल उमाकान्तक मनमे अबए लगलनि। जँ कहियो हरिबाबू हमरा ऐठाम जेताह तँ किनका चाह बनबैले कहबनि। उमाकान्त कऽ विचारमे डूबल देख हरिनारायण कहलखिन- ''भाय, अपनेसँ हम छोट छी मुदा एकरा धृष्टता नै बुझि दिलक धड़कन बुझू। अपने बेसी दुनियाँ देखलिऐक मुदा.......।''

चैंकि कऽ उमाकान्त पुछलखिन- ''मुदा की?''

आइसँ पहिने मनुष्य जते असुरक्षित जिनगी बितबैत छल ओइमे बहुत कमी आएल अछि। सोलहन्नी सुरक्षित तँ नै मुदा पहिलुका अपेक्षा सुरक्षित भेल अछि। ओना खतरा पहिनेसँ अधिक भऽ गेल अछि। मुदा बदलल रुपमे। पहिलुका रुपमे सुरक्षित भेल अछि। जइसँ जिनगीक नमती सेहो बढ़ि रहल अछि। ओना पूर्वज शतायुकेँ सही औरुदा बुझै छथिन। मुदा इहो बुझिनिहार तँ छथि जे चालीस कऽ घपचालीस बुझै छथि। ओहो ओहिना नै बुझै छथि। अखनो चालीस बर्खसँ उपर कते गोटे छथि जे पूर्ण स्वस्थ छथि। मुदा किछु बर्ख पूर्व धरि अस्सी बर्खसँ उपर गोटि-पङरा पहुँचैत छलाह ओ आब अधासँ बेसी पहुँचए लगलथि अछि। तँए, मोटा-मोटी नब्बे कऽ अधार बना पुछलखिन- ''अपनेक आयु कतेक अछि?''
आयु सुनि उमाकान्त बिस्मित भऽ गेलाह। हृदए बमकैत रहनि मुदा मुँहसँ बोली निकलबे नै करनि। किछु काल बिलमि कहलखिन- ''पचास बर्ख।''
पचास बर्ख सुनि हरिनारायण उछलि कऽ बजलाह- ''अधासँ किछु अधिक भेल अछि मुदा अधा तँ बाकिये अछि। अधाक लेल.......।''

नम्हर साँस छोड़ि, उमाकान्त आँखि उठा कखनो हरिनारायणपर दथि तँ लगले नजरि निच्चाँ कऽ धरती देखए लगथि। मुस्कुराइत हरिनारायण कहलखिन- ''अपने दोसर वियाह कऽ लेल जाउ। जरुरी नै जे सभ औरत कुल्टे होइत अछि। एहनो औरतक कमी नै जनिकामे मानवीय संबेदना गंगाक धार जकाँ सदिखन उमड़ैत रहैत छन्हि। नारीक पहिल गुण मातृत्व थिक। जेकरा प्रबल बनेवाक लेल पुरुषक सहयोग जरुरी अछि। जखने अनुकूल परिस्थिति नारीक प्रति बनत तखने दुनियाँक रंग-रुप बदलल-बदलल बुझि पड़त।''

चाह पीब, विदा होइत उमाकान्त कहलखिन- ''अहाँक विचारसँ सहमत छी मुदा काजक भार अहाँपर।''

दुनू गोटे -उमाकान्त आ हरिनारायण- दू गामक। मुदा कोसे भरिक दूरी दुनूक बीच छन्हि। अपने गामक पच्चीस बरखक यशोदियाक संतप्त जिनगी हरिनारायणक सोझमे छन्हि। सोलह बर्खक देहरिपर जखन यशोदिया पहुँचलि अट्ठारह बर्खक गुणेश्वर, फूलक सुगंधकेँ भौरा जकाँ झपटि लेलक। जिनगीक हरियर-हरियर प्रलोभन देवाक संकल्प करैत, लोक-लाजसँ बँचैक लेल, गाम छोड़ि दिल्ली चल गेल। मुदा दिल्लीक सड़कपर जखन दिन-राति बितए लगलै तखन यशोदियाकेँ छोड़ि गुणेश्वर निपत्ता भऽ गेल। असकर यशोदिया बौअए लगलीह। हारि-थाकि यशोदिया एकटा कोठीक शरणमे गेलि। आठ बर्खक पशुवत जिनगी यशोदियाकेँ बदलैक लेल बाध्य केलक। नव बाट ताकए लागलि। अपनाकेँ मृत्यु बुझि एक राति सभ किछु छोड़ि पड़ा कऽ गाम आबि गेलि। गाम आबि हरिनारायणक पाएर पकड़ि ताधरि कनैत रहलि जाधरि ओ बाँहि पकड़ि मनुक्खक जिनगी जीबैक भरोस नै देलखिन।

हरिनारायण परिवारमे यशोदिया रहए लगलीह। यशोदियाक मनमे तँ चैन आबि गेल मुदा हरिनारायणक बेचैनी बढ़ए लगलनि। समए पाबि, विलटैत दू जिनगीकेँ जोड़ि एक परिवारकेँ लहलहाइत देखलनि। मनमे खुशी एलनि।

अखन धरि उमाकान्त यशोदियाकेँ प्रोफेसर हरिनारायणक बहीन बुझैत छलाह। यशोदियाक असली परिचए नै छलनि तँए मनमे खुशी रहनि जे सभ्य परिवारक लड़की घरमे औतीह। जइसँ पहिलुके जकाँ फेर परिवार अपन पटरीपर आबि आगू मुँहे ससरए लगत।

दिन -लग्न- बेरागन छोड़ि हरिनारायण उमाकान्तकेँ पुछलखिन- ''अखन तँ वियाहक समए नै अछि तखन.....।''
''एक दिन पहाड़ लगि रहल अछि। वियाहक जे कोनो बंधन अछि ओ काँच सूतसँ बान्हल जाइत अछि। जइसँ सदिखन टूट-फाट होइत रहैत अछि। तँए दुनूक -पुरुष-नारी- हृदेक योगसँ हेबाक चाही?''

हरिनारायणक प्रश्नसँ उमाकान्त गुम्म भऽ कहलखिन- ‘‘समए आ परिस्थितिकेँ देखैत.....।’’

उमाकान्त यशोदियाक बीच साओने मासमे वियाह भऽ गेल।

::::::::::

१९ पड़ाइन

पछुलका बाढ़िमे खेतक फसल तँ धुआइये गेल जे मालो-चाल गामसँ उपैट गेल। अपनो दुनू बड़दो आ महीसो मरि गेल। जहिना जंगलक जानवरकेँ मेघसँ खसैत पाथरक चोट छटपटबैत तहिना ऐ साल आन-आन किसानक संग अपनो भेल। बाधसँ लऽ कऽ घर धरिक दशा सहाज करै जोकर नै रहल। बाढ़ि अबिते खेतक धान डूबि गेल। मोटाइत-मोटाइत पानि अंगना-घरमे सलाढ़ लगि गेल। नारक टाल पानिक बेगमे भसि गेल। भुसकाँर खसि पड़ल जइसँ गहूमक भूसी भसिया गेल। आश्रमक घरक संग-संग मालो घरमे पानि पहुँच गेल। जहिना लाठीपर लाठी खाइत दशा होइत तहिना भेल।

चढ़िते कातिक आगिला खेतीक लेल सभ सुर-सार करए लगल। मुदा खेतीक तँ प्रमुख अंग बड़द छी। बिना बड़दे खेत जोताएत केना? अपने टा गामक दशा नै, परोपट्टाक एक्के रंग दशा। एक्के रंग समस्या किसानक बीच पसरि गेल। जइसँ बचल-खुचल माल-जालक दाममे आगि लगि गेल। दोबर-तेबर दाम बड़दक भऽ गेल। एक तँ भेटैबला नै दोसर पैकार सभ जे बाहरसँ आनि-आनि बेचै ओकरो वएह हवा।

अपन इलाका छोड़ि दोसर इलाकासँ बड़द कीन अनैक विचार भेल। मुदा असगर-दुसगर आननाइयो भारी बुझि पड़ल। गाममे गप्प चलेलौं। एक्के-दुइये आठ-नअ गोटेक विचार भेल। जोड़ा कीनिनिहार तीन गोटे भेलौं। बाकी छबो-गोटे पल्ले-पल्ला कीनिनिहार। हुनका सबहक विचार जे एकटा बड़दसँ हर नै जोतल जाएत मुदा जोड़ा लगा लेलासँ भजैती नीक रहत। बेजोड़ बड़द रहने एकटाकेँ बेसी भीर होइ छै आ एकटाकेँ कम। जइसँ साले भरिमे बड़द टूटि दाम बुरा दै छै।

तेसर दिन नवो गोटे लौकहावाली गाड़ी झंझारपुर हॉल्टपर पकड़लौं। साढ़े बारह बजे लौकहा स्टेशन उतड़ि मेन रोड छोड़ि धनबदहेक उत्तर मुहेँ रस्ता पकड़लौं। कखन सीमा टपलौं से बुझबे ने केलिऐ। एक्के रंग बाध आ बाधक उपजा। नमहर-नमहर बाध, खेतमे लहलाहइत धान। दुधाएल धानक सीस

जइसँ जहिना धानक गाछक रंग तहिना सीसोक। ऊँचगर-चौड़गर खेतक आड़ि, जइपर फुलाइतो आ छीमियो भेल राहरि। टाट जकाँ राहरिक गाछ खेत सबहक परिचए करबैत। अपन सभ जकाँ चनकी राहरिक गाछ नै, मझोलका गाछ। खेसारी छिटैत एक गोरेकेँ पुछलिऐ ते कहलक जे ऐ दिगारमे बेसी पये (पाया) राहरि होइ छै। धानोक संग-संग अगहनेमे कटाइ छै। सोहरी लागल घुरछा-घुरछे फड़ल। छीमियो नमहर। कोला-कोली गिरहस्त खेसारी, मौसरी छिटैत। आड़ि सभपर जेरक-जेर ढेरबासँ सियान धरि घसवाहिनी घास छिलैत। उपजा देख माटि निहारलौं तँ सोलहन्नी खसिआइ माटि (कारी माटि) बुझि पड़ल। माटि देख मन गदगद भऽ गेल। मुदा अपन इलाका मन पड़िते मन तीता गेल। कमला-कोसीपर खौंझ उठल। दुनू तेहेन हेहर अछि जे इलाकाक माटिकेँ बिगाड़ि देलक। बालु भरि खेतकेँ बलुआह बना देलक। रस्ताक पछबारि भाग एकटा नमगर-चौड़गर परतीपर पचासो महींस चरैत देख मन खुशी भऽ गेल। चरवाह सभ महींसकेँ अनेर चरैले छोड़ि अपने सभ खेलाइत। खेलो अजगुत ठेंगा ठेंगा। कनी अटँकि देखए लगलौं। एकटा सीमा -चेन्ह- देने। ओइ सीमापर सँ रागक तर देने उनटि कऽ दुनू हाथे ठेंगा फेकैत। जेकर ठेंगा जते दूर जाए ओ ओते सुरक्षित। जेकर लग रहै ओ हारै। जे हारै ओकरा घुघुआ -पीठ- पर चढ़ि ठेंगा लग तक जाए। फेर दोहरा कऽ खेल शुरू होइ। गोबर बिछनी सेहो बैस कऽ खेल देखैत। कोनो धड़फड़ी रहबे ने करै। तीनिये चारि गोरे रहै, कते पथियामे अँटतै। जहिना एकाधिकार पूँजीपतिक कारोवार निचेनसँ चलैत, कोनो प्रतियोगिता रहबे ने करैत तहिना पचास महींसक गोबरक बीच तीनू-चारू गोबर बिछनी। मुदा एकटा देखलिऐ जे एकबेर एकटा महींस धानक खेत दिस बढ़ए लगलै तँ एक गोरे माने एकटा ढेरबा गोबर बिछनी उठि कऽ महींस घुमा देलकै।

कोसक अन्दाज आगू बढ़लौं तँ हाट लगल देखलिऐ। समैयो चाइरिक करीब भऽ गेल। मनमे भेल जे कोनो ठेकानल जगहपर थोड़े जाइ कऽ अछि जे अबेर हएत। जखन एलौं तँ देखैत-सुनैत जाएब। हाट देखए बढ़लौं। गमैया हाट। कट्ठा डेढ़ेह परतीपर लगल। तीन-चारि पल्लाबला दू-तीनटा अन्न-पानिक दोकानदार, दस-बारहटा तीनम-तरकारीक, एक-एकटा माछ-मासुक दूटा झिल्ली-

कचड़ी-मुरहीवाली, एकटा मनिहारा, एकटा माटिक वर्त्तन, एकटा छिट्टा-पथियाक एकटा चाहक दोकान आ एकटा पान-बीड़ीक। मुदा खरीदारी बढ़िया होइत। अन्दाज केलौं तँ बुझि पड़ल जे जते कीनिनिहार अछि ओतबे समानो आ बेचिनिहारो। चाहक दोकानपर बैस चाह दइले दोकानदारकेँ कहलिऐ। चुल्हिक छाउर झाड़ि, डोमौआ बीअनिसँ हौंकि, चुल्हिपर केटली चढ़ौलक। दोकानदारसँ पुछलिऐ- "हाट सभ दिन लगैए?"

दोकानदार उत्तर देलक- "ऐ पचकोसीमे चारिटा हाट लगै छै। सोम आ शुक्रकेँ ई हाट लगैए। रवि आ बुधकेँ विस्टौल लगै छै, मंगल आ वरसपतिकेँ चिकना आ शनि-मंगलकेँ परसा।"

चाह बनल। सभ कियो पीब दोकानदारकेँ पाइ दऽ विदा भेलौं। अपने गाम जकाँ गामो, अपना सबहक तँ पोखरि-इनार या तँ बालुमे भथा गेल वा मरने भऽ गेल अछि, ओइ सभमे अखनो अछिये। गोटि-पङरा ईंटाक घर। रस्ता-पेरा कच्चिये। उत्तरे-दछिने गाम सभ। जइसँ आगि-छाइसँ सुरक्षित। जँ कतौ पुरबा-पछबामे आगि लगबो कएल तँ कम घर जरल। जहिना गाम उत्तरे-दछिने तहिना अंगनो सभ। अपने सभ जकाँ लोकोक बगए-बानि आ बोलियो। जइसँ अनभुआर जकाँ बुझिऐ ने पड़ै। गोसाँइ लुक-झुका गेल। जहिना पछबा सबेर-सकाल अपन बोरा-बिस्तर समेट लैत तहिना ने परदेशियोकेँ सबेर-सकाल ठर पकड़ि लेबाक चाही। मनमे उठिते अँटकैक गर लगबए लगलौं। एक गोटेसँ पुछलिऐ- "कोन गाम छी?"

"रोहितपुर।"

मुदा कोनो निश्चित गाम तँ जेबाके ने छल जे दोहरा कऽ पुछितिऐ। तै काल एक गोरेकेँ दोसर गोरे सोर पाड़लक- "मधेपुरबला हौ, हौ मधेपुरबला। कनी एम्हर आबह।"

मधेपुर सुनि मन चौंकल। मुदा लगले असथिर भऽ गेल। नाम-गामक कोनो ठेकान अछि। एक-एक नामक कतेक लोको आ कतेक गामो होइए। मुदा मनमे तैयो घुरियाइते रहि गेल। मधेपुरबलाक घर पूबारि भाग रस्ताकातेमे। घास झाड़िते मधेपुरबला उत्तर देलक- "हाथ लागल अछि, लगले अबै छी।"

कहि घास झारब छोड़ि मधेपुरबला उत्तर मुहेँ विदा भेल। लगमे अबिते पुछलिऐ- ''कोन मधेपुर रहै छी?''
गामक नाओं सुनि बाजल- ''अहाँ सभ कतऽ रहै छी?''
कहलिऐ- ''हमहूँ मधेपुरे रहै छी। तँए पुछलौं।''
मधेपुर सुनि ओ चौंक गेल। जना किछु भेट गेल होइ तहिना। मुस्कुराइत बाजल- ''झंझारपुरसँ पूव-दछिनक जे मधेपुर छै, ओही मधेपुर रहै छी।''
अपन मधेपुर सुनि हमहूँ हँसैत बजलौं- ''हमरो सबहक घर तँ ओही मधेपुर अछि।''
हमरा सबहकँ दरबज्जापर बैसबैत बाजल- ''लगले अबै छी। ओइ बेचारा ऐठाम पाहुन सभ आओत डेढ़िया परक टाट लगाओत आकरे गर धरौने अबै छी। हमर भाग जे गौआँ-घरूवा सभ एलाह।''
अपन भेटैत ठर देख कहलियनि- ''हँ, हँ भेल आउ। समाजमे सबहक काज सभकँ होइ छै।''

काजक बोझसँ अपनाकँ लदल देख चेथरू रस्तेपर सँ सोर पाड़ि पत्नीकँ कहलक- ''लगले अबै छी। ताबे अहाँ एक बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा आनि पाएर धोयले दियौन।'' कहि चथरू आगू बढ़ल। भरि बाल्टीन पानि आ एकटा लोटा नेने चमेली दरबज्जापर आबि पुछलखिन- ''बौआ अहाँ सबहक घर कतऽ अछि?''
कहलियनि- ''मधेपुर।''
जहिना अनचोकमे देहपर खढ़ो गिरते लोक चौंक जाइत तहिना मधेपुर सुनि चमेली चौंक गेलीह। अधा मुँह झपैत बजलीह- ''ऑक्सी महादेव मंदिरसँ थोड़बे हटि कऽ हमरो नैहर अछि।''
चमेलीक बात सुनि दूबीक मुँहसँ छोड़ैत नव पत्ती (पात) जकाँ हृदेमे भेल। अपन तीस बर्ख पहिलुका जिनगीमे ओ -चमेली- डूबि गेलीह। मुँह शिथिल भऽ गेलनि, जइसँ किछु आगूक बकार नै निकललनि। मुदा दरबज्जापर आएल अतिथिक लेल घरवारीक रहब अनिवार्य बुझि खूँटा जकाँ ठाढ़ रहली। बेरा-बेरी हमहूँ सभ पाएर धोय-धोय चौकीपर बैसए लगलौं। जहिना देवालयमे

दर्शकक नजरि एकोएकी मुरती सभपर पड़ैत तहिना चमेलीक आँखि हमरा सभपर नचए लगलनि।
घुमि कऽ अबिते चेथरू पत्नीकेँ कहलखिन- ‘‘जलखै नेने आउ। रस्ताक झमाड़ल सभ छथि भूख लगल हेतनि।’’
हमहूँ सभ बेरा-बेरी कुर्रा कऽ बैसलौं। चंगेरा भरि मुरही, नोन-मिरचाइ आंगनसँ आनि चमेली बीचमे रखि देलनि। जलखै देख चेथरू बजलाह- ‘‘अहाँ सभ जाबे जलखै करब ताबे छिड़ियेलहा काज सभ समेट लै छी।’’ कहि एकटा छिट्टा आ हँसुआ नेने बाड़ी दिस चेथरू आ आंगन दिस चमेली बढ़लीह। कातिक मास रंग-विरंगक तरकारीसँ सजल चौमास। बिना तजबीज केनहि चेथरू आठो-नवो रंगक तरकारीक छिट्टा आंगनमे रखि, लगमे आबि बैसलाह। बैसिते कहलियनि- ‘‘अपन इलाकाक जेहना खेती-पथारी उपटि गेल तहिना मोलो-जाल। मुदा बिना बड़दे खेती केना करितौं। तँए एलौं। सुनै छी जे ऐ इला इलाकाक लोक अपना इलाकाबलाकेँ कहै छथि जे अपन कमाएल रूपैया लऽ कऽ एलौं आकि बाप-दादाक, से ठीके छिऐ?’’
हमर बात सुनि चेथरू तरे-तर हँसए लगलाह। मुदा अपनाकेँ दुनू ठामक पाबि कनी काल गुम रहि बजलाह- ‘‘खिस्सा-पिहानी एहिना लोक जोड़ती-जोड़ि बना लइए। एहनो-एहनो बात हुअए। कोनो धरती कर्मभूमिसँ धर्मभूमि बनैत अछि। देखै छी जे गामोमे दिल्ली-बम्बईसँ घुमि कऽ आएल कनियाँ सभ अतिथि-अभ्यागतकेँ ओतुक्के चालि-ढालिसँ स्वागत करै छथि तँ ऐहनो सभ छथि जे केरल-मद्रासमे रहितो गाम-घर जकाँ स्वागत करै छथि। हम-अहाँ भैयारी भेलौं। तँए भैयारी जकाँ दुख-धंधाक गप-सप्प करू।’’
चेथरूक विचारसँ मन खनहन भऽ गेल। हृदए बाजि उठल जे सहारा भेटल। अखन तँ धान फुटबे कएल, जखन पाकत तँ बीयो-बालि लऽ जाएब। ऐठामक बड़दो अपना ऐठामक बड़दसँ सक्कतो होइ छै आ बेसी दिन जीबो करै छै। अपना ऐठामक माल गदियाह भऽ गेल। ऐठाम ठनक जमीनक माल निरोग अछि। चुप्पा-चुप्पी देख पुछलियनि- ‘‘अहाँ केना ऐठाम आबि गेलौं?’’
हमर बात सुनि चेथरूक मन पसिज गेलनि। गपकेँ आगू नै बढ़ा बजलाह- ‘‘भानसो भऽ गेल हएत। अहूँ सभ थाकल छी। जखन बड़द कीनए एलौं तँ

हेबे करत। कोनो की अनतऽ एलौं। अपन घर छी। पाँच दिनमे इलक्को घुमा कऽ देखा देब। मन मोताविक बड़दो कीन देब।''

चेथरूक बात सुनि हूँहकारी भरैत बजलौं- ''हँ, हँ, से तँ ठीके। देस-कोस ने बदलैए। मनुक्ख तँ मनुक्खे रहैए किने।''

खेला-पीला वाद संगी सभ नीनसँ सुति रहलाह। मुदा अपना नीने ने हुअए। अधा घंटा बाद चेथरू खा-पी, मालक घरक घुर सरिया, खाइले दऽ बड़का बाटीमे शुद्ध तोड़ीक तेल नेने आबि बजलाह- ''सुति रहलौं।''

आरो गोटेक साँसे कहैत जे सुतल छी। बजलौं- ''नै, जगले छी।''

हमरा लग आबि चेथरू तेलक बाटी बढ़बैत कहलनि- ''थाकल-ठहिआएल छी पाएरमे तेल औंस लिअ।''

दहिना हाथ तेलमे डूबा बजलौं- ''भऽ गेल। एकरे मिला लै छी। रखि दियौ।''

एकेठाम बैस दुनू गोरे गप-सप्प शुरू केलौं। पुछलियनि- ''ऐठाम ऐना कते दिन भेल?''

कनी काल चुप रहि चेथरू बजलाह- ''जहिना बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक (टिप्पणि दुआरे) बेटा-बेटी जनमोक ठेकान रहैत तहिना हमहूँ छी। अंदाज पच्चीस बर्खसँ उपरे भेल हएत?''

''ऐठाम बेसी नीक लगैए आकि ओइठीन (मधेपुर)?''

''प्रश्न सुनि चुप भऽ गेला। जहिना दू बट्टी तीन बट्टीपर पहुँच अपन रस्ता लोक हियाबऽ लगैत तहिना चेथरूओ हियबए लगला। उठि कऽ तमाकू थुकड़ि आबि बैस बजए लगलाह- ''जतऽ बसी वएह सुन्दर। भने अखन दुइये भाँइ जागल छी। अपन गाम मन पड़ैए तँ छाती दहलि जाइए। बाबाक रोपल गाछी भुताहि भऽ गेल। बाबाक कहल सभ बात तँ मन नै अछि मुदा गोटे-गोटे मन अछि। कहने छलाह जे केना अपन गाम बसल आ अखन धरि केना परिवार चलैत रहल। दैवी चक्र ऐहेन चलल जे बिगड़ैत-बिगड़ैत एते बिगड़ि गेल जे वास होइ जोकर नै रहल।''

कहैत-कहैत हुचकी उठए लगलनि। गरा -कंठ- बझए लगलनि। चुप होइत देख पुछलियनि- ''से की? से की?''

आंगुरसँ अपन मौसा घर दिस देखबैत बजलाह- ''हमरा अबैसँ पहिने ऐठाम मौसा एला।''
मौसाक नाओं सुनि पुछलियनि- ''ओ किए एला?''
चेथरू- ''आब तँ अपने नै छथि बेटा छन्हि। वएह ऐठामक गाम-परधान छी। ओकरे दुआरपर पाँचटा धरम बखारी (धान रखैबला) छै। सौंसे गौआँ बेर-बेगरताले धान जमा केलक। साले-साले बढ़बैत गेल। अखन तते जमा भऽ गेल अछि जे जेकरा (गामक लोककेँ) जते बेगरता होइ छै ओ ओते लइए आ पीठक-पीठ आपस करैए।''
मुँहसँ निकलि गेल- ''वाह! अच्छा, ओ किए एला?''
चेथरू- ''मौसाकेँ अनटेटल गप आ अन्ट-सन्ट काज पसिन्न नै छलनि। सोभावे ओहने छलनि। जहिक चलैत चारि-पाँच बेर गौआँ सभ मारलकनि। अंतिम मारिमे बेसी चोट लगलनि। मन टूटि गेलनि। जहिना एक धटनासँ कियो बेरागी बनि जाइत तँ कियो अपराधी, कियो निरमोही बनि घर-परिवार छोड़ि दैत तँ कियो सिंह सदृश्य गर्जन करैत। तहिना गामक मोह छोड़ि खेत-पथार बेच चलि एला।''
''अहाँकेँ की भेल?''
''कोनो एक्के गाम ओहन अछि। हमर गाम तँ ओरो बेसी बिगड़ि गेल। एक दिस महाजनक अतियाचार तँ दोसर दिस खेत-पथारक बेइमानी-शैतानी। बलजोरी अपन नमहर खेतमे छोटका खेतक आड़ि तोड़ि जोइत लैत। तहिना चोराइयो आ देखाइयो कऽ खेतक जजात गाए-महींससँ चरा लैत। आम तोड़ि लैत, दोसराक माए-वहिनक इज्जत-आवरूपर हाथ बढ़बैत तँ आगि-पानि ढाठि भगैक लेल उड़ी-बिड़ी लगबैत। सिन्ह काटि-काटि घरक वस्तु-जात लऽ भगैत तँ बिना किछु बजनौ दसटा बात-कता कहि दैत।''
चेथरूक बात सुनि, जहिना भूमहूर आगिक धुआँ निकलैत तहिना लहड़ल हृदेक गर्म सांस निकलल। पुछलियनि- ''शुरूमे (एलापर) तँ बड़ दिक्कत भेल हएत?''
''नै। अपना तीन कट्ठा खेत रहए। दू साए रूपैये कट्ठा बेच लेलौं। घरो बेच लेलौं। खाली अपन देहक कपड़ा आ रूपैया लऽ कऽ मौसे ऐठाम एलौं। वएह दस कट्ठा खेतो कीन देलनि एकटा घरो बना देलनि आ कहलनि जे जै

चीजक बेगरता हुअ, से लिहह। घरक बीचला खूँटा जकाँ ठाढ़ भऽ गेला। आब तँ अपने सभ किछु भऽ गेल। जाबे सासु-ससुर जीबै छलाह ताबे सासुर जाइ छलौं, मामा-मामी धरि मात्रिक। बहिन-बहनोइ ऐठाम जाइते छी। ओहो सभ अबिते अछि।''

चेथरूक बात सुनि मन औनाए लगल। कछ-मछी आबि गेल। कहलियनि-

''नीनसँ देह भसिआइ-ए बड़ राति भऽ गेल। अहुँ सुतैले जाउ।''

''एतै ने हमहूँ सुतब।''

पाँचम दिन मेजमानी केलौं। छठम दिन बड़द नेने गामक रस्ता धेलौं।

::::::::::

२० कतौ नै

चारि-पाँच बर्खसँ जनकपुरक विवाह पंचमी देखैक विचार मनमे उठैत रहल मुदा माए कहैत- ''अखन बाल-बोध छह कतौ हरा-तरा जेबह।''

माइयक बात नीक नै लगाए। हुअए जे जहिना गाम घरमे लोक नै हराइए तहिना ओतौ किए हराएत? ई नै बुझिये जे ओइठीन दूर-दूरक लोक देखए अबैए। जइसँ भीड़-भाड़ बढ़ि जाइ छै। भीड़े-भाड़मे बालो-बोध आ चेतनो हराइत अछि। चौदहम बर्ख टपिते पनरहम शुरूहेँमे अगहन इजोरियाक पंचमी आएल। गामक लोकमे मेला देखैक सुन-गुनी शुरू भेल एक्के-दुइये सौंसे गाम पसरि गेल। एक गामक कोन बात सगतरि भेल। हमहूँ सुनलौं। माइयक बात मन पड़ल। भलहिं भोट खसबै जोकर नै भेलौं मुदा बालो मजदूर जोकर तँ नै रहलौं। हराइयो जाएब तँ की हेतै? अपन खेवा-खरचा ने तीनिये दिनमे सधि जाएत मुदा तैयो तँ कमाइत-खटाइत, खाइत पीऐत दस दिन पछातियो तँ आबिये जाएब। आशा जगल। विसवास बढ़ल। माएकेँ कहलियनि- ''गामक लोक उनटि कऽ जा रहल छथि, हुनके सभ सेने हमहूँ जाएब।''

माए किछु बजली नै। एतबे बजली- ''नुआ-बस्तर खीच लिहह।''

माएक बात सुनि विसवास भऽ गेल। मनमे उठल टिकुला बीया जकाँ थोड़े खिच्चा छी, भलहिं पाकल जकाँ सक्कत आँठी जकाँ नै भेलौं मुदा कोशाएल जकाँ तँ जरूर सकता गेल छी।

अगुआएल-पछुआएल दुआरे गामक बीच यात्रीक गिनती नै भेल। ओना गिनतीक महत्व बुझबो ने करिऐ। गामक सीमानपर पहुँचते अगिला यात्री रूकि कऽ पछिला सभकेँ हाथक इशारासँ शोरो पाड़थिन आ आँखि उठा-उठा देखबो करथि। हमहूँ पहुँचलौं। पतराइत रस्ता देखि गिनती हुअए लगल। मर्द-औरत मिला सत्ताइस गोरे भेलौं। गिनतीमे सभसँ उमेरगर सुचिता दादी रहथि। बजलीह- ''सभ कियो सुनि कऽ कान धड़ब। तीर्थ-वर्त करए जाइ छी तँए रस्ता-पेरामे ककरो कोनो चीज बौस नै छूबै, झूठ-फुस बाजि ककरो ठकबै

नै। भाए-बहीन जकाँ सभकँ बुझबै आ कियो अगुआ-पछुआ जाएब तँ ठाढ़ भऽ कऽ संग करैत चलब।''

दादी गप्पक असरि भेल। सभसँ कम उमेरक रही। बिना कहने-सुनने कफलाक टहलू बनि गेलौ। दादी सुचिताकँ कहलियनि- ''दादी, अपना कम्मे समान एक अढ़ैया चूड़ा आ कपड़ा झोरामे अछि, अहाँकँ भारी लगैत हएत लाउ नेने चलै छी।''

बात सुनि दादी छिट्टा भरि असीरवाद दैत अपन मोटरी देलनि। मोटरीक संग दादी अपन पुरना खेरहा सभ कहैत चलए लगलीह- ''बौआ, अहिना कुशेसर जाइत रही। नियारैत तीन बर्खसँ घरमे गाइयक घी पड़ल रहै। केना चौदह कोस डेरहे दिनमे चलि गेलौं से बुझबे ने केलिऐ। तै दिनमे समरथाइयो रहए।''

''कतऽ-कतऽ गेल छिऐ दादी?''

कनी काल गुम रहि मन पाड़ि बाजए लगली- ''अपन गाम तीनू स्थान- दछिनमे कुशेसर पूवमे सिंहेसर आ उत्तर-पछिम जनकपुरक बीचमे पड़ैए। कनिये रास्ताक तड़पट हेतै। हँ, तँ कहए लगलियह, एहिना आठ-नअ गोटेक कफलामे सिंहेसर स्थान विदा भेलौं। अखैन तँ चढ़न्त जाड़ अछि मुदा शिवरातिक समए जाड़ फटऽ लगैत अछि। सबहक विचार भेल जे घोघरडिहा तक टेनसँ जाएब, फेर सुपौल तक पाएरे जाएब आ सुपौलसँ बस पकड़ि जाएब।''

बिचहिमे पुछलियनि- ''कोसी धार सेहो टपए पड़ल हएत किने?''

''हँ, हँ। पहिने टेनक बात सुनि लाए। जखन गाड़ीमे चढ़लौं तँ खाली सीट सभ देखलिऐ। दुनू कातक सीट मिला कऽ तीन-चारि गोरे बैसल रहै। हमरो सभकँ जगह भऽ जाएत। मुदा तेहन ऐंठल सभ रहै जे नहिये बैसए देलक। पुरूख सभसँ मुँह केना लगैबतौं। सभ स्त्रीगणे रही।''

''किए ने बैसए देलक?''

''तेहन-तेहन छुद्दर पुरूख सभ भऽ गेल अछि जे ककरोमे पुरूखपाना छइहे नै। अपना अइठीनक पुरूख अनको माए-बहीनकँ अपन बुझैत अछि ओइ इलाकाक थोड़ै बुझै छै। ठाढ़े भेल घोघडिहा तक गेलौं। निच्चामे बैसबो

करितौं से तते सिकरेट-बीड़ीक अधजरूवा टुकड़ी आ चीनिया बदामक खोंइचा रहै जे बैसैक परपन नै भेल।''
''मोटरी की केलिऐ?''
''मथेपर रखने गेलौं। उपरका सीटपर गेंड़ा जकाँ दूटा मुनसा सुतल रहै किन्नो नै मोटरी रखए देलक। जखन कोसी धारमे नओपर चढ़लौं तखन फेर घटवारक संगे कहा-कही हुअए लगल। मुदा बाबापर सुरैत लगा कहुना पहुँच गेलौं।''

स्टेशन पहुँचते गप-सप्प बन्न भेल। गाड़ी आएल सभ कियो चढ़ि गिनती कऽ जयनगर पहुँचलौं। जयनगर प्लेटफार्म यात्रीसँ भरल। तिल रखैक जगह नै। मुदा एते विसवास भऽ गेल जे एते दूर देखलो भइये गेल। आब तँ बालो-बोध नहिये छी जे बिसरि जाएब। जँ कहीं छुटियो जाएब आकि हराइयो जाएब तैयो घुरि कऽ गाम चलिये जाएब।

नेपालक गड़ियो छोट आ इंजिनो कमजोर मुदा तैयो निच्चा-उपर लादि यात्रीकेँ पहुँचाइये दैत अछि। गाड़ीमे चढ़ै-दुआरे कते यात्री एक स्टेशन पाएरे चलि उनटामे चढ़ि पहुँचैत छथि। मुदा सीमा कखन टपलौं से बुझबे ने केलौं। लोको एक्के रंग आ बोलियो तहिना। जनकपुर पहुँच गेलौं।
यात्री देख मन उधिया गेल। मन मानि गेल जे ऐ भीड़मे कतौ जरूर हराइये जाएब। मुदा लोकक भीड़मे लोक अपनाकेँ हराएल केना बुझत। सभ तँ लोके छी सबहक मुँहमे बोलो अछिये। सभ तीर्थे करए आएल छथि तखन हराइक प्रश्न कत? मुदा तैयो मन थरथराइते रहए। फेर भेल जे हराएब तखन ने, आ जे नै हराइ। तइले अनेरे चिन्ता किए करै छी। खाइत-पिबैत एक फेरा लगबैत तीन बजि गेल। विवाहक प्रकरण तँ रातिमे हएत मुदा विवाह होइक कारण तँ धनुष टूटब अछि। तँए पहिने धनुखा जाएब उचित हएत। धुमैत-फिड़ैत एक ठाम बैस सभ विचारए लगलौं। विवाह प्रकरण देखए एलौं अखन धरि बरिआतियो पछुआएले अछि। पछुलके धरमशल्लामे अॅटकल अछि। ऐठाम अबैमे चारि-पाँच घंटा लागत। से नै तँ अपनो सभ ताबे धनुखासँ भऽ आबी।

एक स्वरमे विचार भेल। बसक भाँजमे विदा भेलौं। सभ आगू-आगू हम आ दादी पाछू-पाछू। यात्रीकेँ देखबैत दादी बजलीह- “बौआ, तूँ ने अखैन तक दोसर कोनो स्थान (तीर्थ) नै गेल छह। मुदा हम तँ बहुत ने देखने छिऐ।”
एते बात सुनिते मनमे भेल जे दादी कोनो ठेकनगर बात कहए चाहैत छथि। हूँहकारी दैत कहलियनि- “हँ से तँ ठीके। अखैन हमरा भेबे की कएलहँ, जनमि कऽ ठाढ़ भेलौंहेँ।”
आगू दादी बजलीह- “देखहक ई स्थान भगवान राम आ सीताक छियनि। अयोध्यावासी राम आ मिथिलाक जनकक कन्या सीता। दुनूक मिलन स्थल छी। तँए देखै छहक जे सभ रंग यात्रियो अछि आ स्त्रीगण-पुरूखमे बेराओल हेतह जे पुरूख बेसी अछि आकि स्त्रीगण। तहिना देखै छहक जे सभ रंगक मुँह-कानबला यात्री अछि। ककरो मान-अपमानक बात अछि। मुदा आन-आन स्थानमे से कहाँ देखवहक। जहिना एक चलिया लोक तहिना एक चलिया चालि।”
मैक्सीपर बैस सभ धनुखा विदा भेलौं। घंटा भरि लगैत-लगैत धनुखा पहुँच गेलौं। गाड़ीक ड्राइवर आ खलासी उतड़ि देखबए विदा भेल। मंदिरक हाताक भीतर पहुँचते ड्राइवर बाजल- “भगवान राम जे धनुष तोड़लनि ओ तीन टुकड़ी भऽ गेल। एक टुकडी एतै खसल। सएह स्थान छी। देखै छिऐ धनुषेक टुकड़ी छिऐ किने?”
दर्शन केलौं। सबहक विचार भेल जे बिना किछु खेने-पीने आ सनेस नेने कोनो जाएब। हमहूँ चाह पीब पान खेलौं आ हनुमानी बद्धी कीन कऽ गरदनिमे पहिर लेलौं। किरिन डुबि गेल। मुदा ककरो धड़फड़ी नै। किएक तँ घंटा भरि जाइमे लागत आ आठ बजेमे बरियाती दुआर लागत।
गाड़ी चलल। करीब चारि माइल आगू बढ़ल आकि अपने ठाढ़ भऽ गेल। पंचमीक चान, ओसेसँ घेराएल। झल-अन्हार। गाम-घर कतौ ने देखिऐ। बीच पाँतरमे गाड़ी रूकल। ड्राइवरो आ खलासियो रिन्च-हथोरी निकालि ठोक-ठाक शुरू केलक। हमहूँ सभ गाड़ीसँ उतड़ि देखए लगलिऐ। ठोकि-ठाकि ड्राइवर गाड़ीमे बैस चलबऽ चाहे तँ चलबे ने करै। फेर उतड़ि कऽ ठोकै मुदा फेर

ओहिना होय। समए बीतल जाए। मोवाइल देख ड्राइवर बाजल- ‘‘आठ बजल।’’
दुआर लागबक समए बुझि सुचिता दादी बजली- ‘‘कतऽ एलौं, ते कतौ ने?’’
मन हुअए जे कहिऐ- पाइ घुमा दाय। दोसर गाड़ीसँ चलि जाएब। इजोरियो डूबि गेल। दिसम्बरक अंतिम समए तँए जाड़ो बढ़ैत जाए। मुदा सभकँ ओढ़ना रहबे करै, ओढ़ि लेलौं। होइत-हबाइत भोरमे गाड़ी ठीक भेल। घुमि कऽ जनकपुर एलौं। ताबे विवाहक सभ प्रक्रिया समाप्त भऽ गेल छल। रौतुका जगरनासँ यात्रियो सभ ओंघाएल। हमहूँ सभ तहिना रही।
यात्री सभ ट्रेन पकड़ि घुमए लगलाह। हमहूँ सभ नहा कऽ एकबेर सौंसे मेला घुमि, डोरि-सिन्नुर आ सनेस कीन आबि खेलौं आ गाड़ी पकड़ैले विदा भेलौं। भरि बाट दादी रटैत रहली- ‘‘कत्तऽ एलौं, ते कत्तौ नै। कत्तऽ एलौं, ते कत्तौ नै। कत्तऽ एलौं, ते कत्तौ नै।’’

::::::::::

समाप्त